



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 267]

नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 06, 2018/श्रावण 15, 1940

No. 267]

NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 06, 2018/SHRAVANA 15, 1940

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

दिल्ली, 6 अगस्त, 2018

अंतिम जांच परिणाम

विषय : यूरोपीय संघ और वियतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "नाइलोन फिलामेंट यार्न (मल्टीफिलामेंट)" के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच।

फा. सं. 14/33/2016-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, आकलन और पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क का संग्रहण तथा क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए।

क. मामले की पृष्ठभूमि

- मै. जे सी टी लिमिटेड, मै. गुजरात पॉली फिल्म्स प्रा. लि., मै. गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स लि., मै. प्रफुल ओवरसीज प्रा. लि. और ए वाई एम सिन्टैक्स (जिसे पूर्व में वेस्पन सिन्टैक्स के रूप में जाना जाता था) (जिसे आगे "आवेदक" अथवा "याचिकाकर्ता" अथवा "घरेलू उद्योग" कहा गया है) ने यूरोपीय संघ और वियतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित "नाइलोन फिलामेंट यार्न (मल्टीफिलामेंट)" (जिसे आगे "विचाराधीन उत्पाद") अथवा "संबद्ध सामान" भी कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए अधिनियम और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे "प्राधिकारी" भी कहा गया है), के समक्ष एक आवेदन पत्र संयुक्त रूप से दायर किया है और संबद्ध सामानों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए जांच शुरू किए जाने हेतु अनुरोध किया है।
- प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त प्रथमदृष्टया साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों के संबंध में तथाकथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव निर्धारित करने के लिए और पाटनरोधी शुल्क की मात्रा की सिफारिश करने के लिए, जो यदि लगाई जाती है, तो घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसार पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए

भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित 22 अगस्त, 2017 की अधिसूचना सं. 14/33/2016- डीजीएडी द्वारा नियमावली के नियम 6(1) के अनुसार एक सार्वजनिक सूचना जारी की।

ख. प्रक्रिया

4. निम्नलिखित निर्धारित प्रक्रिया अपनाई गई है:

- क. प्राधिकारी को संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के पाटन का आरोप लगाते हुए और परिणामस्वरूप पाटनरोधी नियमावली के तहत संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए घरेलू उद्योग को क्षति का आरोप लगाते हुए संबद्ध सामानों के घरेलू उद्योग की ओर से याचिकाकर्ताओं से आवेदन प्राप्त हुआ।
- ख. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के उप नियम 5(5) के अनुसार, जांच की कार्यवाही की शुरुआत करने से पहले आवेदन पत्र प्राप्त होने के संबंध में भारत में यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल और वियतनाम के दूतावास को अधिसूचित किया।
- ग. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार, भारत में यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल और वियतनाम के दूतावास, संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं/ एसोसिएशनों को सार्वजनिक नोटिस की प्रति भेजी और उनसे जांच की शुरुआत के संबंध में सूचित करते हुए पत्र जारी होने के 40 दिन के भीतर लिखित में अपने ज्ञात विचार देने के लिए अनुरोध किया।
- घ. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, भारत में यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल और वियतनाम के दूतावास, संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और संबद्ध सामानों के ज्ञात आयातकों को आवेदन पत्र के अगोपनीय रूपांतर की प्रति भेजी। आवेदन पत्र की एक प्रति, जहां भी अनुरोध किया गया था, अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भी दी गई थी।
- ड. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, संगत सूचना मंगाने के लिए संबद्ध देश में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को निर्यातक प्रश्नावलियां भेजी:
 1. थाई तुआन ग्रुप कॉर्पोरेशन ;
 2. थीएन फूओक ट्रेडिंग एंड सर्विसेज कं. लि. ;
 3. जॉनशन कंट्रोल्स फैब्रिक्स ;
 4. तेसीतुरा एन्टोनियो ग्रिगहेली एंड सीएसय ;
 5. नॉयफिल एस.ए.
 6. लेनैक्स ए.एस.
 7. पॉलीटैक एस.आर.एल.
 8. टीडैब्ल्यूडी फाइबर्स सर्विसेज जीएमबीएच ;
 9. नेक्सस फाइबर्स ए.एस.
 10. पीएचपी फाइबर्स जीएमबीएच
 11. डूपोंट इंटरनेशनल ऑपरेशन
 12. डीएससीएम-वियतनाम कं.लि.
 13. प्लास्टोप्लस यू जी ;
 14. डे एमाटैक्स स्पा ;
 15. एक्वाफिल एस.पी.ए.;
 16. अन्टोनियो मोरोन डे ब्लास ;
 17. फॉर्मोसा इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन ;
 18. एंका इंटरनेशनल जीएमबीएच एंड कं. ;

19. एमईपी-ओलबो जीएमबीएच ;
 20. टेक्सोन इटालिया एस.पी.ए.
 21. स्कोइलर टेक्सटिल एजी ;
 22. बोनर यार्न एंड फैब्रिक्स लि. ;
 23. टेक्सटिलवरके टोडनाऊ बेमाउर ;
 24. डब्ल्यू. जिमरमान जीएमबीएच एंड कं. ;
 25. होयोसंग वियतनाम कं. लि.
 26. यूरोटेक्सफिलाटी एसआरएल ;
 27. बलरे फाइबर्स एसए
 28. गोरेनजसका प्रीडिनिका डीडी ;
- च. संबद्ध देशों में निर्यातकों/उत्पादकों को भेजी गई निर्यातक प्रश्नावलियों और पत्र की प्रतियां ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित भारत में यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल और वियतनाम के दूतावास को भी इस अनुरोध के साथ भेजी गई कि वे संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा संबद्ध देशों के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों को भी सलाह दें कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली के उत्तर दें।
- छ. निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्धारित प्रपत्र में निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए :
1. एक्वाफिल एस.पी.ए. इटली
 2. फारमोसा इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन वियतनाम
 3. बोस्का इंटरप्राइजेजलिमिटेड (बोस्का), हांगकांग
 4. लियांग हाउ टेक्नोलॉजी कं. लि. (एल आई एच ए), ताइवान
 5. हायोसंग डोंग नई कं. लि., वियतनाम
 6. हायोसंग इंटरनेशनल (एच के) लि., हांगकांग
 7. रेन टोंग इंडस्ट्रियल लि., हांगकांग
- ज. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध सामानों के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:
1. ब्रेक्स इंडिया लिमिटेड ;
 2. ए ए एस यू टेक्सटाइल प्रा.लि. ;
 3. बालिगा फिशनैट्स प्रा. लि. ;
 4. बायेर इंडिया लिमिटेड
 5. बिरला एरीसन ऑप्टिकल लि. ;
 6. चिदंबरम फिशनैट्स प्रा. लि. ;
 7. डी सी मिल्स प्रा. लि. ;
 8. डूपोंट फाइबर्स लि. ;
 9. इंटरमोड पोलीकोटर्स लि. ;
 10. गरवारे वाल रोप्स लि. ;
 11. गोयंका इंडस्ट्रीज
 12. हाबासिट लकोका प्रा. लि. ;
 13. आई डी एल इंडस्ट्रीज लि. ;

14. एस आर एल लि. ;
15. विविलोन टेक्सटाइल्स इंडस्ट्रीज ;
16. यूरो विस्टा इंडिया लि. ;
17. गार्डन सिल्क्स मिल्स लि. ;
18. कायवलोन इम्पैक्स प्रा. लि. ;
19. जेसीटी लिमिटेड
20. गुजरात पॉलीफिल्म्स प्रा. लि.
21. गुजरात स्टेट फर्टीलाइजर्स एंड कैमिकल्स लिमिटेड
22. एवाईएम सिन्टैक्स लिमिटेड
23. प्रफुल्ल ओवरसीज प्रा. लि.
24. एस के एक्सपोर्ट्स
25. सरला परफोरमेंस फाइबर्स लि. ;
26. शालोन सिल्क इंडस्ट्रीज प्रा. लि. ;
27. सूरत सिंथेटिक्स लि.
28. सूइरटेक्स इंड्स लि.
29. सुप्रीम इंडिया इम्पैक्स लि.
30. वालसन पालीस्टर लि.
31. फेडरेशन ऑफ इंडियन आर्ट सिल्क वीविंग इंडस्ट्री
32. फेडरेशन ऑफ गुजरात वीवर्स एसोसिएशन
33. सूरत ग्रे कपड़ा उत्पादक संघ

झ. निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने निर्धारित प्रपत्र में आयातक प्रश्नावली के उत्तर दायर किए :

1. बेलोन इंडिया लिमिटेड
2. निशांत मार्केटिंग
3. गिन्जा इंडस्ट्रीज लिमिटेड
4. गिन्जा लाइफस्टाइल्स लिमिटेड
5. वालसन पालीस्टर प्रा. लि.
6. किरन टैक्सप्रो प्रा. लि.
7. एसजीपी इंडिया

ट. इन पक्षकारों को छोड़कर जिन्होंने प्रश्नावली के उत्तर दायर किए, अन्य पक्षकारों द्वारा समय-समय पर अनुरोध किए गए थे, निम्नलिखित पक्षकार से भी टिप्पणी प्राप्त हुई:-

साउथ गुजरात वार्प निटर्स एसोसिएशन

ठ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा समय-समय पर दायर विभिन्न पत्रों में उठाए गए मुद्दों और पीसीएन सिद्धांत पर उनकी टिप्पणियों का वर्तमान जांच के दौरान समाधान कर दिया गया है।

ड. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुली रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में घरेलू उद्योग, उत्पादकों/निर्यातकों तथा आयातकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध कराया । सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर वर्तमान जांच परिणाम में ध्यान दिया गया है ।

ढ. गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के

संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां आवश्यक था, वहां गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और वह सूचना गोपनीय मानी गई है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं की गई है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतर उपलब्ध कराएं।

- ण. आवेदकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों से आवश्यक समझी गई सीमा तक अन्य सूचना मांगी गई थी।
- त. जहां भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना देने से इंकार किया है, अथवा उपलब्ध नहीं कराई है, अथवा जांच में पर्याप्त रूप से बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने उन पक्षकारों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर विचार रिकॉर्ड किए हैं।
- थ. आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा दी गई सूचना का सत्यापन प्राधिकारी द्वारा आवश्यक समझी गई सीमा तक 2-5-2018 और 3-5-2018 को किया गया। इसी प्रकार, 28-5-2018 से 31-5-2018 के दौरान प्राधिकारी ने यूरोपीय संघ के उत्तरदाता निर्यातक के संबंध में स्थल पर आंकड़ों का सत्यापन किया। वियतनाम से उत्तरदाता निर्यातक (निर्यातकों) के संबंध में आंकड़ों और सूचना का सत्यापन तालिका अध्ययन के माध्यम से किया गया था। जहां भी लागू हो, वहां आवश्यक संशोधन के साथ केवल इस सत्यापित सूचना पर विश्वास किया गया है।
- द. जांच 1 अक्टूबर, 2015 से 31 मार्च, 2017 (18 माह) (जिसे यहां आगे “जांच की अवधि” अथवा “पी ओ आई” कहा गया है) की अवधि के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संबंध में प्रवृत्तियों की जांच में 2013-14, 2014-15, 2015-16 और जांच की अवधि शामिल थी।
- ध. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से अनुरोध किया गया था कि वे विगत तीन वर्षों और जांच की अवधि के लिए संबद्ध सामानों के आयातों के व्यौरे दें तथा वह सूचना डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त की गई थी और वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए अपनाई गई है।
- न. वर्तमान जांच के लिए संगत मानी गई और साक्ष्यों से समर्थित सीमा तक, जांच की अवधि के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना और उठाए गए तर्कों पर प्राधिकारी द्वारा उपयुक्त रूप से विचार किया गया है।
- प. याचिकाकर्ताओं द्वारा दिए गए सुझावों और उन पर प्राप्त टिप्पणियों के आधार पर प्राधिकारी ने पीसीएन वर्गीकरण निर्मित किया और वह 27 अप्रैल, 2018 को परिचालित किया। पीसीएन वर्गीकरण के आधार पर प्रश्नावली के संशोधित उत्तर हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त हुए थे।
- फ. अमरीकी डॉलर को भारतीय रुपए में परिवर्तन के लिए जांच की अवधि के दौरान विद्यमान विनिमय दर 67.71 भारतीय रुपए = 1 अमरीकी डॉलर के रूप में मानी गई है और उसे प्राधिकारी द्वारा अपनाया गया है।
- ब. इस जांच में *** का अर्थ प्राधिकारी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना तथा नियमावली के अनुसार मानी गई सूचना है।
- भ. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने 8 मई, 2018 को आयोजित सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया। मौखिक सुनवाई में भाग लेने वाले सभी पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे 15 मई, 2018 को मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में दायर करें। पक्षकारों को सलाह दी गई थी कि वे विरोधी पक्षकारों द्वारा व्यक्त विचारों की प्रतियां एकत्रित करें और उनसे अनुरोध किया गया था कि 22 मई, 2018 तक अपने प्रत्युत्तर प्रस्तुत करें।
- म. लिखित अनुरोधों में तथा प्रत्युत्तर अनुरोधों में और हितबद्ध पक्षकारों से समय-समय पर प्राप्त पत्रों में दिए गए तर्कों पर वर्तमान जांच परिणाम में विचार किया गया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

5. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के क्षेत्र के संबंध में निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए थे :-
- क. एक्वाफिल ने अनुरोध किया है कि भारत में दो प्रकार के यार्न बेचता है जो बल्क कंटीन्यूअस फिलामेंट (बीसीएफ) यार्न और नाइलोन टैक्सटाइल फाइबर (एन टी एफ) यार्न हैं। इनमें से बीसीएफ भारत में, यूरोप में सामानों की घरेलू कीमतों की तुलनीय कीमतों पर बेचा जाता है। इसके अतिरिक्त, एन टी एफ का यूरोप में तैयार बाजार नहीं है तथा घरेलू बाजार में मुश्किल से ही बेचा जाता है।

- ख. इसके अतिरिक्त, एक्वाफिल ने अनुरोध किया है कि वह दोयम दर्जे के एन टी एफ का निर्यात कर रहा है जिसे अलग किया जाना चाहिए क्योंकि उनका विनिर्माण नहीं किया जाता है और इस प्रकार, वे विनिर्मित उत्पादों से सृजित अपशिष्ट उत्पाद हैं।
- ग. इसके अतिरिक्त, दोयम दर्जे का एन टी एफ यार्न न तो वाणिज्यिक रूप से और न तकनीकी रूप से घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित किए जा रहे उत्पादों के प्रतिस्थापनीय हैं तथा इसीलिए उसे जांच के क्षेत्र से अलग किया जाना चाहिए।
- घ. सभी मोनोफिलामेंट नायलोन यार्न और नायलोन के उच्च टेनेसिटी यार्न जैसे कुछ उत्पाद जांच के आरंभ में अलग किए गए थे। अतः प्राधिकारी को सुनिश्चित करना चाहिए कि आयात मात्रा उससे संबंधित किसी मात्रा में न दर्शायी जाए।
- ड. इसके अतिरिक्त, चूंकि मोनोफिलामेंट यार्न को अलग कर दिया गया है, अतः प्राधिकारी को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से मोनोफिलामेंट यार्न बनाने के लिए मदर यार्न को भी अलग करना चाहिए।
- च. घरेलू उद्योग निचले उत्पादों के विनिर्माण के लिए पर्याप्त रूप से अच्छी गुणवत्ता के उत्पादों की आपूर्ति करने में अक्षम है। इस संबंध में, हमारा अनुरोध है कि घरेलू उद्योग पहले ग्रेड की सामग्री के रूप में असमान सामग्री (असमान पैकेज भार) की आपूर्ति कर रहा है। असमान सामग्री का मुद्दा यह है कि यार्न की समान लंबाई नहीं है और उसे प्रयोक्ताओं/आयातकों के स्वामित्व वाली मशीनों में नहीं चलाया जा सकता।
- छ. याचिकाकर्ता डाइंग की गारंटी देने से इंकार करते हैं जिससे ड्राईयुक्त सामग्री में कलर ब्लीडिंग के मामले में काफी अधिक लागत आती है।

घरेलू उद्योग के विचार

6. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोध निम्नलिखित हैं :-
 - क. जांच की शुरुआत की सूचना में प्राधिकारी द्वारा परिभाषित किए गए अनुसार विचाराधीन उत्पाद वर्तमान जांच के लिए उपयुक्त हैं और उसमें किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं है।
 - ख. इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित सामान आयातित सामानों के वाणिज्यिक रूप से और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और दोनों का प्रयोग ग्राहकों द्वारा परस्पर परिवर्तनीय रूप से किया जाता है।
 - ग. जहां तक कुछ हितवद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध का संबंध है कि यूरोपीय संघ के संबद्ध सामानों की भिन्न कीमतें हैं, और उनकी तुलना वियतनाम अथवा अन्य आयातों से नहीं की जा सकती, याचिकाकर्ताओं द्वारा यह अनुरोध किया गया है कि जहां तक यूरोपीय संघ के सामानों के पीसीएन घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए सामानों के पीसीएन से तुलनीय हैं, दोनों तुलनीय हैं।
 - घ. याचिकाकर्ताओं द्वारा यह अनुरोध किया गया है कि एक्वाफिल ने स्वीकार किया है कि वे भारतीय बाजार को एक पाटन स्थल के रूप में प्रयोग कर रहे हैं और इसीलिए यह तर्क नहीं दिया जा सकता कि यूरोपीय आपूर्तिकर्ताओं द्वारा आपूर्ति किए गए सामान घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए सामानों से भिन्न हैं।
 - ड. याचिकाकर्ताओं ने यूरोपीय संघ में पहली गुणवत्ता के उत्पादों की ही बिक्री करने के संबंध में हितवद्ध पक्षकारों के दावे को रद्द किया है जबकि केवल दूसरे दर्जे की गुणवत्ता के सामानों का निर्यात किया जाता है। किसी भी दशा में चूंकि पीसीएन विधिवत निर्मित किया गया है, अतः उचित तुलना का सिद्धांत अपनाया जाएगा और यह नहीं कहा जा सकता कि तुलना उत्पाद किस्मों में किसी अंतर के कारण बिगड़ी है।
 - च. याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि क्षति की अवधि में मांग का लगभग 76 प्रतिशत घरेलू उत्पादकों द्वारा पूरा किया गया था और इसीलिए इस तर्क के लिए कोई आधार नहीं है कि घरेलू उद्योग का उत्पाद गुणवत्ता का उत्पाद नहीं है अथवा घरेलू उद्योग डाइंग की कोई गारंटी नहीं देता।
 - छ. घरेलू उद्योग ने 7 जून, 2018 के पत्र द्वारा स्पष्ट किया है कि वे बी सी एफ का विनिर्माण नहीं करते और तदनुसार, बीसीएफ को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से अलग करने का अनुरोध किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

7. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "नायलोन का सिंथेटिक मल्टी फिलामेंट यार्न" है जिसे पोलेमाइड यार्न भी जाना जाता है। नायलोन फिलामेंट यार्न आर्गेनिक मोनोमर्स के पोलीमराइजेशन द्वारा उत्पादित किया जाता है।

8. विचाराधीन उत्पाद में नाइलोन के सिंथेटिक मल्टी फिलामेंट यार्न अथवा पोलेमाइड की सभी किस्में शामिल हैं, यथा- फ्लैट यार्न-ट्विस्टेड और/ अथवा अन ट्विस्टेड क्रिम्पड यार्न, पूर्णतः ड्रॉन यार्न (एफडीवाई), स्पिन ड्रॉन यार्न (एस डीवाई), पूर्णतः ओरिएंटेड यार्न (एफओवाई), हाई ओरिएंटेड यार्न (एफ ओ वाई), आंशिक रूप से ओरिएंटेड यार्न (पीओवाई), टैक्सचर्ड यार्न- ट्विस्टेड और/ अथवा अन ट्विस्टेड, और डाइड यार्न, सिंगल, डबल, मल्टीपल, फोल्डेड अथवा केबलड यार्न शामिल हैं जो सीमाशुल्क उपशीर्ष संख्या 5402 के तहत अध्याय-54 के अंतर्गत वर्गीकरण योग्य हैं। इस उत्पाद में फ्लैट/टैक्सचर्ड/ ट्विस्टेड/अन ट्विस्टेड, ब्राइट/सेमी डल/ फुल डल (अथवा उनकी किस्में), ग्रे/कलर्ड/डाइड (अथवा उसकी किस्में), सिंगल, डबल, मल्टीपल, फोल्डेड अथवा केबलड (अथवा उसकी किस्में) जैसे नाइलोन फिलामेंट यार्न अथवा पालीमाइड यार्न की सभी किस्में शामिल हैं, चाहे वे आकार वाली हों या नहीं। संबद्ध सामान सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 54 के अंतर्गत वर्गीकृत हैं। एन एफ वाई के प्रमुख अंतिम प्रयोग होम फाइनेंसिंग और औद्योगिक अनुप्रयोग के क्षेत्रों में होते हैं, यथा- पर्दों, सिलाई और कशीदाकारी, अपहोल्स्टरी, फिश नेट, आदि में प्रयुक्त होते हैं। सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और वर्तमान जांच के क्षेत्र पर किसी तरह बाध्यकारी नहीं हैं।
9. विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से विशेष रूप से अलग किए गए यार्न सभी मानव निर्मित फिलामेंट यार्न हैं जिनमें नायिलोन के उच्च टेनासिटी यार्न तथा नायलोन अथवा पालीमाइड और मोनोफिलामेंट यार्न नहीं होते।
10. याचिकाकर्ता ने 7 जून, 2018 के पत्र द्वारा यह पुष्टि की है वह बी सी एफ (ब्लक कन्टीयूनयस प्लानिंग) यार्न का विनिर्माण अथवा बिक्री नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार प्राधिकारी मानते हैं कि बी सी एफ यार्न को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से अलग कर दिया गया है।
11. पीसीएन वर्गीकरण से संबंधित दावों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि पीसीएन पाटन एवं क्षति मार्जिन के मूल्यांकन के लिए संगत है तथा पीसीएन वर्गीकरण और उनके आधार पर प्राप्त आंकड़ों से प्राधिकारी पाटन मार्जिन (उत्पादक/निर्यातकों के स्थानीय बाजार की कीमतों और भारतीय निर्यात कीमतों के बीच तुलना) के प्रयोजन के लिए तथा क्षति विश्लेषण (भारतीय घरेलू उद्योग की उचित कीमत और भारत के लिए संबद्ध सामानों की उत्पादक/निर्यातकों की कीमत के बीच तुलना) के लिए उत्पादों की उचित तुलना सुनिश्चित करें।

घ. घरेलू उद्योग तथा आधार

उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

12. घरेलू उद्योग के क्षेत्र और आधार के संबंध में जांच की अवधि के दौरान निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध निम्नलिखित हैं:-
 - क. याचिकाकर्ताओं ने याचिका में गलत बताया है कि किसी भी याचिकाकर्ता ने संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों का आयात नहीं किया है। इसके बजाए कम से कम दो याचिकाकर्ता संबद्ध सामानों के आयातक हैं और यहां तक कि कुछ समर्थक संबद्ध सामानों के आयातक हैं।
 - ख. याचिकाकर्ताओं ने एक प्रतिभागी निर्यातक से काफी मात्रा में आयात किए हैं और उपर्युक्त हितबद्ध पक्षकार ने निम्नलिखित पक्षकारों द्वारा संबद्ध देश से संबद्ध सामानों के आयात के संबंध में साक्ष्य प्रदान किए हैं।
 1. एवाईएम सिन्टैक्स (फॉर्मली, वेलस्पन सिन्टैक्स लि.)- आवेदक
 2. जे सी टी लिमिटेड -आवेदक
 3. श्री राम टेक्सोलोन प्रा. लि., ए वाई एम सिन्टैक्स से संबंधित कंपनी—आवेदक
 4. सालासर यार्न प्रा. लि. - सालासर पोलीटैक्स प्रा. लि. से संबंधित कंपनी (सहयोगी कंपनी)
 5. रे सिन्टैक्स प्रा. लि. - सहयोगी कंपनी
 6. ओरिलन इंडिया प्रा. लि. -सहयोगी कंपनी
 - ग. याचिकाकर्ताओं को इतनी देर से घरेलू उद्योग में संशोधन करने और अन्य पक्षकार को शामिल करने की अनुमति नहीं दी जा सकती जोकि पहले पात्र घरेलू उत्पादकों के रूप में आवेदकों का आधार बढ़ाने के लिए "याचिकाकर्ता" के क्षेत्र के अंतर्गत एक समर्थक था।

घरेलू उद्योग के विचार

13. प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए घरेलू उद्योग के क्षेत्र और आधार के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :-

क. याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका में घरेलू उद्योग के उत्पादन के आधार पर उनके आधार के साक्ष्य निम्नलिखित रूप में दिए हैं :-

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
जीपीपीएल	मी.ट.	***	***	***	***
जीएसएफसी	मी.ट.	***	***	***	***
प्रफुल्ल	मी.ट.	***	***	***	***
जेसीटी	मी.ट.	***	***	***	***
एवाईएम सिन्टैक्स	मी.ट.	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	मी.ट.	29721	32651	36477	35447
सालासर	मी.ट.	***	***	***	***
जेबीपी फाइबर	मी.ट.	***	***	***	***
गुप्ता सिंथेटिक्स लिमिटेड	मी.ट.	***	***	***	***
सेंचुरी एंका लि.	मी.ट.	***	***	***	***
ओरिलोन इंडिया	मी.ट.	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादक	मी.ट.	***	***	***	***
कुल भारतीय उत्पादन	मी.ट.	44476	55652	65838	70708

*पीओआई = अक्टूबर, 2015 से मार्च, 2017

ख. उसके बाद, लिखित अनुरोध दायर करते समय याचिकाकर्ताओं ने एक और उत्पादक मै. सेंचुरी एंका की लागत सूचना भी दी है, जिसमें उन्होंने अनुरोध किया कि उसे भी एक याचिकाकर्ता के रूप में माना जाए और तदनुसार, सभी क्षति संबंधी मानदंडों में संशोधन भी किया। मै. सेंचुरी एंका को शामिल करने पर घरेलू उद्योग का आधार निम्नलिखित रूप में संशोधित हो जाएगा :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
जीपीपीएल	मी.ट.	***	***	***	***
जीएसएफसी	मी.ट.	***	***	***	***
प्रफुल्ल	मी.ट.	***	***	***	***
जेसीटी	मी.ट.	***	***	***	***
एवाईएम सिन्टैक्स	मी.ट.	***	***	***	***
सेंचुरी एंका लि.	मी.ट.	***	***	***	***
घरेलू उद्योग	मी.ट.	36,328	45,470	51,837	54,074
सालासर	मी.ट.	***	***	***	***

जेबीपी फाइबर	मी.ट.	***	***	***	***
गुप्ता सिंथेटिक्स लिमिटेड	मी.ट.	***	***	***	***
ओरिलोन इंडिया	मी.ट.	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादक	मी.ट.	***	***	***	***
कुल भारतीय उत्पादन	मी.ट.	44,476	55,652	65,838	70,708

- ग. मौखिक सुनवाई के बाद याचिकाकर्ताओं ने यह उल्लेख किया है कि याचिका में एक समर्थक ओरिलोन लिमिटेड ने वास्तव में जांच की अवधि के दौरान संबद्ध सामानों का आयात किया। परंतु, संबद्ध देशों से उसकी आयातों की मात्रा संबद्ध देशों से *** मी.टन के कुल आयातों में से बहुत कम *** मी.टन थी।
- घ. याचिकाकर्ताओं और समर्थकों की ओर से यह उल्लेख करते हुए पत्र प्रस्तुत किए गए हैं कि याचिकाकर्ताओं (एक को छोड़कर जिसमें काफी मात्रा में आयात किया है) द्वारा कोई आयात नहीं किए गए थे और जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से समर्थकों द्वारा केवल नगण्य आयात किए गए थे। याचिकाकर्ताओं ने यह भी उल्लेख किया है कि उसको भारतीय सीमाशुल्क के आंकड़ों से भी सत्यापित किया जा सकता है। जेसीटी लिमिटेड, ओरिलोन इंडिया प्रा. लि., सालासार पोलीटेक्स प्रा. लि., गुजरात पॉली फिल्मस लि., गुप्ता सिंथेटिक्स लिमिटेड, जे पी बी फाइबर्स प्रफुल्ल ओवरसीज लिमिटेड, गुजरात स्टेट फर्टीलाइजर्स एंड कैमिकल्स लिमिटेड, सेंचुरी एका लिमिटेड और ए वाई एम सिंटेक्स लिमिटेड द्वारा दायर पत्रों के आधार पर याचिकाकर्ताओं और उनके समर्थकों द्वारा जांच की अवधि के दौरान (अक्टूबर, 15 से मार्च, 17) किए गए आयातों की मात्रा निम्नलिखित है :

विवरण	यूओएम	ई यू से आयातक	वियतनाम से आयात	अन्य देशों से आयात	कुल
जेसीटी	मी.ट.	***	***	***	***
एवाईएम	मी.ट.	***	***	***	***
सालासर	मी.ट.	***	***	***	***

प्राधिकारी द्वारा जांच

14. घरेलू उद्योग के आधार का विश्लेषण करने की कार्यवाही से पूर्व यह नोट किया जाता है कि "घरेलू उद्योग" की पाटन रोधी नियमावली के नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग निम्नलिखित रूप में परिभाषित है:-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के नियतकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।

15. 5 उत्पादकों मै. जेसीटी लिमिटेड, मै. गुजरात पालीफिल्मस प्रा. लि., मै. गुजरात स्टेट फर्टीलाइजर्स एंड कैमिकल्स लि., मै. प्रफुल्ल ओवरसीज प्रा. लि. और मै. एवाईएम सिंटेक्स द्वारा यह उल्लेख करते हुए आवेदन पत्र दायर किया गया है कि उनका उत्पादन कुल मिलाकर भारतीय उत्पादन का लगभग 50 प्रतिशत है। याचिकाकर्ताओं ने कुछ अन्य उत्पादकों की सूचना भी दी है जो उनकी याचिका के समर्थक हैं, जो- मै. सालासार पोलीटेक्स प्रा. लि., मै. जे पी बी फाइबर्स (ईगल ग्रुप), मै. गुप्ता सिंथेटिक्स, मै. ओरिलोन इंडिया प्रा. लि. और मै. सेंचुरी एका लिमिटेड हैं, जिनका भारतीय उत्पादन का शेष 50 प्रतिशत है।
16. इसके अतिरिक्त, विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा ये दावे किए गए हैं कि मै. जेसीटी लिमिटेड और मै. ए वाई एम सिंटेक्स को उनके द्वारा संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात के तथ्य के कारण पात्र घरेलू उद्योग का भाग न माना जाए। प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के आयात में वे लगे हुए हैं अथवा नहीं और तदनुसार क्या इन दो याचिकाकर्ताओं को पात्र घरेलू उद्योग माना जा सकता है अथवा नहीं।

17. याचिकाकर्ताओं द्वारा संबद्ध सामानों के आयात के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह निर्धारित करने के लिए निर्देश हैं कि क्या इन याचिकाकर्ताओं को संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के आयात की मात्रा के आधार पर घरेलू उद्योग होने के लिए पात्र माना जाए अथवा नहीं।
18. वर्तमान मामले में यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ताओं ने याचिका दायर करते समय शून्य आयात किया है। तदनुसार, प्राधिकारी ने प्रथम दृष्टया यह समझते हुए जांच की शुरुआत की सूचना जारी की थी कि याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग हैं और उन्होंने संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों का कोई आयात नहीं किया है। उसके बाद कई हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दावे किए गए थे कि कम से कम दो याचिकाकर्ताओं, यथा- मै. जेसीटी लिमिटेड और मै. ए वाई एम सिन्टैक्स संबद्ध सामानों के आयातक थे। यह भी दावा किया गया था कि याचिका के कुछ समर्थक भी संबद्ध सामानों के आयातक थे। तथापि, उसके बाद प्रत्युत्तर अनुरोध के स्तर पर याचिकाकर्ताओं ने स्वीकार किया कि एक याचिकाकर्ता ने संबद्ध देशों से *** मी.टन का लगभग नगण्य आयात किया है।
19. प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक याचिकाकर्ता मै. जे सी टी लिमिटेड ने जांच की शुरुआत के बाद प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया और जांच की शुरुआत के बाद उनसे कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई। इसके आलोक में प्राधिकारी इस पक्षकार को असहयोगी मानते हैं और उनके उत्पादन की मात्रा को याचिकाकर्ताओं के हिस्से से अलग करते हैं परंतु उसे समग्र भारतीय उत्पादन के भाग के रूप में रखते हैं। इसके बाद भी शेष याचिकाकर्ताओं की उत्पादन मात्रा वर्तमान जांच के प्रयोजन के लिए घरेलू उद्योग के रूप में आधार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। तदनुसार, प्राधिकारी ने इन 4 उत्पादकों के आधार पर ही क्षति संबंधी मानदंडों का मूल्यांकन किया है और उन पर विचार किया है तथा उसके आधार पर क्षति मूल्यांकन किया है। इसके अतिरिक्त यह भी नोट किया जाता है कि अन्य हितबद्ध पक्षकारों के दावे के विरुद्ध मै. जे सी टी लिमिटेड ने संबद्ध देशों से कोई आयात नहीं किया है।
20. जांच करने पर यह पाया गया है कि मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स ने संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात किए हैं। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान याचिकादाता, मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स द्वारा किए गए आयातों की मात्रा की भी जांच की है। यह नोट किया जाता है कि एक याचिकादाता, मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स द्वारा आयात की गई मात्रा बहुत तुच्छ ***मी.टन है (जो कि संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के कुल आयातों के ***% से भी कम है)। यह भी नोट किया जाता है कि न तो याचिकादाता के समर्थकों द्वारा विचाराधीन उत्पाद के आयातों पर प्रतिबंध लगाने से और न ही मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स के बहिष्करण से जांच में घरेलू उद्योग के आधार पर कोई प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स के बहिष्करण के फलस्वरूप क्षति का निर्धारण करने में घरेलू उद्योग को अनुचित लाभ प्राप्त होगा क्योंकि अन्य याचिकादाताओं की तुलना में मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स बहुत अधिक कुशल है। इसको ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स को पात्र घरेलू उद्योग का एक संघटक मानते हैं।
21. प्राधिकारी ने एक याचिकादाता के रूप में मेसर्ज सेन्चुरी एंका लिमिटेड को शामिल करने और क्षति का मूल्यांकन करने में उसकी सूचना पर विचार करने के अनुरोध की भी जांच की है। चूंकि याचिकादाताओं ने मूलतः मेसर्ज सेन्चुरी एंका लिमिटेड को शामिल नहीं किया था और मौखिक सुनवाई के बाद ही मेसर्ज सेन्चुरी एंका लिमिटेड से संबंधित सूचना प्रदान की थी, इसलिए ऐसा महसूस किया गया है कि इस पक्षकार को एक याचिकादाता के रूप में शामिल करना उन सभी हितबद्ध पक्षकारों के लिए उचित होगा अथवा नहीं, जिन्होंने जांच में भाग लिया है और समय पर निवेदन किए हैं। ऐसी स्थिति में प्राधिकारी यह उपयुक्त समझते हैं कि विलंबित चरण में एक याचिकादाता के रूप में मेसर्ज सेन्चुरी एंका लिमिटेड को शामिल करने के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया जाए।
22. इस प्रकार प्राधिकारी मैसर्स जे सी टी लिमिटेड को उसके द्वारा प्राधिकारी को आंकड़े प्रस्तुत न किए जाने और परिणामस्वरूप असहयोग करने के कारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार 'घरेलू उद्योग' माने जाने के लिए अपात्र होने का प्रस्ताव करते हैं।
23. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि शेष याचिकाकर्ताओं अर्थात् मैसर्स ए वाई एम सिंथटेक्स, मैसर्स गुजरात पोलिफिल्म प्रा. लिमि., मैसर्स गुजरात स्टेट कैमिकल्स लिमि. तथा मैसर्स प्रफूल्ल ओवरसीज प्रा. लिमि. का घरेलू उत्पादन में लगभग 40 प्रतिशत है इसके अतिरिक्त याचिका का कोई विरोध नहीं है। अतः प्राधिकारी मानते हैं कि नियम 5(3) के अनुसार आधार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और इसीलिए उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग के लिए पात्र माना गया है।

प्राधिकारी ने तथापि) i) याचिकाकर्ता में से एक होने के बावजूद मैसर्स जेसीटी लिमिटेड द्वारा डेटा जमा नहीं किये जाने से और ii) मेसर्ज एवाईएम सिंटेक्स द्वारा पीयूसी के आयात के पूर्ण तथ्यों का खुलासा नहीं जाने को गंभीरता से लिया है। प्राधिकारी भविष्य में इस तरह के प्रथाओं से बचने के लिए उपर्युक्त संस्थाओं को सावधान करते हैं।

ड. गोपनीयता संबंधी मुद्दे**उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

24. जांच की कार्यवाही के दौरान अत्यधिक गोपनीयता के बारे में उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए तथा प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) प्रपत्र-' (क) में निर्धारित कुछ प्राचलों को गोपनीय रखा गया है और उन्हें बिल्कुल भी प्रदान नहीं किया गया है, यहां तक कि उन्हें सूचीबद्ध तरीके से भी उल्लिखित नहीं किया गया है।
- (ख) याचिकादाता संबद्ध वस्तुओं के अपने आयातों और उनसे संबंधित निर्यातकों और आयातकों को घोषित करने में विफल रहे हैं।
- (ग) याचिकादाताओं ने याचिका के एक भाग के रूप में कॉस्टिंग फार्मेट संलग्न नहीं किया है। यहां तक कि कच्चे माल के नामों और संबद्ध ब्यौरों को, जो कि उत्पादन की प्रक्रिया के ब्यौरों को समझने में सहायक होते हैं, के साथ-साथ अन्य संबद्ध सूचना की गोपनीयता का भी दावा किया है।
- (घ) याचिकादाताओं ने याचिकादाताओं की समृद्ध हो रही स्थिति से संबंधित सूचना को भी छिपाया है, जिसका स्पष्ट पता उनकी वार्षिक रिपोर्ट में उनके बड़े हुए निवेश के संबंध में किए गए उल्लेख से पता चलता है।

घरेलू उद्योग के विचार

25. अत्यधिक गोपनीयता के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) याचिकादाताओं ने ऐसा कोई दावा नहीं किया है कि निर्यातकों/उत्पादकों ने गोपनीयता के प्रावधानों का दुरुपयोग किया है। इस संबंध में याचिकादाताओं ने यह दावा किया है कि निर्यातकों ने महत्वपूर्ण सूचना को छिपाया है और याचिकादाताओं को सार्थक टिप्पणियां देने से प्रतिबंधित किया है। इनमें शेयर होल्डरों के ब्यौरों से संबंधित सूचना और विचाराधीन उत्पाद के कारोबार में लगे संबंधित पक्षकारों की सूची, वित्तीय और संविदात्मक संबंधों और अन्य कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यमों के ब्यौरे, संबद्ध वस्तुओं और अन्य वस्तुओं का उत्पादन करने वाली फैक्टरियों की सूची, विचाराधीन उत्पाद के विनिर्देशन, उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रयुक्त पीसीएन, वितरण के माध्यम, घरेलू और निर्यात बिक्रियों, घरेलू बिक्रियों की मात्रा और मूल्य को अधिप्रमाणित करने के लिए प्रदत्त दस्तावेजों की सूची, प्रमुख कच्चे माल की सूची आदि शामिल हैं, जिन्हें उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तरों के अगोपनीय वृत्तान्त में घोषित नहीं किया गया है।
- (ख) अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तरों में अत्यधिक कमियां हैं। वितरण के माध्यम का भाग बनने वाले सभी पक्षकारों ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं। ऐसे पक्षकारों को असहयोगी घोषित किया जाना चाहिए और उन्हें पृथक पाटन मार्जिन नहीं दिया जाना चाहिए।
- (ग) मेसर्स एक्वाफिल एस.पी.ए. इटली ने उल्लेख किया है कि यूरोपीय यूनियन के भीतर विभिन्न संबंधित पक्षकार संविदात्मक विनिर्माण कार्य में लगे हुए हैं। तथापि, ऐसे पक्षकारों ने जांच की कार्यवाही में बिल्कुल भी भाग नहीं लिया है। इसके अतिरिक्त एक्जुआफिल की एक संबंधित कंपनी भारत में स्थित है। उक्त पक्षकार ने भी जांच में भाग नहीं लिया है और मेसर्स एक्वाफिल के इस दावे की जांच की जानी चाहिए कि भारत में स्थित उसकी कंपनी प्रचालन में नहीं है।
- (घ) मेसर्स एक्वाफिल की निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तरों में कुछ परिशिष्ट शामिल नहीं हैं और उसने अपने उत्तर, उसे प्रस्तुत किए जाने की निर्धारित अंतिम तारीख के बाद प्रस्तुत किए हैं। निर्यातक को निर्धारित तारीख के बाद प्रश्नावली को पूरा करने की स्वीकृति देने के विवेचन करने के लिए अनुपूरक सूचना प्रदान करने का अवसर नहीं दिया जा सकता है।
- (ङ) विएतनाम के उत्पादक/निर्यातक, मेसर्स फोरमोसा इंडस्ट्रीज लिमिटेड, मेसर्स बीओएससीए और मेसर्स लिआंग हॉ टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत उत्तर के संबंध में ऐसा संदेह किया जाता है कि उत्पादकों और निर्यातकों की मूल्य श्रृंखला पूरी नहीं है। इसके अतिरिक्त मेसर्स फोरमोसा इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने बताया है कि वह विचाराधीन उत्पाद में प्रयुक्त होने वाली "अधिकतर" चिप्स का उत्पादन करता है। इसके आलोक में यह अस्पष्ट है कि विचाराधीन कच्चे माल की कीमत कहां से प्राप्त की गई है। कच्चे माल

को अधिप्राप्त करने के ब्यौरे प्रकट नहीं किए गए हैं।

- (च) मेसर्ज हुओसोंग डोंग नाई और मेसर्ज हुओसोंग इंटरनेशनल के संबंध में यह निवेदन है कि केवल सीधे निर्यात किए जाने की सूचना दी गई है, जबकि अप्रत्यक्ष निर्यातों का प्रकटन नहीं किया गया है। चूंकि वितरण माध्यम का संघटक बनने वाले सभी पक्षकारों ने जांच में भाग नहीं लिया है, इसलिए निर्यातक को पृथक पाटन मार्जिन स्वीकृत नहीं किया जाए।
- (छ) मेसर्ज हुओसोंग डोंग नाई से संबंधित एक कंपनी भारत में स्थित है, जिसका प्रकटन नहीं किया गया है। ऐसी संबंधित कंपनी की लागत उत्पादक/निर्यातक की निर्यात कीमत का निर्धारण करने में एक कारक होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उक्त पक्षकार ने सिंगापुर में स्थित अपनी संबंधित कंपनी से इनपुट अधिप्राप्त की है और यह अधिप्रमाणित किया जाना चाहिए कि क्या ऐसी इनपुट की खरीद कीमत, बाजार कीमत प्रतिबिंबित करती है।
- (ज) प्राधिकारी को सहभागी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का सही निर्धारण करने के लिए 28 फरवरी, 2018 के ट्रेड नोटिस 5/2018 को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त सूचना मंगानी चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- 26. सूचना की गोपनीयता के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीयता के आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की जांच, पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 के अनुसार गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। प्राधिकारी ने जहां कहीं भी आवश्यक समझा है, संतुष्ट होने पर और ऐसी सूचना को गोपनीय माना है और गोपनीयता के दावे को स्वीकार किया है तथा उसे सार्वजनिक फाईल में नहीं रखा है। प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम और अपनी सुसंगत पद्धति के अनुसार अन्य हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता के दावों पर भी विचार किया है।
- 27. याचिकादाताओं द्वारा प्रदत्त सूचना के कम होने के तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदन-पत्र में याचिकादाताओं द्वारा प्रदत्त सूचना निर्धारित प्रपत्र के अनुसार थी और मामले की मेरिट से संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने वर्तमान जांच शुरू की है।
- 28. इस दावे के संबंध में कि मेसर्ज एक्जुआफिल ने निर्धारित समय के भीतर निर्यातक मुद्दे की दुबारा जांच की थी और यह पाया गया था कि मेसर्ज एक्जुआफिल ने सभी संबद्ध परिशिष्टों के साथ निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर निर्धारित समय के भीतर प्रस्तुत किए थे।

च. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

- 29. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-
 - (क) याचिकादाताओं ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि कैसे सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है। यह उल्लेख मात्र किया गया है कि याचिका के अनुबंध 3.1 में सामान्य मूल्य को परिकलन को देखा जा सकता है। याचिका के अनुबंध 3.1 में ऐसे आंकड़े निहित हैं जिन्हें यह उल्लेख करते हुए पूर्णतया संशोधित किया गया है कि उनका परिकलन, जांच अवधि के लिए घरेलू उद्योग की अनुकूलतम लागत के आधार पर किया गया है।
 - (ख) वर्तमान जांच में याचिकादाताओं ने यह आरोप लगाया है कि संबद्ध वस्तुओं का पाटन यूरोपीय यूनियन और विएतनाम द्वारा किया जा रहा है। यूरोपीय यूनियन बाजार अर्थव्यवस्था है, जिसके लिए याचिकादाताओं की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य संरचित नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त याचिकादाताओं ने विएतनाम को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माने जाने के बारे में कोई निवेदन नहीं किया है और इस प्रकार बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में याचिकादाताओं की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य संरचित नहीं किया जा सकता है।
 - (ग) यहां तक कि एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था (विएतनाम के मामले में) के लिए सामान्य मूल्य की संरचना करने के मानदंड से भी याचिकादाताओं की कार्यप्रणाली, पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 (7) के समनुरूप है।

- (घ) संबद्ध देश के लिए सामान्य मूल्य की संरचना अत्यधिक त्रुटिपूर्ण है। सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए प्रयुक्त खपत के मानदंड प्रदान नहीं किए गए हैं। सामान्य मूल्य में विचारित सभी कारकों, जैसे कि कच्चे माल की लागत, परिवर्तन लागत, बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक लागत पर याचिकादाताओं के अनुसार विचार किया गया है, जो कि विश्व व्यापार संगठन के पाटन-रोधी करार और भारतीय पाटन-रोधी नियमावली का उल्लंघन है।
- (ङ) भारत में वास्तव में अदा की गई कीमत अथवा देय कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य की संरचना पर तभी विचार किया जा सकता है, जब कि पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अंतर्गत सूचीबद्ध किए गए पूर्व दो विकल्पों को प्रयुक्त करने के बाद सामान्य मूल्य की संरचना करने के लिए एक सुदृढ़ आधार माना जाए। ऐसे विकल्पों को प्रयुक्त किए बिना, ऐसी कार्य-प्रणाली को प्रयुक्त करने से पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 की अपेक्षाओं का उल्लंघन करने का स्पष्ट पता चलता है।
- (च) इसके अतिरिक्त याचिकादाता, ऐसे तरीके के व्यौरों को प्रस्तुत करने में विफल रहे हैं, जिसमें भारत में कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य आकलित किया गया है। सामग्री, विद्युत और ईंधन, अन्य संसाधन लागत और व्याज के साथ-साथ याचिका के अनुबंध 3.2 में सूचित उत्पादन की लागत से संबंधित सूचना को, बिना किसी अगोपनीय सार के विश्वसनीय माना जाता है। याचिकादाताओं ने 5% लाभ की परिकल्पना करने का आधार भी प्रस्तुत नहीं किया है।
- (छ) याचिका में निर्यात कीमत में समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, पत्तन व्ययों, अंतरदेशीय भाड़े के व्ययों, बैंक प्रभारों और कमीशन के लिए किए गए समायोजन का कोई साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है और न ही उसके आधार के बारे में कोई सूचना प्रदान की गई है।
- (ज) निर्यात कीमत में से किए गए समायोजन के बारे में घरेलू उद्योग के दावे बहुताधिक हैं और इनके परिणाम स्वरूप वर्तमान जांच में पाटन के दावे बढ़ा-चढ़ा कर किए गए हैं।
- (झ) प्राधिकारी को सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और फिर मार्जिन पर उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रदत्त और प्राधिकारी द्वारा विधिवत् सत्यापित आंकड़ों के आधार पर विचार करना चाहिए।

घरेलू उद्योग के विचार

30. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) सहभागी उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तरों में पाई गई कमियों के कारण उन्हें कोई विशिष्ट पृथक पाटन मार्जिन स्वीकृत नहीं किया जा सकता है।
- (ख) उपरोक्त के प्रति बिना किसी पूर्वाग्रह के यह निवेदन किया जाता है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए लागत का परिकलन करने के समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि संबद्ध वस्तुओं की खरीद और बिक्री से संबंधित ऐसी लागत को उचित रूप से प्राप्त किया जाए।
- (ग) याचिका के कीमत के समायोजनों पर पर्याप्त सूचना निहित है। याचिकादाताओं ने कीमत समायोजनों के लिए अधिक संतुलित अनुमानों को प्रयुक्त किया है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार को ऐसा कोई तर्क नहीं है कि याचिकादाताओं ने अत्यधिक कीमत समायोजनों का दावा किया है।
- (घ) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पीसीएन निर्धारित किया है और जब तक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बाजार में बेचा गया पीसीएन वही है, जिसका भारत में निर्यात किया गया है और उसकी तुलना की जा रही है, तब तक यह नहीं कहा जा सकता है कि एक यार्न, सामुदायिक यार्न है और दूसरा यार्न विशिष्ट यार्न है। यदि घरेलू बाजार में बेचे गए कुछ ऐसे पीसीएन हैं, जिनका निर्यात भारत में नहीं किया गया है, तो पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ उन पर विचार नहीं किया जाएगा।
- (ङ) विशेष रूप से मेसर्ज हुआंग डोंग नाई के मामले में चूंकि उसने कच्चे माल की अधिप्राप्ति अपने संबंधित पक्षकार से की है, यह पता लगाया जाना चाहिए कि कच्चे माल की खरीदारी और उसकी खाते में प्रविष्टि निकटस्थ कीमतों पर की गई है। मेसर्ज एक्जुआफिल ने कच्चे माल की अधिप्राप्ति के संबंध में गोपनीयता का दावा किया है और इस संबंध में कोई टिप्पणी नहीं की जा सकती है।
- (च) सहभागी उत्पादकों/निर्यातकों की निर्यात कीमत के संबंध में निवेदन है कि इसका मूल्यांकन केवल उन्हीं मामलों में किया जाना चाहिए, यदि वितरण माध्यम का संघटक बनने वाले सभी व्यापारियों ने जांच में भाग लिया है।

- (छ) इसके अतिरिक्त जहाँ निर्यात संबंधित कंपनियों के माध्यम से किए गए हैं, वहाँ प्राधिकारी को इसकी जांच करनी चाहिए कि क्या प्रदत्त निर्यात कीमत विश्वसनीय है। यदि नहीं, तो उसका निर्धारण, ऐसी कीमत के आधार पर किया जाना चाहिए जिस कीमत पर संबंधित वस्तुओं को स्वतंत्र और असंबंधित क्रेता को बेचा गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

विएतनाम में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण

बाजार अर्थव्यवस्था के दावे की जांच

31. मेसर्स हुओंग डोंग नाई ने अनुपूरक प्रश्नावली के उत्तर निर्धारित प्रपत्र में प्रस्तुत किए हैं और नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (3) में निर्धारित मानदंड के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की परिकल्पना का खंडन करते हुए सभी आवश्यक समर्थित दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं। उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों का तालिका अध्ययन भी किया गया था। इस संबंध में यह नोट किया गया है कि मेसर्स हुओंग डोंग नाई, मेसर्स हुओंग इस्तानबुल टीईकेएसटीएच लिमिटेड के पूर्ण स्वामित्वाधीन कंपनी है। एसटीएल तुर्की में अवस्थित एक कंपनी है और उसका अंततः शेयरधारक हुओसोंग कार्पोरेशन, कोरिया है। स्वामित्व तथा कीमतों, लागतों, इनपुट और उत्पादन के संबंध में मुख्य निर्णय लेने में राज्य का हस्तक्षेप करने का कोई साक्ष्य नहीं पाया गया है। उत्पादन और/अथवा अन्य प्रयोजनार्थ प्रयुक्त समस्त सुविधाएं मेसर्स हुओसोंग डोंग नाई के स्वामित्वाधीन हैं। चूंकि मेसर्स हुओसोंग डोंग नाई एक नई कंपनी है, जिसकी स्थापना वर्ष 2015 में तुर्की में एक प्राईवेट कंपनी द्वारा की गई है, पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली का पता नहीं लगाया गया था। बाजार कीमत पर कच्चे माल का उत्पादन, सिंगापुर में स्थित उसकी संबंधित कंपनी द्वारा किया जाता है, जो कि कच्चे माल की बिक्री, गैर-संबंधित कंपनी को भी करती है। कच्चे माल की खरीद पर कीमत में कोई वास्तविक अंतर नहीं पाया गया है। परिसंपत्तियों में मूल्य ह्रास, विनिमय दर, कमीशन आदि के संबंध में नियमावली के पैरा 8 (3) में प्रदत्त अन्य प्राचलों की भी जांच की गई थी। तथापि, ऐसी कोई सामग्री ध्यान में नहीं आई है, जिससे यह पता चले कि निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था के प्राचलों के अनुसार कार्य नहीं कर रहा है।
32. इसके अतिरिक्त यह भी नोट किया जाता है कि विएतनाम से आयातों से संबंधित विगत जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे की जांच की गई थी। इस संबंध में कम्पेक्ट डिस्क रिकार्डबल (सीडी-आर) के मामले में दिनांक 06.03.2009 के अंतिम जांच परिणाम और रिकार्डबल डिजीटल वर्सेटाईल डिस्क (डीवीआर) से संबंधित जांच में जारी दिनांक 02.07.2010 के अंतिम जांच परिणाम का हवाला दिया जाता है, जिसमें विएतनाम अवस्थित निर्यातकों की जांच की गई थी और यह पाया गया था कि वे बाजार अर्थव्यवस्था की दशा में कार्य कर रहे हैं।
33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में प्राधिकारी द्वारा जांच शुरू करने संबंधी अधिसूचना जारी करने पर विएतनाम के निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों/व्यापारियों ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं:-
- (क) फोरमोस इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन, विएतनाम
 - (ख) बोसका इंटरप्राइजिज लिमिटेड (बीओएससीए), हांगकांग
 - (ग) लिओंग हॉ टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड (एलआईएचए), ताईवान
 - (घ) ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड, विएतनाम
 - (ङ) ह्योसोंग इंटरनेशनल (एचके) लिमिटेड, हांग कांग
 - (च) रेन टोंग इंडस्ट्रियल लिमिटेड, हांग कांग
34. विएतनाम के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में रिकार्ड की जांच, तालिका का अध्ययन करने के तरीके से की गई थी।
- (1) **मेसर्स फोरमोस इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन, विएतनाम, उत्पादक और उसके व्यापारियों/निर्यातकों, मेसर्स लिओंग हॉ टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड, ताईवान और मेसर्स बोसका इंटरप्राइजिज लिमिटेड (बीओएससीए), हांगकांग के लिए सामान्य मूल्य**
35. उत्पादक, मेसर्स फोरमोस इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन, विएतनाम (एफआईसी) और उसके व्यापारियों/निर्यातकों, मेसर्स लिओंग हॉ टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड, ताईवान और मेसर्स बोसका इंटरप्राइजिज लिमिटेड (बीओएससीए), हांगकांग द्वारा प्रस्तुत उत्तर से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि एफआईसी ने जांच अवधि के दौरान भारत को केवल

कुछ पीसीएन के निर्यात किए हैं। तथापि, उत्पादक अपने उत्तर में दी गई पीसीएन वार लागत के उचित औचित्य प्रतिपादन प्रस्तुत नहीं कर सका है और तदनुसार प्राधिकारी को उत्पादक के लिए सामान्य मूल्य संरचित करना पड़ा है।

36. संबद्ध वस्तुओं के लिए उपरोक्त उत्पादक का कोई विश्वसनीय लागत ब्यौरा नहीं होने के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी ने समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक रूप से अदा की गई अथवा देय कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य संरचित किया है।
37. तदनुसार, एफआईसी के लिए निर्धारित किया गया सामान्य मूल्य, नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

(2) उत्पादक, मेसर्ज ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड, विएतनाम और उसके व्यापारियों/ निर्यातकों, ह्योसोंग इंटरनेशनल (एचई) लिमिटेड, हांगकांग और मेसर्ज रेन टोंग इंडस्ट्रियल लिमिटेड, हांग कांग के लिए सामान्य मूल्य

38. उत्पादक, मेसर्ज ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड, विएतनाम और उसके व्यापारियों/ निर्यातकों, ह्योसोंग इंटरनेशनल (एचई) लिमिटेड, हांगकांग और मेसर्ज रेन टोंग इंडस्ट्रियल लिमिटेड, हांग कांग द्वारा प्रस्तुत उत्तर से प्राधिकारी नोट करते हैं कि मेसर्ज ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड ने जांच अवधि के दौरान भारत को केवल कुछ पीसीएन के निर्यात किए हैं। तथापि, उत्पादक अपने उत्तर में दी गई पीसीएन-वार लागत के उचित औचित्य प्रतिपादन प्रस्तुत नहीं कर सका है और तदनुसार प्राधिकारी को उत्पादक के लिए सामान्य मूल्य संरचित करना पड़ा है।
39. संबद्ध वस्तुओं के लिए उपरोक्त उत्पादक का कोई विश्वसनीय लागत ब्यौरा नहीं होने के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी ने समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक रूप से अदा की गई अथवा देय कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य संरचित किया है।
40. तदनुसार, एफआईसी के लिए निर्धारित किया गया सामान्य मूल्य, नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

(3) विएतनाम में असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

41. विएतनाम के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है और उसके नीचे पाटन तालिका में दर्शाया गया है।

विएतनाम में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण

(1) मेसर्ज फोरमोसा इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन, विएतनाम, उत्पादक और उसके व्यापारियों/ निर्यातकों नामतः मेसर्ज लीऑंग हॉ टेक्नोलोजी कंपनी लिमिटेड, ताईवान और मेसर्ज बोसका इंटरप्राईजिज लिमिटेड, हांग कांग के लिए निर्यात कीमत

42. मेसर्ज फोरमोसा इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन (एफआईसी) के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण, उत्पादक और उसके निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया गया है। उत्पादक/निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तुओं के ***मी.टन निर्यात किए हैं। कारखाना-गत स्तर पर निबल निर्यात कीमत निर्धारित करने के लिए पैकिंग, अंतरदेशीय भाड़े, कमीशन, सीमा-शुल्क हैंडलिंग प्रभारों, समुद्री भाड़े, बीमा और बैंक प्रभारों के लिए समायोजन पर विचार किया गया है। भारत को निर्यातित प्रत्येक पीसीएन के लिए पृथक निर्यात कीमत निर्धारित की गई है। तदनुसार, मेसर्ज फोरमोसा इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन के लिए भारत औसत निर्यात कीमत निर्धारित की गई है, जिसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

(2) मेसर्ज ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड, विएतनाम, उत्पादक और उसके व्यापारियों/निर्यातकों नामतः मेसर्ज ह्योसोंग इंटरनेशनल लिमिटेड, हांगकांग और मेसर्ज रेन टोंग इंडस्ट्रियल लिमिटेड, हांगकांग के लिए निर्यात कीमत

43. मेसर्ज ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड, हांगकांग के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण उत्पादक और उसके निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया गया है। यह नोट किया जाता है कि सिंगापुर अवस्थिति उसके एक असंबंधित व्यापारी नामतः मेसर्ज ग्रीनवर्थ इंटरनेशनल प्राईवेट लिमिटेड ने अपने उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं और इस प्रकार उसने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है। तथापि, असहयोगी व्यापारी के माध्यम से किए गए निर्यात इतने अधिक नहीं हैं कि उत्पादक की समग्र श्रृंखला के उत्तर को खारिज कर दिया जाए तथा निर्यातकों/व्यापारियों को असहयोगी घोषित कर दिया जाए। कारखाना-गत स्तर पर निबल निर्यात कीमत निर्धारित

करने के लिए पैकिंग, अंतरदेशीय भाड़े, कमीशन, सीमा-शुल्क हैंडलिंग प्रभारों, समुद्री भाड़े, बीमा और बैंक प्रभारों के लिए समायोजन पर विचार किया गया है। भारत को निर्यातित प्रत्येक पीसीएन के लिए पृथक निर्यात कीमत निर्धारित की गई है। तदनुसार, मेसर्ज ह्योसोंग डोंग नाई कंपनी लिमिटेड के लिए भारत औसत निर्यात कीमत निर्धारित की गई है, जिसे नीचे पाटन तालिका में दर्शाया गया है।

(3) विएतनाम में असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

44. विएतनाम के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्यात मूल्य पर विचार किया गया है और उसे नीचे पाटन तालिका में दर्शाया गया है।

यूरोपीय यूनियन में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का निर्धारण

45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मेसर्ज एक्वाफिल एस.पी.ए., इटली नामक यूरोपीय उत्पादक/ निर्यातक ने निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं। उक्त उत्पादक/निर्यातक के संबंध में रिकार्ड की जांच की गई थी।

(1) मेसर्ज एक्वाफिल एस.पी.ए., इटली नामक उत्पादक के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

46. मेसर्ज एक्वाफिल एस.पी.ए., इटली द्वारा प्रस्तुत उत्तर से प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि मेसर्ज एक्वाफिल एस.पी.ए., इटली ने जांच अवधि के दौरान भारत को बीसीएफ और सेकेंड ग्रेड के एनटीएफ उत्पादों के निर्यात किए हैं। मेसर्ज एक्वाफिल द्वारा निर्यातित इन उत्पादों को इस कारणवश विचाराधीन उत्पाद से बाहर रखा गया है कि घरेलू उद्योग ने बाद में यह स्पष्ट किया है कि वह इन उत्पादों का विनिर्माण नहीं कर रहा है। तदनुसार, प्राधिकारी ने मेसर्ज एक्वाफिल के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत निर्धारित नहीं की है। प्राधिकारी ने उक्त उत्पादक द्वारा किए गए सभी निर्यातों को आयात के आंकड़ों और यूरोपीय यूनियन से आयात की मात्राओं से बाहर रखा है।

(2) यूरोपीय यूनियन में असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

47. सहभागी यूरोपीय यूनियन के उत्पादक की आयात मात्रा को बाहर रखने के बाद प्राधिकारी ने यूरोपीय यूनियन से बाकी आयातों की जांच की है। इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है, जबकि निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त किए गए आयात आंकड़ों से प्राप्त सांख्यिकीय आधार पर किया गया है। इसके आधार पर निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन नीचे तालिका में दर्शाया गया है। इस प्रकार से निर्धारित किया गया सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत यूरोपीय यूनियन से सभी निर्यातकों (जिनमें बहिष्कृत किए गए उत्पादों से भिन्न विचाराधीन उत्पाद के लिए मेसर्ज एक्वाफिल भी शामिल है) पर लागू होगी।

विएतनाम और यूरोपीय यूनियन में उत्पादकों और निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण

48. संबद्ध देशों के संबंध में पीसीएन-वार विश्लेषण के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए भारत को निर्यात कीमत की तुलना, सामान्य मूल्य के साथ की गई है। संबद्ध देशों से सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है, जिसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

पाटन मार्जिन तालिका

देश	उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य अमरीकी डालर/मी.टन	निर्यात कीमत अमरीकी डालर/मी.टन	पाटन मार्जिन अमरीकी डालर/मी.टन	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन (सीमा %)
विएतनाम	फोरमोस इंडस्ट्रीज कार्पोरेशन (एफआईसी)	1. लिओंग हॉ टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड ताइवान 2. बोसका इंटरप्राइजिज लिमिटेड, हांगकांग	***	***	***	***	20-25%
विएतनाम	ह्योसोंग डोंग नाई	1. ह्योसोंग इंटरनेशनल (एचके) लिमिटेड	***	***	***	***	0-5%

		2. रेन टोंग इंडस्ट्रियल लिमिटेड, हांग कांग					
विएतनाम	सभी अन्य	सभी अन्य	***	***	***	***	50-55%
यूरोपीय यूनियन*	सभी	सभी	***	***	***	***	10-20%

49. यह देखा गया है कि पाटन मार्जिन अत्यधिक है और यह मेसर्ज हुआसोंग डोंग नाई, विएतनाम के मामले को छोड़ कर विचाराधीन उत्पाद के सभी उत्पादकों और निर्यातकों के संबंध में न्यूनतम सीमाओं से अधिक है।

ख. क्षति और कारणात्मक संबंध का निर्धारण

50. अनुबंध-2 के साथ पठित पाटन-रोधी नियमावली के नियम-11 में किसी क्षति के निर्धारण में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में " पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए..." ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी, जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।"
51. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 के अनुसार उद्योग की स्थिति का दर्शाने वाले उत्पादन, क्षमता उपयोग, विक्रियों की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निबल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा और मार्जिन आदि जैसे सूचकों पर विचार किया गया है।

घरेलू उद्योग की क्षति के बारे में उत्पादकों/निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

52. जांच की कार्यवाही के दौरान घरेलू उद्योग को हुई क्षति के दावों के संबंध में उत्पादकों/ निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा प्रासंगिक पाए गए निवेदन निम्नानुसार हैं :
- (क) वर्ष 2013 से 2017 तक की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि होने का कारण पाटन नहीं बल्कि निचले स्तर के उद्योग के विकसित होने के फलस्वरूप भारतीय बाजार में मांग में संवृद्धि होना है।
- (ख) संबद्ध देशों और घरेलू उद्योग से कीमत की प्रवृत्ति में वर्ष 2013-14 से ले कर जांच अवधि तक अस्थिरता रही है। पहुंच कीमत और घरेलू बिक्री कीमत में समान रूप से गिरावट आ रही है। इससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को कीमत क्षति नहीं हो सकती है।
- (ग) क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती अपरिवर्तित रही है। इसका विश्लेषण किया जाना चाहिए कि क्या ऐसी कीमत कटौती, घरेलू उद्योग की आर्थिक क्षति का परिणाम है। वर्तमान मामले में सकारात्मक कीमत कटौती होने के बावजूद घरेलू उद्योग ने अपने कार्य-निष्पादन को बढ़ाया है। इसलिए वर्तमान जांच में कीमत कटौती की कोई संबद्धता नहीं है।
- (घ) याचिकादाता प्रत्येक वर्ष, क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान भी अपनी क्षमता को बढ़ा रहे हैं। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2013-14 के दौरान उत्पादन *** मी.टन से बढ़ कर जांच अवधि में *** मी.टन हो गया है और आधार वर्ष 2013-14 की तुलना में जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 83% से 84% के बीच लगभग बराबर बना हुआ है। इससे पता चलता है कि घरेलू उद्योग में सुधार हो रहा है।
- (ङ) आधार वर्ष 2013-14 की तुलना में जांच अवधि के दौरान याचिकादाताओं की विक्रियों की मात्रा *** मी.टन से बढ़ कर *** मी.टन हो गई है।
- (च) घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से में गिरावट आई है, जो कि 47% (वर्ष 2013-14 में) से गिर कर जांच अवधि के दौरान 38% रह गया है। यह गिरावट आयातों में वृद्धि होने के कारण नहीं बल्कि अन्य भारतीय उत्पादकों के हिस्से में वृद्धि होने से हुई है। अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार के हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई

है, जो कि वर्ष 2013-14 में 22% से बढ़ कर जांच अवधि में 38% हो गया है। इसके विपरीत संबद्ध देशों से आयातों के हिस्सा लगभग समान बना हुआ है, जो कि 2013-14 में 12% था और जांच अवधि में 14% हो गया है।

- (छ.) घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार हुआ है और यूरोपीय यूनियन से संबद्ध वस्तुओं पर पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने का कोई मामला नहीं बनता है। कुल आयातों में यूरोपीय यूनियन का हिस्सा 7% बनता है और इस 7% हिस्से ने न तो कोई विशेष वृद्धि दर्शाई और न ही घरेलू उद्योग के हिस्से में कोई गिरावट आई है। इसलिए यूरोपीय यूनियन और मेसर्स एक्काफिल एस.पी.ए. से निर्यात, घरेलू उद्योग की किसी भी क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं हैं।
- ज. वर्तमान मामले में जांच की अवधि और विगत निर्णायक समीक्षा जांच की अवधि में काफी दोहरापन है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह पाया है कि निर्णायक समीक्षा जांच की अवधि में कोई क्षति नहीं हुई, इसलिए इस मामले में कोई हानि नहीं हो सकती। मोनो के लिए भारतीय घरेलू उद्योग की मांग 10% से भी कम है और 90% डाटा केवल मल्टी फिलामेंट से संबंधित है, जो कि निर्णायक समीक्षा जांच में था ही वही है।
- झ. घरेलू उद्योग के निष्पादन में जांच की अवधि के दौरान सुधार हुआ है। आयातों में वृद्धि के कारण ऐसी कोई क्षति नहीं हुई जिससे की कारोबार पर कोई प्रभाव पड़ता। घरेलू उद्योग को कोई हानि नहीं हुई है क्योंकि आयातों में वृद्धि हुई है जो कि उनके वित्तीय विवरणों से देखी जा सकती है।
- ञ. जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में मात्रा की दृष्टि से निरंतर वृद्धि हुई है जबकि यूरोपीय संघ से आयातों में कमी आई है। उस अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है।
- ट. घरेलू उद्योग वियतनाम और यूरोपीय संघ पर पाटनरोधी शुल्क लगाना चाहता है क्योंकि चीन, ताइवान, मलेशिया इत्यादि से पाटन रोधी शुल्क कम होना था। घरेलू उद्योग की भारतीय आयातकों पर लाभ प्राप्त करने के लिए पाटन रोधी शुल्क को एक हथियार के रूप में प्रयोग करने की इच्छा है।
- ठ. घरेलू उद्योग द्वारा दावा की गई हानि उनकी प्रक्रियाओं अथवा अन्य कारकों में उनकी अक्षमता के कारण थी क्योंकि वे वर्ष 2014-16 के दौरान कूड कीमतों में महत्वपूर्ण गिरावट के बावजूद लाभ नहीं कमा सके।
- ड. यूरोपीय संघ से आयातों की अलग-अलग कीमत है और वियतनाम अथवा अन्य आयातों की कीमतों से तुलना नहीं की जा सकती। इस प्रकार यह संभव नहीं है कि यूरोपीय संघ के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।
- ढ. क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में दोगुनी वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग मांग पूरी करने में समर्थ नहीं था। इस प्रकार से अन्य देशों से आयातों में वृद्धि होना जरूरी था।
- ण. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग, बिक्री और कीमत, प्रति यूनिट लागत तथा स्टॉक के संबंध में डाटा पर याचिका में समुचित ध्यान/विश्लेषण नहीं किया गया है।
- त. घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि 74% बाजार अंश संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण प्रभावित हुआ है। भारतीय उत्पादकों को बाजार अंश में जांच की अवधि के दौरान तीव्र वृद्धि हुई है, जो यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई।
- थ. बिक्री कीमत में गिरावट होने के कारण लागत में गिरावट होना है ना की आयातों में के कारण से है।
- द. घरेलू उद्योग की कीमत में वर्ष 2012-13 से 2014-15 के दौरान कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया। वियतनाम से निर्यातों में काफी वृद्धि हुई है। अतः वियतनाम से विचाराधीन उत्पाद की कीमत को कीमत कटौती अथवा कीमत में कमी का कारण नहीं माना जा सकता।
- ध. घरेलू उद्योग का यह दावा की पाटित आयातों के कारण उनको हानि हुई है, गलत है। बस 2014-15 के बाद से उनके लाभ और पीबीआईटी में सकारात्मक वृद्धि हुई है।
- न. घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति में सुधार हुआ है।
- प. यूरोपीय संघ और वियतनाम से आयात ऐसे देशों से हुए आयातों से अधिक कीमत पर हुए हैं, जिनकी पूर्व में जांच हुई है।

- फ. जांच को समाप्त किया जाना चाहिए क्योंकि एन एफ वाई के संबंध में कोई क्षति नहीं हुई है। चीन, ताइवान, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और कोरिया से हुए प्रमुख आयात केवल मल्टी फिलामेंट यार्न के थे।
- ब. संबद्ध देशों से हुए आयातों की मात्रा में सापेक्ष संदर्भ में अथवा भारतीय उत्पादन के संबंध में और खपत के संबंध में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई है।
- भ. याचिकाकर्ताओं को संबद्ध देशों से हुए आयातों की मात्रा में वृद्धि के बावजूद कम नुकसान हुआ है।
- म. शामिल पूंजी में वृद्धि हुई है लेकिन क्षमता में समुचित वृद्धि नहीं हुई। याचिकाकर्ताओं ने अचानक और काफी मात्रा में पूंजी में वृद्धि की है। एनएफए आधार पर पूंजी में इतनी वृद्धि बिना क्षमता के पर्याप्त वृद्धि के होना शामिल पूंजी पर प्रतिफल में गिरावट की स्थिति लाता है। ऐसी गिरावट से भी समग्र हानि में वृद्धि हुई है।
- य. एन वी के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया गया है।
- कक. निर्यात कीमत की गणना करते समय समायोजन के लिए कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया गया है।
- खख. भारत में, पॉलियामाइड यार्न कमोडिटी उत्पाद है, जबकि यूरोपीय संघ में इसमें उच्च ग्रेड शामिल है। इस प्रकार, यूरोपीय संघ के लिए दो अलग-अलग उत्पाद श्रृंखला हैं अर्थात् घरेलू विक्रयों और विदेशों में विक्रयों के लिए, जिनमें उत्पाद और कीमत में अंतर है। ऐसे अंतर को दर्शाने के लिए पीसीएन किया जाना चाहिए।
- गग. एनएफवाई की दो श्रेणियां हैं, बीसीएफ (बल्क कंटीन्यूअस फिलामेंट) और एनटीएफ (नाइलोन टेक्सटाइल फाइबर)। बीसीएफ का प्रयोग कारपेट निर्माण के लिए और एनटीएफ का प्रयोग वस्त्रों के लिए किया जाता है। यूरोपीय संघ के उपभोक्ता गुणवत्ता के प्रति जागरूक हैं और इसमें यार्न की बेहतर गुणवत्ता जरूरी है। शेष दूसरी गुणवत्ता यूरोपीय संघ में बेची जाती है अथवा बाजार की कीमतों पर निर्यात की जाती है।
- घघ. एवाईएम, जेसीटी और सालासर ने आयात किए हैं, जो निर्यातकों द्वारा दाखिल किए गए उत्तरों से देखा जा सकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए इस गलत प्रमाण की जांच करनी चाहिए क्योंकि उसने निर्दिष्ट प्राधिकारी को गुमराह करने का प्रयास किया है। इससे घरेलू उद्योग के दायरे से इसे बाहर करना और आधार से उनकी डाटा को बाहर करना अपेक्षित हो जाता है।
- ड.ड. कोरिया के विरुद्ध पाटन रोधी शुल्क की मौजूदगी और वियतनाम में हियोसंग द्वारा संयंत्र की स्थापना करने के बीच कोई सह-संबंध नहीं है।
- चच. विचाराधीन उत्पाद पर पाटन रोधी शुल्क लगाने से निचले उद्योगों जैसे इंडियन केमिकल फाइबर, बुनाई और गारमेंट उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- छछ. घरेलू उद्योग के तथ्य यह दर्शाते हैं कि उन्होंने आयातों में वृद्धि को प्रभावित किया है और जान-बूझकर क्षति उत्पन्न की है। यदि प्राधिकारी जांच को जारी रखते हैं तो यह माना जाएगा कि आयातों में कोई वृद्धि नहीं है।
- जज. अब दाखिल किए गए डाटा और निर्णायक समीक्षा के मामले के बीच अनिरंतरता मौजूद है। प्राधिकारी को डाटा की पुष्टि करके और अनिरंतरता को दूर करना चाहिए।
- झझ. घरेलू उद्योग, गुणवत्ता उत्पादों की आपूर्ति करने में असमर्थ है। जबकि आयातित उत्पादों की रंजक संबंधी 100% गारंटी है लेकिन घरेलू उद्योग रंजक संबंधी कोई गारंटी नहीं देता।
- ञञ. जीएफए पर 26% प्रतिफल काफी अधिक है और कानून के अनुसार नहीं है।
- टट. पूर्व पाटन और घरेलू उद्योग को विगत वर्षों के दौरान हुई क्षति के प्रभाव यूरोपीय संघ और वियतनाम से हुई आयातों के कारण से नहीं है।
- ठठ. निर्दिष्ट प्राधिकारी की जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित आरओसीई को अपनाना चाहिए, जबकि कोई पाटन के आरोप नहीं थे क्योंकि तर्कसंगत लाभ मार्जिन नहीं था और 22% आरओसीई नहीं था। 22% प्रतिफल गलत है क्योंकि शामिल पूंजी के ऋण अंश पर करीब 10 से 12% तक ब्याज है, निवल पूंजी पर 22% से अधिक प्रतिफल और वैश्विक मंदी के कारण घरेलू उद्योग को इतना प्रतिफल प्रदान करना गलत है और ऐसा कभी भी किसी भी क्षेत्र में नहीं सुना गया।

- डड. 22% प्रतिफल घरेलू उद्योग को अनुचित लाभ और संरक्षण प्रदान करता है। इक्विटी पर 41% लाभ मार्जिन को किसी भी दृष्टि से तर्कसंगत नहीं माना जा सकता।
- ढढ. प्रफुल ने यह दर्शाया है कि उसकी अपनी उत्पादन क्षमता में परिवर्तन करने की आगे की योजना है। एवाईएम ने यह दर्शाया है कि उनकी योजना क्षमताओं को बढ़ाने की है, सालासर गुप कंपनी टोडी रेयान ने 2016 में उत्पादन करना आरंभ किया है। शिवेन यार्न जैसे नए भागीदारों ने कई करोड़ का निवेश किया है। ये विस्तार कंपनियों द्वारा और बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं द्वारा वित्तीय और लाभप्रदता का मूल्यांकन और आकलन करने के बाद किए जाने चाहिए थे।

घरेलू उद्योग के विचार

53. घरेलू उद्योग द्वारा क्षति संबंधी मामलों के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं जिन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया है:

- क. विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग में तीव्र वृद्धि हो रही है और इसमें जांच की अवधि के दौरान करीब 65% की वृद्धि हुई है।
- ख. आयातों में क्षति की अवधि के दौरान तेजी से वृद्धि हुई है। आयातों में क्षति अवधि के दौरान दोगुनी वृद्धि हुई है जबकि उसी अवधि में मांग में केवल 65% वृद्धि हुई।
- ग. यूरोपीय संघ से 7% से अधिक आयात होने का तथ्य स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि वे मात्रा में न्यूनतम से अधिक हैं, पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन दोनों ही सकारात्मक हैं।
- घ. जबकि यूरोपीय संघ से व्यापारों में मांग में हुई वृद्धि के अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है, यूरोपीय संघ से आयात की कीमत में जांच की अवधि के दौरान काफी गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त आधार वर्ष में ही आयातों की कीमतें पाटित कीमतें थी, उसके बाद कीमत में गिरावट लागत में गिरावट से भी अधिक थी। दूसरे शब्दों में पाटन मार्जिन में इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। इस प्रकार जब आयात की मात्रा में वृद्धि नहीं हुई तो संबंध देशों से पाटित कीमतों पर उत्पादों का आयात जारी रहा और पाटन के मार्जिन में वृद्धि हुई।
- ङ. इसके अतिरिक्त वर्तमान मामला निरंतर क्षति होने का मामला है। यदि ऐतिहासिक डाटा देखा जाए तो आयातों में वृद्धि काफी अधिक चिंताजनक है।
- च. भारत में उत्पादन और भारतीय मांग/खपत के संबंध में आयतों में वृद्धि हुई है।
- छ. आयातों का याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग की कीमतों पर गिरावट और रुकावट संबंधी प्रभाव रहा है।
- ज. आयातों से बिक्री कीमत में कटौती हो रही है और याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग की गैर क्षति कीमत पर कम बिक्री हो रही है।
- झ. याचिकाकर्ताओं ने क्षति की अवधि के दौरान क्षमता, उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि की है। तथापि, इसे उनकी कीमतों को कम करके हासिल किया गया है ताकि बाजार में उपभोक्ता बरकरार रहें।
- ञ. याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग के बाजार अंश में यहां तक कि तब भी कमी आई है, जबकि भारतीय उद्योग समग्र रूप से बाजार में अपना स्थान बरकरार रखने में समर्थ हो गया है। तथापि, ऐसा अंश लाभकारी लागत पर बरकरार है।
- ट. याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग की वस्तु सूची में इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ठ. याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग के लाभ में महत्वपूर्ण गिरावट आई है और निरंतर हानि ने याचिकाकर्ताओं के लाभ को और भी कम किया है।
- ड. याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग के नकद लाभ में गिरावट आई है और इसका प्रतिफल नकारात्मक है।
- ढ. याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग की सभी लाभ मापदंडों में वृद्धि नकारात्मक है।
- ण. संबद्ध देशों से पाटन की मात्रा केवल सकारात्मक नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण है।

- त. इसके अतिरिक्त याचिकाकर्ता सामग्री क्षति की समस्या का सामना कर रहे हैं, जैसा कि इन वर्षों के दौरान पाटित आयातों की वृद्धि की दर, कीमत कटौती, जिसके कारण हाथों में वृद्धि हुई है और संबद्ध विदेशी उत्पादकों की स्वतंत्र रूप से निपटान करने की क्षमताओं से स्पष्ट है।
- थ. कारणात्मक संबंध प्रमाणित हुआ है क्योंकि ऐसे कोई अन्य ज्ञात कारक नहीं है, जो घरेलू उद्योग को क्षति होने के लिए जिम्मेदार हैं। इस संबंध में यह कहना है कि गैर-संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा अपर्याप्त है। मलेशिया, ताइवान तथा कोरिया जैसे देशों के संबंध में, प्राधिकारी ने इन देशों से हुए आयातों की जांच की है और यह पाया है कि वह गैर क्षति कारक थे। संबद्ध वस्तुओं की मांग पर भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है बल्कि इसमें वृद्धि हुई है। ऐसी कोई भी व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया अथवा प्रतिस्पर्धा की शर्त नहीं है, जिसे याचिकाकर्ताओं को क्षति पहुंचाने के कारण के रूप में माना जा सके। किसी पुरानी प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण से कोई क्षति नहीं हुई है। याचिकाकर्ताओं ने घरेलू और निर्यात पर प्रचालनों के लिए डाटा को अलग किया है और लाभ, नगद लाभ, निवेश पर प्रतिफल तथा अन्य संगत मापदंडों, जो घरेलू प्रचालनों से संबंधित हैं, के संबंध में डाटा प्रदान किए हैं। अतः याचिकाकर्ताओं का निर्यात निष्पादन किसी प्रकार की क्षति के रूप में नहीं कहा जा सकता। याचिकाकर्ताओं के अन्य उत्पादों का निष्पादन क्षति का कारण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि निष्पादन डाटा केवल संबद्ध वस्तुओं से संबंधित है। अंततः खपत पैटर्न में कोई ऐसा बदलाव नहीं है, जिसके लिए कि याचिकाकर्ताओं को क्षति के कारण के रूप में दावा किया जा सके।
- द. हितबद्ध पक्षकार एनएफवाई निर्णायक समीक्षा मामले के डाटा की वर्तमान मामले के साथ तुलना गलत कर रहे हैं। विचाराधीन उत्पाद का दायरा ही निर्णायक समीक्षा मामले में और वर्तमान मामले में अलग है। वास्तव में घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिए हैं कि नायलोन मोनोफिलामेंट यार्न के आयात उनके स्थान पर पाटन रोधी शुल्क लगाए जाने और वर्तमान संबद्ध देशों से नायलॉन मोनो फिलामेंट यार्न का कोई आयात ना होने के कारण प्रभावित नहीं हुआ है। वास्तव में, संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का पाटन और विचाराधीन उत्पाद में वित्तीय हानि तथा वर्तमान जांच की अवधि के दौरान नायलॉन मोनो फिलामेंट यार्न का कोई पाटन ना होना और यह तथ्य घरेलू उद्योग वर्तमान याचिका में नायलॉन मोनो फिलामेंट यार्न में क्षति का सामना नहीं कर रहा है, स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को क्षति होने का कारण देश में उत्पादन का पाटन होना है ना कि कोई अन्य कारक के कारण से है।
- ध. घरेलू उद्योग का आशय महत्वपूर्ण नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहले ही अन्य देशों से आयातों के संबंध में पाटन रोधी शुल्कों को वापस लेने की सिफारिश की है।
- न. भारतीय उद्योग कम क्षमता उपयोग की समस्या का सामना कर रहा है। जैसा कि वस्त्र मंत्रालय द्वारा दिए गए आंकड़े समग्र भारतीय उद्योग के लिए संचित रूप में हैं, लेकिन याचिकाकर्ताओं द्वारा दिए गए आंकड़े घरेलू उद्योग के संबंध में हैं।
- प. हितबद्ध पक्षकारों का तर्क यह प्रमाणित करता है कि गैर-याचिकाकर्ता घरेलू उत्पादकों का निष्पादन वास्तव में याचिकाकर्ता घरेलू उत्पादकों की तुलना में काफी अधिक प्रतिकूल है। यह सुनवाई के समय दिए गए विवरण से भी प्रमाणित होता है जिससे कुछ पक्षकारों ने यह स्वीकार किया है कि वे पहले उत्पाद का निर्यात करते थे और उसके बाद भारत में निर्माण सुविधाएं स्थापित की और निर्माण सुविधाएं स्थापित किए जाने के बावजूद ये पक्षकार उत्पाद का आयात कर रहे हैं।
- फ. कूड कीमतों में उत्पादन प्रक्रिया में सक्षमताओं अथवा और अक्षमताओं से कुछ भी संबंध नहीं है। कूड कीमत का विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए अपेक्षित चिप्स की कीमत से संबंध है। जैसा कि स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की उत्पादन की लागत में काफी गिरावट आई है। लागत में यह गिरावट ज्यादातर कूड कीमत की गिरावट के कारण से है। अतः घरेलू उद्योग को कूड कीमतों में गिरावट आने के कारण उत्पादन की लागत में कमी का लाभ मिला है। तथापि, आयातों की पहुंच कीमत लागतों में कमी के कारण हुई कमी से अधिक गिरावट आई है।
- ब. प्राधिकारी ने वर्तमान प्रयोजनों के लिए पीसीएन का प्रस्ताव किया है और यूरोप से आयातित पीसीएन की तुलना वियतनाम से आयातित हुए पीसीएन से करने पर यह उत्पाद तुलनीय है। इसके अतिरिक्त जहां तक इस बात का संबंध है कि यूरोपीय उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किया गया पीसीएन घरेलू उद्योग का द्वारा आपूर्ति किए गए पीसीएन के समान ही है। यूरोपीय उत्पादक और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किया गया उत्पाद तुलनीय है। यह भी नोट किया जाता है कि वास्तव में अक्वाफिल ने यह दावा किया है कि उन्होंने भारतीय बाजार को दूसरी गुणवत्ता के लिए पाटन स्थल के रूप में इस्तेमाल किया है। अब इस बात का कोई आधार

नहीं है कि यूरोपीय उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किया गया उत्पाद टाई अथवा मानक के अनुसार अलग है और इसकी वियतनाम अथवा अन्य आयातों के साथ तुलना नहीं की जा सकती।

- भ. यह देखा जाएगा कि वास्तव में भारतीय उद्योग के पास ऐसी क्षमताएं हैं, जो समग्र भारतीय मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं। विचाराधीन उत्पाद के आयात इस प्रयोजन के लिए आवश्यक नहीं हैं। इसके अलावा, अगलोन, टोडी, पीएनपी और प्रफुल (अतिरिक्त क्षमता) ने हाल ही में प्रतिवर्ष *** मीट्रिक टन की सम्मिलित क्षमता शामिल की है।
- म. घरेलू उद्योग के लिए ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है कि वह विभिन्न क्षति मापदंडों का विश्लेषण करे और ना ही प्राधिकारी ने ऐसी कोई अपेक्षा निर्धारित की है। वास्तव में विश्व व्यापार संगठन ने थाईलैंड-एच-बीम्स के मामले में स्पष्ट रूप से यह पाया है कि, जिसमें पैनल ने पोलैंड के तर्क को अस्वीकार किया गया है कि अनुच्छेद 5.2 के पैरा (iv) में निहित है कि कुछ डेटा विश्लेषण की आवेदन में जरूरत है और यह कहा है कि विभिन्न क्षति मापदंडों का विश्लेषण जांच प्राधिकारियों का कार्य है और याचिका में इस संबंध में व्यापक विश्लेषण की जरूरत नहीं है।
- य. घरेलू उत्पादकों का बाजार अंश पूरा कम हो गया है जबकि वियतनाम से आयातों में वृद्धि हुई है। जैसा कि मौखिक सुनवाई के समय एक उत्पादक द्वारा अनुरोध किया गया था, कुछ पक्षकार, जो पहले विचाराधीन उत्पाद के आयातक थे, ने आयात बंद कर दिया था और उन्होंने निर्माण सुविधाओं की स्थापना की है। जबकि इन पक्षकारों ने आंशिक रूप से वियतनाम से आयात किया है, इन पक्षकारों ने उत्पाद का उत्पादन किया है और बाजार में बिक्री की है। अतः यह स्वभाविक है कि घरेलू उत्पादकों के बाजार अंश में इन उत्पादकों द्वारा किए गए उत्पादन की सीमा तक वृद्धि दर्शाई जाएगी। तथापि, इन उत्पादकों ने यह अनुरोध किया है कि वे देश में उत्पादन के पाटन को देखते हुए उत्पादों का आयात करने को मजबूर हुए हैं।
- कक. आयात कीमत में गिरावट लागत में गिरावट से अधिक है। चूंकि घरेलू उत्पादक वित्तीय घाटे की सामना कर रहा था, इसलिए घरेलू उद्योग वित्तीय घाटे को दूर करने के लिए लागतों में कमी होने पर अपनी कीमतें नहीं घटाएगा। तथापि, विचाराधीन उत्पाद का पाटन होने से घरेलू उद्योग को निरंतर नुकसान का सामना करना पड़ा। यह कहा जाता है कि समुचित क्षति अवधि ही पाटन की अवधि है और घरेलू उद्योग ने याचिकाएं दाखिल की थी, जो किसी न किसी कारण से जांच नहीं की जा सकीं।
- खख. रिकॉर्ड पर उपलब्ध डाटा स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि कीमत कटौती वर्तमान जांच की अवधि में कभी सकारात्मक रही है। यह नोट करना संगत है कि (क) वर्तमान मामले में विभिन्न टाइप के महत्वपूर्ण कीमत भिन्नता के कारण पीसीएन है। (ख) कीमत कटौती पीसीएन आधार पर निर्धारित की जानी अपेक्षित है। (ग) कीमत कटौती केवल जांच की अवधि के लिए निर्धारित की गई है ना की समग्र क्षति की अवधि के लिए। यह तथ्य कि वियतनाम से निर्यातों में काफी वृद्धि हुई है, यह प्रमाणित करता है की कीमत कटौती के कारण आयातों में वृद्धि हुई है।
- गग. रिकॉर्ड में उपलब्ध वास्तविक सूचना का संदर्भ लिया गया और उस पर भरोसा किया गया, जो यह स्पष्ट तौर पर दर्शाता है कि घरेलू उद्योग समूची जांच की अवधि के दौरान वित्तीय हानि, नकारात्मक लाभ, नकारात्मक नकदी लाभ, नकारात्मक आर ओ आई का सामना कर रहा है।
- घघ. वर्तमान मामले में कोई मांग-आपूर्ति का अंतर नहीं है। आयातों में केवल इस कारण से वृद्धि हुई है कि वियतनाम में उत्पादकों ने “मेक फॉर इंडिया” संयंत्र स्थापित किए हैं ताकि अन्य देशों से आयातों पर पहले लगाए गए पाटन रोधी शुल्क को दरकिनार किया जा सके। एक ओर शुल्क वाले देशों से आयातों में गिरावट और दूसरी ओर संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि तथा वियतनाम में संगत उत्पादकों की मौजूदगी इसको स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है।
- डड. घरेलू उद्योग इतनी लंबी अवधि से वित्तीय घाटे का सामना कर रहा है। अतः यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।
- चच. यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि क्यों वर्तमान जांच को समाप्त किया जाए। जहां तक चीन, मलेशिया, ताइवान इत्यादि से आयातों का संबंध है निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहले ही यह पाया है कि इन आयातों के कारण घरेलू उद्योग को ना तो क्षति हुई है और ना ही क्षति होने की संभावना है। हितबद्ध पक्षकारों ने ही उस जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष तर्क दिया था कि इन देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई और न ही क्षति होने की कोई संभावना है।

- छछ. याचिकाकर्ता कम वित्तीय घाटे का सामना इसलिए नहीं कर रहे हैं कि पाटन में कमी आई है, बल्कि इस कारण से भी कि उत्पादन की लागत में, चिप कीमतों में गिरावट आने के कारण से गिरावट आई है और घरेलू उद्योग ने उद्योगों के समक्ष आए महत्वपूर्ण वित्तीय घाटे को देखते हुए लागतों में गिरावट को आंशिक रूप से रोका है।
- जज. भारत द्वारा पाटन रोधी शुल्क लगाने और वियतनाम में संयंत्रों की स्थापना के बीच सीधा सह-संबंध है। जहां तक ह्योसंग का संबंध है, वास्तव में लगाए गए पाटन रोधी शुल्क और संयंत्र की स्थापना के बीच समय का अंतर है। यह कंपनी फोर्मोसा की सफलताओं से प्रेरित हुई और यह जानकर कि कैसे फार्मोसा भारतीय बाजारों में इतनी अधिक मात्रा में सफलतापूर्वक उत्पादन और बिक्री करने में समर्थ हो पाया। ह्योसंग कोरिया ने भी वियतनाम में एक निर्माण सुविधा स्थापित की है।
- झझ. घरेलू उद्योग बाजार की मांगों के प्रति और उपभोक्ताओं की जरूरतों के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह है। इसके अलावा उपभोक्ता स्वयं भी भारत में अपने हितों की रक्षा कर सकते हैं।
- जज. मामले के तथ्य स्पष्ट रूप से यह दर्शाते हैं कि आयातों में काफी वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग ने काफी लंबी अवधि के लिए क्षति का सामना किया है। घरेलू उद्योग के दावे का आधार तथ्यों पर है और उसने किसी आयात सूचना अथवा दिखावटी क्षति का सहारा नहीं लिया है।
- टट. किए गए अनुरोध के प्रतिकूल यूरोपीय उत्पादकों ने स्पष्ट तौर पर यह स्वीकार किया है कि उन्होंने भारतीय बाजार का इस्तेमाल उत्पाद के निर्यात के लिए पाटन स्थल के रूप में किया है, जिसे उनके घरेलू बाजार में स्वीकार नहीं किया गया था। वर्तमान मामले में पाटन केवल तकनीकी रूप में ही नहीं बल्कि वास्तविक रूप में भी हो रहा है। इसके अलावा, क्षति की अवधि के दौरान करीब 76% मांग की पूर्ति घरेलू उत्पादकों द्वारा की गई थी। इस प्रकार के मामले में किसी भी तरह से इस तर्क के लिए कोई आधार नहीं है कि घरेलू उद्योग का उत्पाद गुणवत्ता वाला उत्पाद नहीं है अथवा घरेलू उद्योग कोई रंजक संबंधी गारंटी नहीं देता।
- ठठ. यद्यपि घरेलू उद्योग नीति ने एनआईपी और क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजन के लिए, शामिल पूंजी पर 26% प्रतिफल का दावा किया है, जबकि एनआईपी की गणना पूंजी पर 22% प्रतिफल को देखते हुए की गई है। यह देखना होगा कि क्षति मार्जिन काफी अधिक है।
- डड. जहां तक वर्तमान याचिका का संबंध है, समग्र क्षति की अवधि ही वह अवधि है, जब विचाराधीन उत्पाद का भारतीय बाजार में पाटन किया जा रहा था।
- ढढ. निर्दिष्ट प्राधिकारी एन आई पी और क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए निरंतर शामिल पूंजी पर 22% प्रतिफल पर विचार कर रहा है। वर्तमान मामले में इसमें कटौती के लिए कोई भी कारण नहीं है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा इतनी लंबी अवधि तक निरंतर क्षति का सामना करने को देखते हुए, जबकि पूर्व आर ओ आई असंगत है, घरेलू उद्योग को पूर्व वित्तीय घाटे को पूरा करने के लिए अधिक संरक्षण दिया जाना चाहिए।
- णण. याचिकाकर्ताओं द्वारा उनकी वार्षिक रिपोर्ट में की गई टिप्पणियों के संबंध में प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा उठाए गए मामलों के संबंध में, यह कहना है कि प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा उठाए गए मामले प्राथमिक रूप से याचिकाकर्ता कंपनियों की 2013-14 और 2014-15 की वार्षिक रिपोर्ट से लिए गए हैं, जो कि आधार वर्ष हैं और वर्तमान जांच में दूसरा वर्ष है। प्रतिवादी पक्षकारों ने यह दावा किया है कि घरेलू उद्योग ने वार्षिक रिपोर्ट में उल्लिखित विभिन्न मामलों पर किसी क्षति का सामना नहीं किया है। जांच की अवधि में घरेलू उद्योग ने वित्तीय घाटे का सामना किया है।
- तत. घरेलू उत्पादकों द्वारा की गई क्षमता वृद्धि यह प्रमाणित करती है कि घरेलू उत्पादक अपनी ओर से सभी प्रयास कर रहे हैं ताकि वे प्रतिस्पर्धी रह सकें और देश में उत्पाद की मांग पूरी कर सकें। तथापि, देश में उत्पाद का निरंतर पाटन घरेलू उत्पादकों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहा है। एक याचिकाकर्ता जी एस एफ सी ने इंजीनियरिंग प्लास्टिक के लिए क्षमता वृद्धि की है, जिसका विचाराधीन उत्पाद से कोई संबंध नहीं है। दूसरे याचिकाकर्ता प्रफुल ने संयंत्र और मशीनरी में अतिरिक्त निवेश किया है और क्षमता में वृद्धि हुई है जिसके कारण अधिक उत्पादन और बिक्री हुई है। उत्पादन व बिक्री में वृद्धि के बावजूद लाभ में कमी आई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

54. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध को नोट किया है। प्राधिकारी ने पाटन रोधी नियमावली के अनुरूप घरेलू उद्योग की क्षति की जांच की है और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध पर विचार किया है।

55. पाटन रोधी नियमावली में प्राधिकारी को मात्रा और कीमत के प्रभाव दोनों की जांच करना अपेक्षित है। क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पारित आयातों के प्रभाव तथा (ख) घरेलू उद्योग पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की एक के उद्देश्यपरक जांच शामिल है। पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में, प्राधिकारी को इस बात पर विचार करना है कि क्या पाटित आयातों में वास्तविक अर्थों में अथवा उत्पादन के संबंध में अथवा भारत में खपत के संदर्भ में पर्याप्त वृद्धि हुई है। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में, प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से महत्वपूर्ण कीमत कटौती हो रही है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा महत्वपूर्ण वृद्धि कमी आई है अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा महत्वपूर्ण मात्रा में होती।
56. पाटित आयातों से घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध -II दो के पैरा (iv) में यह उल्लेख किया गया है:-
- “(iv) पाटित आयातों से घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच में सभी संबंधित आर्थिक कारणों का मूल्यांकन उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतक, बिक्री में कमी होने के प्राकृतिक एवं संभावित कारण, लाभ, उत्पादन, मार्केट शेयर, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग; घरेलू मूल्यों को प्रभावित करने वाले कारण, वास्तविक पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, वस्तु सूची, रोजगार, वेतन वृद्धि, पूंजी निवेश में वृद्धि करने की क्षमता शामिल है।”
57. यह आवश्यक नहीं है कि क्षति के सभी मापदंड गिरावट दर्शाएं। कुछ मापदंड गिरावट दिखा सकते हैं तो कुछ में सुधार दिखाई दे सकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी सभी क्षति मापदंडों पर विचार करते हैं और उसके बाद निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि क्या घरेलू उद्योग को पाटन के कारण क्षति का सामना करना पड़ रहा है अथवा नहीं।
58. प्राधिकारी ने क्षति मापदंडों की उद्देश्यपरक जांच की है, जिसमें हितवद्ध पक्षकारों द्वारा अपने अनुरोधों में प्रस्तुत किए गए तर्कों और तथ्यों को ध्यान में रखा गया है।

छ.1 पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

मांग का मूल्यांकन

59. संबद्ध वस्तुओं की मांग समान उत्पाद के भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्री को सभी देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के साथ शामिल करके निर्धारित की गई है। वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस से प्राप्त आयात संबंधी आंकड़ों पर भरोसा किया है कि प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि संबद्ध वस्तुओं की मांग में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है, जैसा कि नीचे तालिका से देखा जा सकता है:

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीजीआई वार्षिकीकृत
संबद्ध देशों से आयात	मी.ट.	7,201	10,506	11,945	13,799
यूरोपीय संघ	मी.ट.	1,373	1,500	2,387	1,572
वियतनाम	मी.ट.	5,828	9,006	9,558	12,227
अन्य देशों से आयात	मी.ट.	12,413	12,904	12,238	10,133
याचिकाकर्ताओं की घरेलू बिक्रियां	मी.ट.	***	***	***	***
अन्य उत्पादों की घरेलू बिक्रियां	मी.ट.	***	***	***	***
कुल मांग	मी.ट.	63,063	78,125	88,044	94,652

आयातों की मात्रा और संबद्ध देश का अंश

60. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना जरूरी है कि क्या पाटित आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई, जो भारत में खपत अथवा उत्पादन के संदर्भ में अथवा सापेक्ष संदर्भ इस प्रकार है:

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	पीओआई (वार्षिकी)
यूरोपीय संघ से आयात	मी.ट.	1,373	1,500	2,387	1,572
वियतनाम से आयात	मी.ट.	5,828	9,006	9,558	12,227
संबद्ध देशों से आयात	मी.ट.	7,201	10,506	11,945	13,799
कुल मांग	मी.ट.	63,063	78,125	88,044	94,652
घरेलू उद्योग के विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
भारतीय खपत के संबंध में संबद्ध आयात	%	***	***	***	***
घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में संबद्ध आयात	%	***	***	***	***

61. बाद के आंकड़ों के आधार पर प्राधिकारी यह नोट करते हैं:

- क. संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में वृद्धि वर्ष 2013-14 में 7,201 मी.टन से बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 13,799 मी. टन हुई है जो सापेक्ष संदर्भ में है।
- ख. घरेलू खपत/मांग के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है और जांच की अवधि के दौरान 15% के स्तर पर है।
- ग. भारत में घरेलू उत्पादन के संबंध में संबद्ध देश से आयातों में सापेक्ष संदर्भ में और जांच की अवधि में भारत में उत्पादन व खपत के संदर्भ में ***% (अनुमानित) वृद्धि हुई है।

62. इस प्रकार यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के आयात पूर्ण दृष्टि से तथा भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में बढ़े हैं।

छ.2. घरेलू उद्योग का आयातों पर कीमत संबंधी प्रभाव:

63. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में नियमावली के अनुबंध-II के पैरा - II में यह विनिर्दिष्ट है:

“पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या भारत में समग्र अर्थों में उत्पादन अथवा खपत के संबंध में पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। नियम 18 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण अत्यधिक ह्रास हुआ है अन्यथा कीमत वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।”

64. यह जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की पाटित आयात कीमत से महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा पर्याप्त मात्रा में गिरावट आई है अथवा कीमत वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा इतनी अधिक मात्रा में नहीं होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव से कीमत कटौती, कम कीमतों पर दबाव, यदि कोई हो, की जांच की गई है।

कीमत कटौती

65. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों की कटौती हो रही है, प्राधिकारी ने आयातों की पहुंच कीमत की तुलना घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से की है। इस संबंध में उत्पाद के पहुंच मूल्य और घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत के बीच, सभी छूटों और करों के निवल पर व्यापार के उसी स्तर पर तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण कारखानागत स्तर पर किया गया था। घरेलू कीमतें और कटौती का मार्जिन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
यूरोपीय संघ से पहुंच मूल्य	रू./मी.टन	2,48,804	2,41,413	2,02,685	1,83,424
वियतनाम से पहुंच मूल्य	रू./मी.टन	2,42,871	2,31,356	1,96,225	1,79,288
घरेलू बिक्री कीमत	रू./मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	96	83	80
यूरोपीय संघ से कीमत कटौती	रू./मी.टन	***	***	***	***
	%	***	***	***	***
	रेंज	0 -5	(5)- 0	0-5	0 -10
वियतनाम से कीमत कटौती	रू./मी.टन	***	***	***	***
	%	***	***	***	***
	रेंज	0 -10	0- 10	0 -10	5 -15

66. प्राधिकारी उपर्युक्त तालिका से यह नोट करते हैं कि कीमत कटौती हो रही है ।

कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

67. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों का ह्रास हो रहा है तथा क्या इन आयातों का प्रभाव काफी मात्रा तक कीमतों का न्यूनीकरण करने अथवा कीमते बढ़ने से रोकने के लिए है जो अन्यथा काफी मात्रा तक हुई होती, प्राधिकारी ने क्षति की अवधि में लागतों एवं कीमतों में परिवर्तनों पर विचार किया । यह स्थिति निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री लागत	रू./मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	100	86	81
घरेलू बिक्री कीमत	रू./मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	96	83	80
पहुंच मूल्य	रू./मी.टन	2,44,002	2,32,791	1,97,516	1,79,727
	सूचीबद्ध	100	95	85	91

68. यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ताओं की बिक्री लागत में क्षति की अवधि और जांच की अवधि में निरंतर गिरावट आई है । याचिकाकर्ताओं की बिक्री कीमत में भी लगभग उसी अनुपात में गिरावट आई है । बिक्री कीमत पूरी क्षति अवधि में बिक्री लागत के स्तर से नीचे रही है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं की बिक्री कीमत संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य की प्रवृत्ति पर बारीकी से चलती है, यद्यपि पहुंच मूल्य याचिकाकर्ताओं की बिक्री लागत से कम रहता है । इस प्रकार कीमत ह्रास सिद्ध है । यहां तक कि आंशिक कीमत न्यूनीकरण भी विद्यमान है ।

कम कीमत पर बिक्री

69. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई कम कीमत पर बिक्री की क्षति की भी जांच की है । इस उद्योग से घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित एनआईपी की तुलना आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत से की गई है । घरेलू उद्योग को भारित औसत एन आई पी की आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत से तुलना निम्नलिखित दर्शती है :

विवरण	इकाई	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
पहुंच मूल्य	रू./मी.टन	1,79,727
क्षतिरहित कीमत (एनआईपी)	रू./मी.टन	***
क्षति मार्जिन	रू./मी.टन	***
	अम.डॉ./मी. टन	***
	%	***
	रेंज	0-10

70. यह देखा जाता है कि संबद्ध देश से संबद्ध सामानों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित एन आई पी से काफी कम थी।

ज.3 घरेलू उद्योग के आर्थिक मानदंड

71. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। घरेलू उद्योग के निष्पादन की जांच से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति मापदंडों पर निम्नानुसार चर्चा की गई है।

ज.4. उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्री

72. उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन निम्नलिखित था :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षमता (संयंत्र)	मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	105	116	117
उत्पादन (संयंत्र)	मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	106	117	116
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	100	100	99
उत्पादन (पीयूसी)	मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	109	124	129
याचिकाकर्ताओं की घरेलू बिक्री	मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	109	122	129

73. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं की क्षमता और उत्पादन एक-दूसरे के अनुरूप बढ़े हैं। क्षमता उपयोग में आंशिक गिरावट आई है परंतु उसका विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, जिसमें क्षति की अवधि और जांच की अवधि में सुधार देखा गया है।

ज.5 लाभप्रदता

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
लाभ/ (हानि)	रू./लाख	(***)	(***)	(***)	(***)
	सूचीबद्ध	(100)	(978)	(1062)	(424)
लाभ/ (हानि)	रू./लाख	(***)	(***)	(***)	(***)
	सूचीबद्ध	(100)	(897)	(869)	(328)

74. प्राधिकारी उपर्युक्त तालिका से निम्नलिखित नोट करते हैं :

- क. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई है। घरेलू उद्योग को पूरी क्षति जांच अवधि के दौरान हानियां होती रही हैं।
- ख. घरेलू उद्योग की हानियों में पूर्व वर्षों की तुलना में जांच की अवधि (वार्षिकीकृत) में काफी गिरावट आई है परंतु वे आधार वर्ष में हानियों से अधिक रहीं।
- ग. ऐसा नहीं लगता कि घरेलू उद्योग ने अपनी बिक्री लागत वसूल की हो या उपयुक्त लाभ कमाया हो।

ज.6 नियोजित पूंजी पर आय

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
आरओसीई	%	***	***	***	***
	रेंज	5-10	0-5	0-5	0-5

75. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग पूरी क्षति जांच अवधि में नियोजित पूंजी पर पर्याप्त आय अर्जित करने में सक्षम नहीं रहा है। जांच की अवधि में नियोजित पूंजी पर आय आधार वर्ष से कम है।

ज.7 बाजार हिस्सा

76. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभावों की निम्नलिखित रूप में जांच की गई है :

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
कुल मांग	मी.ट.	63,063	78,125	88,044	94,652
बाजार हिस्सा					
याचिकाकर्ता	%	***	***	***	***
अन्य उत्पादक	%	***	***	***	***
भारतीय उत्पादकों का हिस्सा	%	***	***	***	***
यूरोपीय संघ से आयातों का हिस्सा	%	2.18%	1.92%	2.71%	1.64%
वियतनाम से आयातों का हिस्सा	%	9.24%	11.53%	10.86%	13.83%
अन्य देशों से आयातों का हिस्सा	%	19.68%	16.52%	13.90%	10.59%

77. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह पाते हैं कि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा भारत में संबद्ध सामानों की मांग बढ़ते रहने पर भी कम हुआ है। साथ ही, अन्य भारतीय उत्पादकों का बढ़ते हुए हिस्से की उपेक्षा नहीं की जा सकती और यह नोट किया जाता है कि कुल मिलाकर भारतीय उत्पादकों (घरेलू उद्योग और अन्य भारतीय उत्पादकों) के हिस्से में क्षति अवधि के दौरान ज्यादा परिवर्तन नहीं आया।

ज.8 मालसूची

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि
आदि स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	95	117	134
अंतिम स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	124	194	253
औसत मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	109	155	192

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मालसूची के स्तर में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

ज.9. घरेलू उद्योग की उत्पादकता

79. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के राजगार स्तर में वृद्धि हुई है जबकि प्रति कर्मचारी उत्पादकता में निरंतर गिरावट आई है।

विवरण	इकाई	2013-14	2014-15	2015-16	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	100	114	120
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट./ कर्मचारी	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	106	103	97

ज.10. पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

80. प्राधिकारी नोट करते हैं कि देश में इस उत्पाद की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए घरेलू उद्योग ने संयंत्र और मशीनरी में नए निवेश किए हैं।

ज.11 पाटन एवं पाटन मार्जिन का स्तर

81. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयात देश में पाटित कीमतों पर आ रहे हैं और प्रतिभागी उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में पाटन मार्जिन है।

ज.12. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

82. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से आयात भारतीय मांग के 15 प्रतिशत है और अन्य देशों से आयात भारतीय मांग के लगभग 11 प्रतिशत हैं। इन्हें मिलाकर यह नोट किया जाता है कि भारतीय बाजार के लगभग 70 प्रतिशत पर याचिकाकर्ताओं और अन्य भारतीय उत्पादकों सहित भारतीय उत्पादकों का नियंत्रण है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ताओं की कीमतें अंतः घरेलू प्रतिस्पर्धा तथा कुछ सीमा तक संबद्ध देशों सहित अन्य देशों से आयातों के कारण प्रभावित होंगी।

83. यह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और बिक्री कीमत से कम है।

84. प्राधिकारी को कच्ची सामग्री की कीमतों में गिरावट का भी संज्ञान है जिससे याचिकाकर्ताओं के लिए बिक्री लागत में गिरावट आई है और वे उसे घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला कारक मानते हैं।

85. इस प्रकार प्राधिकारी मानते हैं कि भारत में संबद्ध सामानों की घरेलू कीमतों को विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं। इन मानदंडों का प्रभाव कारणात्मकता के मल्यांकन के भाग के रूप में माना जाएगा।

ज.13 क्षति संबंधी समग्र विश्लेषण

86. घरेलू उद्योग के निष्पादन से संबंधित सूचना सहित रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के पाटित आयात न्यूनतम मात्रा से अधिक हैं और क्षति की अवधि में उनकी कीमतों में गिरावट आई है। उत्पाद के लिए मांग क्षति की अवधि में काफी बड़ी है। तथापि, घरेलू उद्योग उसी तरह पूंजी बनाने में सक्षम नहीं दिखाई देता। घरेलू उद्योग की लाभप्रदता प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई है और लगाई गई पूंजी पर आय इष्टतम से कम रही है। लाभप्रदता पूरी क्षति जांच अवधि में नकारात्मक रही है।

ज.14 कारणात्मक संपर्क और अन्य कारक

87. प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। घरेलू उद्योग को पाटन और वास्तविक क्षति के बीच कारणात्मक संपर्क की जांच निम्नलिखित रूप में की गई है :

(i) तीसरे देशों से आयात

88. संबद्ध देशों को छोड़कर दूसरे देशों से आयात मात्रा की दृष्टि से बहुत अधिक नहीं है। केवल कोरिया गणराज्य, मलेशिया और ताइवान से आयात न्यूनतम से अधिक है (संबद्ध देशों के अलावा)। इन देशों से सामानों के संबंध में प्राधिकारी ने हाल ही में निर्धारित किया है कि जांच की अवधि अप्रैल, 2015 से सितंबर, 2016 में पाटन के बावजूद इन देशों से पाटित आयात क्षतिरहित रहे हैं।

(ii) मांग में संकुचन

89. संबद्ध सामानों की मांग ने बढ़ती हुई प्रवृत्ति दर्शाई है। तदनुसार, मांग में गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकती।

(iii) व्यापार प्रतिबंधता परिपाटी और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

90. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक परिपाटी नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

(iv) प्रौद्योगिकी में विकास

91. संबंधित उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी में विकास को घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले कारक के रूप में नहीं माना जा सकता।

(v) खपत की पद्धति में परिवर्तन

92. घरेलू उद्योग उस किस्म के सामानों का उत्पादन कर रहा है जिनका भारत में आयात किया गया है। खपत की पद्धति में संभावित परिवर्तन वह कारक नहीं है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सके।

(vi) निर्यात निष्पादन

93. घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में संभावित कमी के कारण नहीं है। वस्तुतः यद्यपि, घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात में गिरावट आई है तथापि आंकड़ों का मूल्यांकन अकेले घरेलू बिक्री से संबंधित सूचना के आधार पर किया गया है। इस प्रकार, घरेलू बिक्री को क्षति को अलग रखा गया है और यथासंभव सीमा तक उसकी जांच की गई है।

(vii) अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन

94. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बिक्री किए जा रहे अन्य उत्पादों के निष्पादन से घरेलू उद्योग का निष्पादन प्रभावित नहीं हुआ है।

(viii) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

95. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि में प्रति कर्मचारी उत्पादकता में बहुत ही आंशिक गिरावट है और इसीलिए घरेलू उद्योग की उत्पादकता घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकती।

झ. क्षति मार्जिन की मात्रा

96. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत निर्धारित की है और पी सी एन वार विश्लेषण के आधार पर क्षति मार्जिन निर्धारित करने के लिए संबद्ध देश से संबद्ध आयातों के पहुंच मूल्य के साथ तुलना की है। क्षति मार्जिन निम्नलिखित रूप से निर्धारित किए गए हैं :

क्षति मार्जिन

देश	उत्पादक	निर्यातक	क्षति रहित कीमत अम.डॉ./ मी.टन	पहुंच मूल्य अम.डॉ./ मी.टन	क्षति मार्जिन अम.डॉ./ मी.टन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन (रेंज %)
वियतनाम	फार्मोसा इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन	1. लियांग हॉ टेक्नोलॉजी कं. लि. 2. बोस्का इंटरप्राइजेज लिमिटेड	***	***	***	***	10-20
वियतनाम	ह्योसंग डोंग नई	1. ह्योसंग इंटरनेशनल (एचके) लि., होंगकांग 2. रेन टोंग इंडस्ट्रियल लि., होंगकांग	***	***	(***)	(***)	(0-5)
वियतनाम	अन्य कोई	सभी कोई	***	***	***	***	30-35
यूरोपीय यूनियन	समस्त	समस्त	***	***	***	***	0-10%

झ. कारणात्मक संबंध को स्थापित करने वाले कारक

97. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों की और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने तथा रिकॉर्ड पर उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के पश्चात, प्राधिकारी ने नोट किया है कि :-
- क) संबद्ध देशों से भारत को विचाराधीन उत्पाद समान मूल्य से निम्न पर निर्यातित किया गया है।
- ख) घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से ऐसे पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण क्षति का सामना करना पड़ा है।
98. जांच की अवधि के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इकट्ठे किए गए और प्राधिकारी द्वारा विश्लेषण किए गए जांच के अनिवार्य तथ्यों को हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट किया गया ताकि वे इन तथ्यों पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सकें।

ञ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटीकरण विवरण के पश्चात प्रस्तुत किए गए निवेदन

99. हितबद्ध पक्षकारों से प्रकटीकरण के पश्चात निवेदन प्राप्त किए गए हैं। उनमें उठाए गए मुद्दों में से अधिकतर को पहले ही जांच के दौरान उठाया जा चुका है और उनका उचित रूप से उल्लेख भी किया गया है। अतिरिक्त निवेदनों का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है:-

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

- i) घरेलू उद्योग बी सी एफ यार्न को शामिल न करने के लिए सहमत है क्योंकि यह एक उच्च टेन्सिटी (दृढ़) यार्न है और वस्त्र अनुप्रयोज्यों के लिए इसका प्रयोग नहीं किया जाता।
- ii) जहां तक द्वितीय ग्रेड एन टी एफ का संबंध है, इस बारे में निम्नानुसार निवेदन किया गया है:-
- क. निर्यातक के उत्तर और निवेदनों से यह समझने का कोई तरीका नहीं है कि जब एक्काफिल द्वारा एन टी एफ का उल्लेख किया जाता है तो उसका तात्पर्य क्या होता है। निवेदनों से केवल यह प्रतीत होता है कि निर्यातक उत्पाद की किसी गुणवत्ता का उल्लेख कर रहा है।
- ख. चूंकि फैब्रिक, फाइबर और उच्च टेन्सिटी यार्न विचाराधीन उत्पाद की सीमा के भीतर नहीं आते, घरेलू उद्योग का उससे संबंधित बहिष्करण के संबंध में कोई पर प्रारक्षण नहीं है। हालांकि, यदि कोई यार्न, जो

- उच्च टेन्सिटी यार्न नहीं है, के बहिष्करण का प्रस्ताव किया जाता है तो यह न्याय संगत नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग इस प्रकार के यार्नों का उत्पादन और बिक्री कर रहा है।
- ग. रिकॉर्ड पर यह दर्शाने के लिए कोई सामग्री उपलब्ध नहीं है कि घरेलू उद्योग एन टी एफ उत्पाद का उत्पादन और बिक्री नहीं कर रहा है।
- घ. द्वितीय ग्रेड यार्न अनिवार्य रूप से सभी विनिर्माण प्रतिष्ठानों में उत्पादित किया जाता है और घरेलू उद्योग सभी ग्रेड और गुणवत्ताओं के उत्पादों की बिक्री करता है।
- ङ. द्वितीय श्रेणी के एन टी एफ को शामिल न किए जाने के संबंध में कभी कोई स्पष्टीकरण अथवा टिप्पणियां नहीं मांगी गई है। चाहे इस बात की संकल्पना की गई हो, किंतु यह स्वीकार नहीं किया गया कि घरेलू उद्योग द्वितीय ग्रेड एन टी एफ का उत्पादन कर रहा है, इसे बाहर नहीं रखा जा सकता क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद कभी भी एक्वाफिल द्वारा निर्यातित समान वस्तु के समकक्ष नहीं हो सकता।
- च. बहुत से जांच परिणामों में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने धारित किया है कि गुणवत्ता में अंतर विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के क्षेत्र को निर्धारित करने के लिए नगण्य हैं। चीन जन. गण. से लौह, मिश्र धातु अथवा गैर मिश्र धातु के सीम लैस ट्यूब, पाइप्स और होलो प्रोफाइल्स, चीन जन. गण., ताईवान और कोरिया गणराज्य से फ्लैश डाइक्स, चीन जन. गण., बेलारूस, यूक्रेन, ई. यू. और पेरू से एक्रेलिक फाइबर, अन्यो के मध्य जापान से ई पी डी एम के मामलों में जांच परिणामों में रिलायंस को स्थापित किया है।
- छ. यदि द्वितीय श्रेणी के एन टी एफ को शामिल नहीं किया जाता है तो शुल्क निष्प्रभावी हो जाएगा क्योंकि निर्यातक सभी निर्यातों को द्वितीय श्रेणी का घोषित कर शुल्क देने से बचेंगे। जैसा कि हुआवी टेक्नोलॉजी लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी मामले में अधिकरण द्वारा नोट किया गया है, विचाराधीन उत्पाद को इस प्रकार सम्मिलित किया जाना चाहिए कि लागू किए गए शुल्क के प्रयोजन और अभिप्राय को प्राप्त किया जा सके।
- iii) याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है और ए वाई एम द्वारा किए गए आयात अत्यधिक निम्न है।
- iv) सामान्य मूल्य के संबंध में अपर्याप्त प्रकटीकरण किया गया है। यदि इसे घरेलू उद्योग के आंकड़ों के आधार पर परिकलित किया गया है तो इसे प्रकट किया जाना चाहिए।
- v) सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में संगत सूचना के अभाव में, दायर किए गए उत्तर को अस्वीकृत किया जाना चाहिए और पृथक पाटन की अनुमति नहीं की जानी चाहिए।
- vi) निर्यातक ने केवल थोड़े से पी सी एन की बिक्री की है। निर्यातक द्वारा दिए गए आंकड़े किसी भी प्रकार से पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए प्रासंगिक नहीं हैं।
- vii) ऐसी आशंका है कि उत्पादक ने जान-बूझकर निर्दिष्ट प्राधिकारी को चयनात्मक सूचना दी है।
- viii) घरेलू उद्योग को क्षति की जांच करते समय, यह विचार किए जाने की जरूरत है कि संपूर्ण क्षति अवधि ऐसी अवधि का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें घरेलू उद्योग पाटित आयातों के कारण महत्वपूर्ण क्षति का सामना कर रहा था।
- ix) 2011-12 के बीच और जांच अवधि में आयातों की मात्रा लगभग 12 गुणा बढ़ी है। इसके अतिरिक्त, उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में तेजी से वृद्धि हुई है।
- x) सकारात्मक कीमत कटौती हुई है और आयातों ने घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास और न्यूनीकरण किया है।
- xi) जबकि घरेलू उद्योग अपने उत्पादन और बिक्रियों में सुधार करने में सक्षम था, किंतु यह लगातार हानियों की कीमत पर स्थित था।
- xii) घरेलू उद्योग की बिक्रियों में केवल 29% की वृद्धि हुई है, जो मांग में वृद्धि के अनुरूप नहीं था, जिसमें 105% की वृद्धि हुई थी। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि हो रही थी किंतु वह वित्तीय हानियां झेल रहा था।
- xiii) घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तुओं के पाटन के कारण पूरी अवधि के दौरान वित्तीय हानियों का सामना करना पड़ा। घरेलू उद्योग ने नकद हानियों को वहन किया और वह अपनी नियोजित पूंजी पर पर्याप्त आय अर्जित करने में सक्षम नहीं था।
- xiv) जहां, भारतीय उद्योग समग्र रूप में अपने बाजार हिस्से में वृद्धि करने में समर्थ है, वहीं इस प्रक्रिया में इसे हानियों का सामना करना पड़ा है।
- xv) कुछ अन्य उत्पादक पहले संबद्ध वस्तुओं के आयातक थे, जिन्होंने बाद में विनिर्माण सुविधाएं स्थापित कीं। परिणामस्वरूप, अन्य उत्पादकों के बाजार हिस्से ने वृद्धि दर्शाई।

- xvi) जहां कीमतों में गिरावट और पारस्परिक प्रतिस्पर्धा घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकती हैं, वहीं एकमात्र कारक जो घरेलू उद्योग को कीमत से कम पर बिक्री करने के लिए विवश कर सकता है, वह आयातों की पहुंच कीमत है। भारतीय उत्पादकों की क्षमता को ध्यान में रखते हुए, यह साक्ष्य है कि घरेलू बाजार में कोई अतिरिक्त आपूर्ति नहीं की गई है, जो घरेलू उत्पादकों के बीच गलाकाट प्रतिस्पर्धा का कारण बने।
- xvii) घरेलू उद्योग द्वारा सामना की जा रही क्षति और पाटित आयातों के बीच स्पष्ट कारणात्मक है।
- xviii) कानूनी अनिवार्यताओं और कानून के तहत अनिवार्य आदेशों के बावजूद क्षति रहित कीमत का अपर्याप्त प्रकटीकरण है, क्षति रहित कीमत की संपूर्ण संगणना उपलब्ध नहीं कराई गई है।
- xix) क्षति रहित कीमत की संगणना के लिए संसाधनों के निम्नतम उपयोग पर विचार करना उचित नहीं है। अनुबंध III के पैरा (3) के अनुसरण में, केवल जांच अवधि के उत्पादन की लागत पर विचार किया जाना अपेक्षित है। निम्नतम उपयोग के संबंध में अनुबंध III के पैरा (4) के प्रावधानों पर केवल तभी विचार किया जा सकता है यदि संसाधनों के उपयोग में कोई और अकुशलता न हो, न ही जांच किसी को अकुशलता को प्रकट करती हो।
- xx) चाहे प्रचलित कार्य पद्धति द्वारा क्षति रहित कीमत को परिकलित किया गया हो, प्रकट की गई क्षति रहित कीमत काफी कम है। कुछ विशेष समायोजन अथवा कटौतियां उन प्रावधानों से हटकर किए गए प्रतीत होते हैं जिनकी अनुबंध III में इसके लिए व्यवस्था की गई है।
- xxi) पर्याप्त प्रकटीकरण के अभाव में, घरेलू उद्योग अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने में बाधित है क्योंकि यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है कि अतिरिक्त कीमत के निर्धारण में क्या समायोजन किए गए हैं।
- xxii) गुजरात फ्लोरो केमिकल्स लिमिटेड बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले में निर्णय के अनुसार, अधिकरण ने धारित किया कि कैप्टिव रूप से उत्पादित इनपुट के लिए नियोजित पूंजी पर 22% वापसी की अनुमति होनी चाहिए।
- xxiii) निम्न के बिना व्ययों और परिसंपत्तियों / देयताओं के आवंटन अथवा संविभाजन के आधार में परिवर्तन करना उचित नहीं है (क) घरेलू उद्योग को ऐसे आशोधन के आधार को प्रकट किए बिना, (ख) आशोधन की उपयुक्तता पर टिप्पणी करने के लिए घरेलू उद्योग को अवसर दिए बिना, (ग) घरेलू उद्योग को उसकी कार्यप्रणाली के तरीके की उपयुक्तता को स्थापित करने की अनुमति दिए बिना।
- xxiv) यह स्वभाविक न्याय का स्पष्ट उल्लंघन है क्योंकि घरेलू उद्योग को उन कारणों के संबंध में अवगत भी नहीं किया गया है कि लागत और आय में क्यों कमी की गई है और क्षति रहित कीमत के आधार का निर्माण करने वाले आंकड़ों का निर्धारण कैसे किया गया है।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

100. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटीकरण विवरण पर निम्नलिखित टिप्पणियां प्रस्तुत की गई हैं:-

- i) प्रकटीकरण विवरण में प्राधिकारी द्वारा यह सही रूप में निष्कर्ष निकाला गया है कि ह्योसंग सॉन्ग डांग नाई के लिए पाटन और क्षति मार्जिन, दोनों न्यूनतम हैं।
- ii) एक्वाफिल द्वारा विनिर्मित केवल दो उत्पाद बी सी एफ और द्वितीय ग्रेड का एन टी एफ विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से बाहर हैं।
- iii) प्रकटीकरण विवरण को जारी करने के स्तर पर असहयोग के कारण जे सी टी लिमिटेड को शामिल ना किया जाना गलत है और पाटन रोधी करार के अनुच्छेद 5.4 और पाटन रोधी नियमावली के नियम 4(3) के अनुसरण में नहीं है। वास्तव में, प्राधिकारी आवेदकों के लिए प्रतिभागिता केस सुनिश्चित मानकों हेतु आग्रह करने के लिए हकदार है।
- iv) चीन जन. गण., चीनी ताइपे, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और कोरिया जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नायलॉन फिलामेंट यार्न के आयातों पर अधिरोपित पाटन रोधी शुल्क की हाल ही में समाप्त निर्णायक समीक्षा के अंतिम जांच परिणाम 15/17/2016 – डी जी ए डी दिनांक 5 जनवरी, 2018 और वर्तमान जांच के संबंध में प्रकटीकरण विवरण 14/33/2016 – डी जी ए डी दिनांक 23 जुलाई, 2018 में बताए गए तथ्यों का एक तुलनात्मक विश्लेषण सुझाव देता है कि दोनों जांचों में सभी मानदंड लगभग समान हैं। तदनुसार, समाप्त की गई जांच में उल्लिखित तर्कों के आधार पर वर्तमान जांच को भी समाप्त किया जाना चाहिए।
- v) 2013 से 2017 तक संबद्ध देशों से आयातों की वृद्धि का कारण पाटन नहीं है बल्कि अनुप्रवाह उद्योग के विकास के कारण भारतीय बाजार में मांगों की वृद्धि है।

- vi) संबद्ध देशों से आयातों के बावजूद, पी ओ आई में घरेलू उद्योग की बिक्री में *** मी.टन (2013-14) से *** मी.टन की उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। केवल पी ओ आई के दौरान, कुल मांग में वियतनाम से आयातों के हिस्से में 12% (2013-14) से मामूली वृद्धि होकर यह 14% हो गई।
- vii) 2013-14 से पी ओ आई तक संबद्ध देशों और घरेलू उद्योग की कीमत की प्रवृत्ति में उतार-चढ़ाव आता रहा है। पहुंच कीमत और घरेलू बिक्री कीमत दोनों में साथ-साथ कमी आई है। यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती। याचिकाकर्ता सहमत हैं कि इस दौरान कोई कीमत वृद्धि नहीं हुई है तथा कीमत में हास भी नहीं हुआ है।
- viii) क्षति अवधि तथा पी ओ आई के दौरान, याचिकाकर्ताओं ने प्रत्येक वर्ष अपनी क्षमता में वृद्धि की है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में भी वृद्धि हुई है। यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग में सुधार हो रहा है।
- ix) याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तुओं का निर्यात भी कर रहा है। तथापि, याचिकाकर्ता के निर्यात निष्पादन में पी ओ आई के दौरान, कमी आई है। निर्यातों में गिरावट घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सकती है।
- x) घरेलू उद्योग के समग्र निष्पादन में सुधार हुआ है। प्रकटीकरण विवरण के अनुसार, आधार वर्ष की तुलना में पी ओ आई के दौरान घरेलू बिक्रियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- xi) पी ओ आई के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। यह गिरावट आयातों में वृद्धि के कारण नहीं है बल्कि अन्य भारतीय उत्पादकों के हिस्से में वृद्धि के कारण है। पी ओ आई के दौरान, अन्य भारतीय उत्पादकों का बाजार हिस्सा महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा है। इसके विपरीत, संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा 2013-14 में 12% से पी ओ आई के दौरान 14% पर लगभग समान बना रहा है। इस प्रकार, याचिकाकर्ताओं को क्षति और इसके बाजार हिस्से में गिरावट संबद्ध देशों से आयातों के कारण नहीं है बल्कि इस तथ्य के कारण है कि अन्य भारतीय उत्पादक याचिकाकर्ताओं के बाजार हिस्से को अधिग्रहित कर रहे हैं।
- xii) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में सुधार हुआ है। आधार वर्ष 2013-14 की तुलना में पी ओ आई के दौरान प्रति यूनिट हानियां 100 से कम होकर 80 रह गई। नकद लाभ में सुधार होकर यह 2013-14 के दौरान (100) से पी ओ आई में (77) हो गया। जबकि, ब्याज पूर्व लाभ और कर ने असामान्य प्रवृत्ति दर्शायी है।
- xiii) घरेलू उद्योग की नियोजित पूंजी 2013-14 के दौरान 100 से सुधार होकर पी ओ आई 144 हो गई। 2013-14 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर वापसी लगभग समान बनी रही।
- xiv) प्रकटीकरण विवरण में दावा किए गए आयात संबंधी आंकड़े समान विचाराधीन उत्पाद के लिए चीन जन.गण., चीनी ताइपे, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और कोरिया जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नायलॉन फिलामेंट यार्न के आयातों पर लागू पाटन रोधी शुल्क की अंतिम जांच समीक्षा के अंतिम जांच परिणाम में दिए गए आयात संबंधी आंकड़ों से मेल नहीं खाते।
- xv) महा निदेशालय द्वारा निर्धारित की गई क्षति रहित कीमत अत्यधिक मुद्रास्फीतिक है। उन्होंने आगे कहा है कि 22% आर ओ सी का आधार वर्ष 1987 में निर्धारित किया गया था जब ब्याज दर और कॉरपोरेट कर जैसे मानदंड पृथक - पृथक थे, उन्हें 30 वर्ष पश्चात वर्ष 2018 में उचित नहीं माना जा सकता। 1987 में ब्याज दर लगभग 18% थी और निगमित कर 40% था। अब दोनों, ब्याज दर (लगभग 10%) और निगमित कर (30%) कम हो गए हैं। इसलिए, 22% आर ओ सी ई लागू करने के द्वारा, डी जी टी आर घरेलू उद्योग को अनुचित संरक्षण दे रहा है।
- xvi) प्राधिकारी को बी सी एफ तथा द्वितीय ग्रेड एन टी एफ उत्पाद शामिल न किए जाने को परिभाषित करना चाहिए और यह सुनिश्चित करने के लिए पी यू सी से बाहर किए जा रहे उत्पादों के विशेषताओं और विवरण को विस्तार से बताना चाहिए कि बहिष्करण के सीमा शुल्क प्रवर्तन को उचित रूप लागू किया जा सकता है।
- xvii) प्राधिकारी को कुल भारतीय उत्पादन के भाग के रूप में मै. जे सी टी लि. की उत्पादन मात्रा को शामिल करना चाहिए क्योंकि उनके सहयोग या असहयोग के बावजूद, पक्षकार का उत्पादन भारतीय घरेलू उत्पादन का भाग बना रहेगा। यह अस्पष्ट है कि प्राधिकारी ने कुल भारतीय उत्पादन पर पहुंचने से पहले मै. जे सी टी लि. की उत्पादन मात्रा को कैसे निरूपित किया है, क्योंकि यह पहले ही नोट किया गया है कि मै. ए वाई एम सिटैक्स की आयात मात्रा उल्लेखनीय नहीं है।
- xviii) जहां तक प्राधिकारी ने तर्क दिया है कि मै. ए वाई एम सिटैक्स, के शामिल न किए जाने के पश्चात याचिकाकर्ता क्षति आकलन के संबंध में अनुचित लाभ प्राप्त करेंगे क्योंकि मै. ए वाई एम सिटैक्स सर्वाधिक

कार्यकुशल उत्पादक हैं, प्राधिकारी को मैं, जे सी टी लि. और मै. ए वाई एम सिंटेक्स लि. के बहिष्कार के पश्चात याचिकाकर्ताओं के दावे का पुनर्आकलन करना चाहिए।

- xix) प्राधिकारी को एक साथ आकलन किए जाने पर पात्र घरेलू उद्योग लेखों के प्रतिशतांक के संबंधित आंकड़े उपलब्ध कराने चाहिए। प्राधिकारी को याचिकाकर्ताओं के संचयी आंकड़े को प्रकट करना चाहिए। भारतीय उत्पादन में याचिकाकर्ताओं की शेरधारिता को प्राधिकारी द्वारा गोपनीय नहीं माना जाना चाहिए जब ऐसी गोपनीयता की मांग नहीं की गई हो अथवा याचिकाकर्ताओं द्वारा अपनी याचिका में स्वयं इसे अनुरक्षित न किया गया हो।
- xx) जब घरेलू उद्योग भारतीय उत्पादन के 50% से कम हिस्से को धारित करता हो, वहां प्राधिकारी को अनिवार्य रूप से जांच को समाप्त कर देना चाहिए, क्योंकि घरेलू उत्पादकों का ऐसा निम्न प्रतिनिधित्व पर्याप्त नहीं है और इसे पात्र “घरेलू उद्योग” के निर्धारण के प्रयोजनार्थ “प्रमुख समानुपात” नहीं समझा जा सकता।
- xxi) हितबद्ध पक्षकार घरेलू उद्योग के भाग के रूप में मै. सेंचुरी एंका के शामिल किए जाने के अनुरोध को खारिज किए जाने के संबंध में प्राधिकारी के तर्क और निष्कर्ष से सहमत है।
- xxii) प्राधिकारी ने घरेलू खपत और उत्पादन, संचयी आधार पर भारतीय उत्पादकों के उत्पादन और बिक्रियों, घरेलू उद्योग के दावे और यथा निर्धारित घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्रियों के प्रतिशतांक के रूप में आयातों के हिस्से से संबंधित सूचना के संपादन द्वारा अत्यधिक गोपनीयता को लागू किया है। याचिकाकर्ताओं ने पूरी जांच के दौरान ऐसी सूचना को स्वयं उपलब्ध कराया है। प्राधिकारी ऐसे आंकड़ों के संबंध में गोपनीयता का दावा नहीं कर सकता जिसके लिए याचिकाकर्ताओं ने स्वयं गोपनीयता का दावा नहीं किया है।
- xxiii) प्राधिकारी को क्षति आकलन और वियतनाम से अपाटित आयातों और बी सी एफ के द्वितीय ग्रेड एन टी एफ को शामिल न किए जाने के पश्चात आयातों की मात्रा से संबंधित आंकड़ों के संशोधन द्वारा मात्रा और कीमत प्रभाव का आकलन तैयार करना चाहिए।
- xxiv) प्राधिकारी को एन एफ वाई जांच निष्कर्ष में इसके संबंध में जांच परिणामों को ध्यान में रखते हुए कीमत प्रभाव का भी पुनर्आकलन करना चाहिए। एन एफ वाई जांच निष्कर्ष में संबद्ध आयातों की कीमत कटौती वर्तमान जांच में संबद्ध आयातों की कीमत कटौती की तुलना में काफी अधिक थी और फिर भी प्राधिकारी ने पाया कि उस मामले में घरेलू उद्योग किसी क्षति का सामना नहीं कर रहा था और वास्तव में इसके आर्थिक मानदंड मजबूत थे।
- xxv) कीमत से कम कीमत पर बिक्री की जांच कीमत प्रभाव आकलन का भाग नहीं हो सकती, बल्कि यह क्षति मार्जिन की संगणना है। निरमा लिमिटेड बनाम भारत संघ [विशेष सिविल आवेदन संख्या 16426/ 2016 और 16 427/ 2016] में विधिशास्त्र से उद्धरित किया गया।
- xxvi) वर्तमान मामले में कीमत कटौती और कीमत से कम कीमत पर बिक्री की तुलना के आधार पर, यह साक्ष्य है कि याचिकाकर्ता पहले ही अपनी क्षति रहित कीमत की तुलना में उच्च कीमत पर बिक्री कर रहे हैं, जो दर्शाता है कि याचिकाकर्ताओं को किसी क्षति का सामना नहीं करना पड़ा। रूस और ईरान से अमोनियम नाइट्रेट (2004) और यूरोपीय संघ से एक्स-रे बैगेज इंस्पेक्शन मल्टी एनर्जी सिस्टम (एक्स बी आई एस) में विधिशास्त्र से उद्धरण दिया गया था।
- xxvii) प्राधिकारी को उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्रियों से संबंधित आर्थिक मानदंडों पर प्रभाव का पुनर्आकलन करना चाहिए क्योंकि याचिकाकर्ताओं की क्षमता में 2013-14 से 2015-16 की क्षति अवधि में लगातार वृद्धि हुई है, इसके अतिरिक्त, समय की अल्प अवधि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अब वृद्धि अवधि और पी ओ आई के दौरान याचिकाकर्ताओं के निर्यात निष्पादन में गिरावट आई है और इसलिए इसने इसकी क्षमता उपयोग को प्रभावित किया है।
- xxviii) प्राधिकारी को लाभप्रदता से संबंधित आर्थिक मानदंडों पर प्रभाव का पुनर्आकलन करना चाहिए क्योंकि याचिकाकर्ताओं ने पूरी क्षति जांच अवधि के दौरान हानि/क्षति का सामना किया है। पी ओ आई (वा.) में घरेलू उद्योग की हानियों में उल्लेखनीय गिरावट आई है। घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई हानियों और क्षति अवधि में उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि के बीच कोई संबंध नहीं है।
- xxix) वर्ष 2013-14 और 2014-15 में भी याचिकाकर्ताओं को हानि झेलनी पड़ी है जब संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा काफी कम थी घरेलू उद्योग को और पाटन रोधी शुल्कों के माध्यम से अन्य देशों जैसे चीन,

मलेशिया, इंडोनेशिया, ताईवान और थाईलैंड से आयातों द्वारा भी सुरक्षित किया गया था। इसलिए, संबद्ध स्रोतों से निम्न आयातों सहित संरक्षित अवधि में याचिकाकर्ताओं की हानियां याचिकाकर्ताओं द्वारा सामना की जा रही हानियों के स्रोतों के बारे में गंभीर प्रश्न उठाती हैं और निर्धारित करती हैं कि याचिकाकर्ताओं की निम्न लाभप्रदता याचिकाकर्ताओं की कुछ विशिष्ट अंतर्निहित विसंगतियों के कारण है।

- xxx) घरेलू उद्योग की आर ओ सी ई में गिरावट क्षति अवधि में पी यू सी की बिक्रियों में वृद्धि और उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि के असंगत है। घरेलू उद्योग ने नियोजित पूंजी में वृद्धि लागू करते हुए संयंत्र और मशीनरी में नए निवेश किए थे। चूंकि, घरेलू उद्योग की नियोजित पूंजी में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है, इसका आर ओ सी ई क्षति अवधि में कमी के लिए आबद्ध है।
- xxxii) प्राधिकारी को पूंजी निवेशों को जुटाने की क्षमता से संबंधित आर्थिक पैरामीटरों पर पड़ने वाले प्रभाव का पुनर्आकलन करना चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के लिए बढ़ती हुई मांग को देखते हुए संयंत्र और मशीनरी में निवेश किए हैं। घरेलू उद्योग बढ़ी हुई मांग के आधार पर नए पूंजी निवेश करने में सक्षम है जो दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को इससे वित्तीय और प्रचालनात्मक रूप से लाभ की संभावना है।
- xxxiii) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारकों से संबंधित प्राधिकारी का आकलन उचित है जहां तक यह विचार किया जाता है कि संबद्ध आयात भारतीय मांग का केवल 15% धारित करते हैं जबकि भारतीय उत्पादक इसका लगभग 70% नियंत्रित करते हैं और इसलिए यह संभव है कि याचिकाकर्ता पारस्परिक प्रतिस्पर्धा तथा साथ ही अन्य देशों से आयातों द्वारा प्रभावित हैं। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि कच्ची सामग्री की कीमतों में गिरावट आई है जो याचिकाकर्ताओं के लिए बिक्रियों की लागत में कमी का कारण है और तदनुसार याचिकाकर्ताओं की बिक्री कीमतों को भी प्रभावित करती है। हालांकि, प्राधिकारी को अन्य विभिन्न पैरामीटरों के प्रभाव का आकलन भी करना चाहिए जैसे याचिकाकर्ताओं द्वारा अपनाई गई बढ़ी हुई क्षमता की लागतें और परिणामस्वरूप उच्च निर्धारित लागतें, याचिकाकर्ताओं द्वारा उनकी वार्षिक रिपोर्टों में स्थापित किए गए विभिन्न कारक जैसे अस्थिर कच्ची सामग्री की कीमतें, अन्य घरेलू उत्पादकों के साथ पारस्परिक प्रतिस्पर्धा, घरेलू बाजार में अधिक क्षमता, मुक्त व्यापार करार के परिणाम के रूप में एशियन (ASEAN) देशों से सस्ते आयात (पाटन नहीं), निर्यात बाजार की हानि और खराब निर्यात निष्पादन (विशेष रूप से टर्की के संबंध में) विमुद्रीकरण, मलेशिया, ताईवान और थाईलैंड से कम कीमत पर आयात और खराब गुणवत्ता के कारण याचिकाकर्ता के माल की कम मांग और प्रथम ग्रेड सामग्री के रूप में असमान सामग्री की बिक्रियां (असमान पैकेज भारांश)।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- इस दावे के संबंध में कि क्षति रहित कीमत (एन आई टी) में भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध III में निर्धारित सीमा से अधिक समायोजन किये गये प्रतीत होते हैं, यह नोट किया जाता है कि एन आई टी का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध III में निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार किया गया है।
- हितवद्ध पक्षकारों के स्तर के संबंध में की कीमत कटौती कम कीमत पर बिक्री से अधिक है तथा इसीलिए बिक्री कीमत क्षतिरहित से अधिक है, यह नोट किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान उत्पादित और बेचे गये विचाराधीन उत्पाद के पी सी एन में अंतर के कारण यह तुलना उचित नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद की बिक्री कीमत जांच की अवधि के दौरान ***रुपए प्रति मी. टन जो अमरीकी डॉलर में परिवर्तित किये जाने पर ***रुपए प्रति मी. टन होगी जबकि वियतनाम, जहां से कीमत कटौती अधिक है, से आयातित विचाराधीन उत्पाद की भारित औसत एन आई टी डॉलर में ***अमरीकी डॉलर प्रति मी. टन है।
- घरेलू उद्योग के आधार के संबंध में उठाये गये विभिन्न मुद्दों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि इस मुद्दे पर इस अधिसूचना में पहले ही पर्याप्त रूप से कार्यवाही कर दी गई है। यह नोट किया जाता है कि तथाकथित रूप से सभी अपात्र याचिकाकर्ता (याचिकाकर्ताओं) को अलग करने के बाद भी शेष याचिकाकर्ताओं का हिस्सा पात्र घरेलू उद्योग बनने के लिए सांविधिक आवश्यकता से अधिक है। भारतीय उत्पादन में मैसर्स जे सी टी लिमि. को छोड़कर घरेलू उद्योग का हिस्सा 25 प्रतिशत की आवश्यकता के विरुद्ध लगभग 40 प्रतिशत है। याचिका में कोई विरोध नहीं है। अतः याचिकाकर्ता भारतीय पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) के अनुसार घरेलू उद्योग के योग्य हैं। भारतीय पाटनरोधी कानूनों में ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है कि भारतीय उत्पादन में याचिकाकर्ताओं का हिस्सा 50 प्रतिशत से अधिक होना चाहिए।

- iv. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादकों के सहयोग अथवा असहयोग को ध्यान में न रखते हुए उन सभी की उत्पादन मात्रा को कुल भारतीय उत्पादन के भाग के रूप में लिया गया है।
- v. हितबद्ध पक्षकारों के इस दावे के संबंध में कि वर्तमान पाटनरोधी जांच नायलॉन फिलामेंट यार्न के लिए की गई पूर्व की निर्णायक समीक्षा (15/17/2016 – डी जी ए डी) के अनुरूप रद्द की जानी चाहिए क्योंकि दोनों जांचों में सभी मानदंड लगभग समान हैं, यह नोट किया जाता है कि निर्णायक समीक्षा जांच मोनो और मल्टी फिलामेंट यार्न दोनों के संबंध में थी जबकि वर्तमान जांच केवल मल्टी फिलामेंट यार्न के संबंध में है जिसमें निर्णायक समीक्षा जांच में भी हानियां नोट की गई थी। दोनों जांचों के संबद्ध देश भी अलग अलग हैं।
- vi. इस दावे के संबंध में कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट अन्य उत्पादकों के बाजार हिस्से में वृद्धि के कारण है। यह नोट किया जाता है कि इस संबंध में हितबद्ध पक्षकार द्वारा दिये गये आंकड़े पूरी तरह सही नहीं हैं। यह भी नोट किया जाता है कि वियतनाम से विचाराधीन उत्पाद के आयात कुल मांग के 9.24 प्रतिशत से बढ़कर 13.83 प्रतिशत हो गये हैं।
- vii. हितबद्ध पक्षकारों के इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता तथा नियोजित पूंजी पर उसी आय में क्षति की अवधि में सुधार हुआ है। यह नोट किया जाता है कि पूरी क्षति अवधि में लाभप्रदता तथा जांच की अवधि के दौरान हानियां नकारात्मक क्षेत्र में रहीं हैं। यद्यपि, पूर्व वर्ष की तुलना में कम हुई है, आधार वर्ष के दौरान हानियों से लगभग चार गुणा रही है। नियोजित पूंजी पर आय भी कुछ वर्षों में निदेशालय द्वारा अनुमत 22 प्रतिशत की तुलना में ***प्रतिशत के इष्टमतर से कम पर हैं।
- viii. इस तर्क के संबंध में कि प्रकटन विवरण में दिये गये आयात आंकड़े उसी विचाराधीन उत्पाद के लिये चीन जन. गण., चीनी ताईपेई, मलेशिया, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड और कोरिया गणराज्य के मूल के अथवा वहां से निर्यातित नायलॉन फिलामेंट यार्न के आयातों पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा जांच के अंतिम जांच परिणाम में दिये गये आयात आंकड़ों से मेल नहीं खाते, प्राधिकारी नोट करते हैं कि दोनों जांचों के तहत संबद्ध देश और विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र भिन्न हैं और इसीलिए आयात आंकड़े मेल नहीं खा सकते।
- ix. इस दावे के संबंध में कि 22 प्रतिशत की दर से नियोजित पूंजी पर अधिक आय क्षति रहित कीमत निर्धारित करने के लिए अनुमति दी गई है, यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने सभी जांचों में 22 प्रतिशत की दर पर नियोजित पूंजी पर आय निरंतर दी है तथा इस मामले में उस सतत् परिपाटी से भिन्न नहीं है।
- x. घरेलू उद्योग ने यह अध्यावेदन किया है कि यह दर्शाने के लिए रिकार्ड में कुछ भी नहीं है कि घरेलू उद्योग एन टी एफ यार्न का उत्पादन का और बिक्री नहीं कर रहा है तथा सभी विनिर्माण स्थापनाओं में दोयम दर्जे के यार्न का अनिवार्य रूप से उत्पादन किया जाता है तथा घरेलू उद्योग ने सभी ग्रेडों और गुणवत्ताओं के उत्पाद बेचे हैं। घरेलू उद्योग ने यह आशंका व्यक्त की है कि यदि दोयम दर्जे के एन टी एफ को अलग किया जाता है तो शुल्क अप्रभावी होगा क्योंकि निर्यातक सभी निर्यातों को दोयम दर्जे का घोषित कर शुल्क की प्रवंचना करेंगे। दोयम दर्जे के एन टी एफ (नायलॉन टेक्सटाइल फाइबर) यार्न को हटाये जाने की स्थिति में शुल्क की प्रवंचना की संभावना के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाई गई चिंता को नोट कर लिया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ के निर्यातक एन टी एफ के दोयम दर्जे की कोई भिन्न विशेषता अथवा तकनीकी विशेषताएं देने में सक्षम नहीं रहे हैं जो कि उसे विचाराधीन उत्पाद से भिन्न बता सके। यह भी नोट किया जाता है कि यूरोपीय संघ के निर्यातक ने अनुरोध किया है कि एन टी एफ दोयम ग्रेड उत्पादन प्रक्रिया में दोषों के कारण उत्पन्न हुआ, जिनकी पहचान गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रिया के दौरान की गई थी और उसका उत्पादन, उत्पादन योजना के भाग के रूप में नहीं किया गया था। यूरोपीय संघ के निर्यातक ने दोयम दर्जे के एन टी एफ को उप-उत्पाद के रूप में माना है परंतु पहले दर्जे के एन टी एफ की लागत भी उनके द्वारा नहीं बताई गई है। तदनुसार, प्राधिकारी मानते हैं कि दोयम दर्जे के एन टी एफ (नायलॉन टेक्सटाइल फाइबर) यार्न को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से अलग नहीं किया जा सकता। यह भी माना जाता है कि उपर्युक्त कारण से कि मैसर्स एक्वाफिल को भारत में उनके एन टी यार्न के निर्यात के संबंध में अलग से मार्जिन नहीं दिया जा रहा है।
- xi. प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि बी सी एफ (ब्लक कंटीन्यूअस फिलामेंट) यार्न को विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से अलग किया जाता है। जैसा कि घरेलू उद्योग ने भी सहमति दी है। बी सी एफ यार्न क्रिम्पड नायलॉन फिलामेंट यार्न है, जिसमें लगभग 4 सेंटी न्यूटन डेसिटेक्स की उच्च टेनिसिटी होती है तथा उच्च डेनेरेज (लगभग 650 से 1650 डेसिटेक्स) और इसका प्रयोग सामान्यतः कालीन निर्माण में होता है।

- xii. यह भी नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने (i) अपाटित आयातों और (ii) अलग किये गये उत्पाद के आयात अर्थात् बी सी एफ यार्न की मात्रा अलग करके क्षति का पुनर्मूल्यांकन किया है।

क. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

101. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने से भारत में उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपाय लगाये जाने से कम होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लगाये जाने से पाटन की परिपाटियों द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे। घरेलू उद्योग की गिरावट रुकेगी और संबद्ध सामानों के ग्राहकों को व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाये रखने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्य रूप में पाटन की अनुचित परिपाटियों द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। अतः पाटनरोधी शुल्क लगाने से उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लगाये जाने से किसी भी तरह संबद्ध देशों से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसीलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्ता आपूर्ति के दो या उससे अधिक स्रोत भी बनाये रख सकते हैं।

ठ. सिफारिश

102. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच शुरू की गई थी और वह सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित की गई थी। पाटन क्षति और कारणात्मक सम्पर्क के पहलुओं के संबंध में सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। पाटनरोधी नियमावली के अनुसार पाटन, क्षति और उसके कारणात्मक संपर्क के संबंध में जांच शुरू किये जाने तथा जांच किये जाने पर और ऐसे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को भी वास्तविक क्षति तथा सिद्ध सकारात्मक पाटित मार्जिन को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन और क्षति को समाप्त करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक है।
103. कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी कमतर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार, निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में दी गई राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध सामानों के आयातों का केंद्रीय सरकार द्वारा पांच (5) वर्षों की अवधि के लिए लगाये जाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं. (1)	उपशीर्ष (2)	सामानों का विवरण (3)	मूल देश (4)	निर्यातक देश (5)	उत्पादक (6)	निर्यातक (7)	धनराशि (8)	यूनिट (9)	मुद्रा (10)
1	5402	नायलॉन मल्टी फिलामेंट यार्न*	वियतनाम	वियतनाम	फोरमोसा इंडस्ट्रीज कारपोरेशन (एफआईसी)	1.लियांग हाउ टेक्नोलोजी कं., लिमि. (एल आई एच ए), ताईवान 2. बोसका इंटरप्राइजेज लिमि. (बीओ एससीए)हॉंगकॉंग	384.02	मी. टन	अम.डॉ.
2.	5402	नायलॉन मल्टी फिलामेंट यार्न*	वियतनाम	वियतनाम	ह्योसंग डोंग नई	1. ह्योसंग इंटरनेशनल (एचके) लि., हॉंगकॉंग	NIL	मी. टन	अम.डॉ.

						2.रेन टोंग इंडस्ट्रियल लि., होंगकॉंग			
3	5402	नायलॉन मल्टी फिलामेंट यार्न *	वियतनाम	अन्य देश	कोई	कोई	719.44	मी. टन	अम.डॉ.
4	5402	नायलॉन मल्टी फिलामेंट यार्न *	संबद्ध देश को छोड़कर कोई अन्य देश	वियतनाम	कोई	कोई	719.44	मी. टन	अम.डॉ.
5	5402	नायलॉन मल्टी फिलामेंट यार्न *	यूरोपीय संघ	अन्य देश	कोई	कोई	128.06	मी. टन	अम.डॉ.
6	5402	नायलॉन मल्टी फिलामेंट यार्न *	संबद्ध देश को छोड़कर कोई अन्य देश	यूरोपीय संघ	कोई	कोई	128.06	मी. टन	अम.डॉ.

* सीमा शुल्क उपशीर्ष संख्या 5402 के तहत अध्याय 54 के अंतर्गत वर्गीकरणीय नायलॉन अथवा पोलियामाइड के सिंथेटिक्स मल्टी फिलामेंट यार्न, यथा फ्लैट यार्न – ट्विस्टिड और /अथवा अनट्विस्टिड, क्रिम्पड यार्न, पूर्णतः ड्रोन यार्न (एफ डी वाई), स्पिन ड्रोन यार्न (एस डी वाई), फुली ओरियंटिड यार्न (एफ ओ आई), हाई ओरियंटिड यार्न (एच ओ वाई), आंशिक रूप से ओरियंटिड यार्न (पी ओ वाई), टेक्चर्ड यार्न : ट्विस्टिड और /अथवा अनट्विस्टिड, और डाइड यार्न, सिंगल, डबल, मल्टीपल, फोल्डिड अथवा केबलड। इस उत्पाद में फ्लैट/ टेक्सचर्ड, ट्विस्टिड और /अथवा अनट्विस्टिड, ब्राइट / सेमि-डल / फुल – डल (अथवा उसके रूप), ग्रे / कलर्ड / डाइड (अथवा उसके रूप), सिंगल, डबल, मल्टीपल, फोल्डिड अथवा केबलड (अथवा उसके रूप), चाहे वह आकार में हों अथवा नहीं। जैसे नायलॉन फिलामेंट यार्न अथवा पोलिया माइड यार्न के सभी रूप शामिल हैं परंतु नायलॉन का उच्च टेनिसिटी यार्न अलग है। विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र से विशेष रूप से अलग किये गये वे मानव निर्मित सभी फिलामेंट यार्न हैं जिनमें नायलॉन अथवा कोलामाईड और मोनो फिलामेंट यार्न, नायलॉन के उच्च टेनिसिटी यार्न, बी सी एफ (ब्लक कंटीन्यूअस फिलामेंट) यार्न नहीं हैं। बी सी एफ यार्न क्रिम्पड नायलॉन फिलामेंट यार्न हैं जिसमें लगभग 4 सेंटी न्यूटन डेसिटेक्स तथा उच्च डेनियरेज लगभग 650 से 1650 डेसिटेक्स है और इसका प्रयोग सामान्यतः कालीन निर्माण में होता है।

ड. आगे की प्रक्रिया

- 104 इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना के कारण केंद्रीय सरकार के विरुद्ध की जाने वाली कोई अपील सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपील अधिकरण के समक्ष की जायेगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं महानिदेशक

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 6th August, 2018

FINAL FINDINGS

Sub : Anti-dumping investigation concerning imports of “Nylon Filament Yarn (Multi Filament)” originating in or exported from European Union and Vietnam.

F. No-14/33/2016-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the “Act”) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the “AD rules”), thereof;

A. Background of the Case

2. M/s. JCT Limited, M/s. Gujarat Polyfilms Pvt. Ltd, M/s. Gujarat State Fertilizers and Chemicals Ltd., M/s. Prafful Overseas Pvt. Ltd. & AYM Syntex (Formerly known as Welspun Syntex) (hereinafter referred to as the “Applicants” or “Petitioners” or “Domestic Industry”) have jointly filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the “Authority”) in accordance with the Act and the AD Rules, for initiation of anti-dumping investigation concerning imports of **“Nylon Filament Yarn (Multi-Filament)”** (hereinafter also referred to as the “PUC” or “subject goods”), originating in or exported from European Union and Vietnam (hereinafter also referred to as the “subject countries”), and requested for initiation of an investigation for levy of anti-dumping duties on the subject goods.

3. The Authority on the basis of sufficient *prima facie* evidence submitted by the applicant issued a public notice in accordance with Rule 6(1) of the Rules vide Notification No. 14/33/2016-DGAD dated 22 August, 2017 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating an anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with Rule 5 of the AD Rules, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

B. Procedure

4. The procedure described below has been followed:

- a. The Authority received an application from the petitioners on behalf of domestic industry of subject goods, alleging dumping of subject goods originating in or exported from subject countries and resultant injury to the domestic industry for imposition of anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject countries under the AD Rules.
- b. The Authority notified the Embassy of Vietnam and the Delegation of the European Union in India about the receipt of application before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the AD Rules.
- c. The Authority also sent copy of initiation notification to the Embassy of Vietnam and the Delegation of the European Union in India, known producers/ exporters from the subject countries and known importers/ users/ associations of the subject goods as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the issue of letter intimating initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules.
- d. The Authority forwarded copy of the non-confidential version of the application to the Embassy of Vietnam and the Delegation of the European Union in India, known producers/exporters from the subject countries and known importers of the subject goods, in accordance with the AD Rules. A copy of the application was also provided to other interested parties, wherever requested.

- e. The Authority sent the exporter's questionnaires to the following known exporters in the subject country to elicit relevant information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
1. Thai Tuan Group Corporation;
 2. Thien Phuoc Trading and Services Co., Ltd.;
 3. Johnson Controls Fabrics;
 4. Tessitura Antonio Ghiringhelli & CS;
 5. Noyfil S.A.;
 6. Lanex A.S.;
 7. Polytech S.R.L.;
 8. Twd Fibres Service Gmbh;
 9. Nexis Fibers A.S.;
 10. PHP Fibers Gmbh;
 11. Dupont International Operation;
 12. DSCM-Vietnam Co., Ltd.;
 13. Plastoplas UG;
 14. De Amatex Spa;
 15. Aquafil S.P.A.;
 16. Antonio Moron De Blas;
 17. Formosa Industries Corporation;
 18. Enka International Gmbh & Co.;
 19. Mep-Olbo Gmbh;
 20. Texon Italia S.P.A.;
 21. Schoeller Textil AG;
 22. Bonar Yarns & Fabrics Ltd.;
 23. Textilwerke Todtnau Bemaue;
 24. W.Zimmermann Gmbh & Co.;
 25. Hyosung Vietnam Co., Ltd.;
 26. Eurotextilati Srl;
 27. Belrey Fibres Sa;
 28. Gorenjska Predilnica Dd.
- f. Copies of the letter and the exporters' questionnaires sent to the exporters/producers in the subject countries were also sent to the Embassy of Vietnam and the Delegation of the European Union in India, along with a list of known exporters/producers with a request to advise the known exporters/producers from the subject country as also other exporters/producers from the subject countries to respond to the questionnaires within the prescribed time limit.
- g. The following producers/exporters filed response to the Exporter's Questionnaire in the prescribed format:
1. Aquafil S.p.A, Italy;
 2. Formosa Industries Corporation, Vietnam;
 3. Bosca Enterprises Limited (BOSCA), Hong Kong;

-
4. Liang Haw Technology Co., Ltd. (LIHA), Taiwan;
 5. Hyosung Dong Nai Co., Ltd., Vietnam;
 6. Hyosung International (HK) Ltd., Hong Kong;
 7. Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong;
- h. Questionnaires were sent to the following known importers/users of the subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
1. Brakes India Limited;
 2. AASU Textiles Private Ltd.;
 3. Baliga Fishnets;
 4. Bayer India Ltd.;
 5. Birla Ericsson Optical Ltd.;
 6. Chidambaram Fishnets Pvt. Ltd.;
 7. D C Mills Pvt. Ltd.;
 8. Dupont Fibers Ltd.;
 9. Entremode Polyecoaters Ltd.;
 10. Garware Wall Ropes Ltd.;
 11. Goenka Industries;
 12. Habasit Lakoka Pvt. Ltd.;
 13. IDL Industries Ltd.;
 14. SRF Ltd.;
 15. Vivilon Textiles Industries;
 16. Euro Vista India Ltd.;
 17. Garden Silks Mills Ltd.;
 18. Kayavlon Impex Pvt. Ltd.;
 19. JCT Limited;
 20. Gujarat Polyfilms Pvt. Ltd.;
 21. Gujarat State Fertilizers & Chemicals Limited;
 22. AYM Syntex Limited;
 23. Prafful Overseas Pvt. Ltd.;
 24. SK Exports;
 25. Sarla Performance Fibers Ltd.;
 26. Shalon Silk Industries Pvt. Ltd.;
 27. Surat Synthetics Ltd.;
 28. Suertex Inds. Ltd.;
 29. Supreme India Impex Ltd.;
 30. Valson Polyester Ltd.;
 31. Federation of Indian Art Silk Weaving Industry;
 32. Federation of Gujarat Weavers Association;
 33. Surat Grey Kapada Utpadak Sangh.

- i. The following importers/users filed response to the Importer's Questionnaire in the prescribed format:
 1. Benlon India Limited;
 2. Nishant Marketing;
 3. Ginza Industries Limited;
 4. Ginza Lifestyles Limited;
 5. Valson Polyester Private Limited;
 6. Kiran Texpro Private Limited;
 7. SGP India.
- j. Submissions were also made from time to time by the parties who filed Questionnaire Response. Other than such parties, comment was also received from the following party;

South Gujarat Warp Knitters Association

- k. Issues raised in various letters filed by interested parties from time to time, including their comments on PCN methodology, have been addressed during the course of the present investigation.
- l. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the domestic industry, producers/exporters and the importers in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties. Submissions made by all interested parties have been taken into account in the present findings.
- m. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- n. Further information was sought from the applicants and other interested parties to the extent deemed necessary.
- o. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the views on the basis of the facts available.
- p. Verification of the information provided by the applicant domestic industry was carried out by the Authority on 2.05.2018 and 03.05.2018 to the extent deemed necessary. Similarly, during 28.05.2018 to 31.05.2018, the Authority carried out on-site data verification in respect of responding exporter from EU. In respect of responding exporter(s) from Vietnam, the data and information was verified through table study. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon.
- q. Investigation was carried out for the period starting from 1st October 2015 to 31st March 2017 (18 months) (hereinafter referred to as the 'period of investigation' or the 'POI'). The examination of trends, in the context of injury analysis covered the period from 2013-14, 2014-15, 2015-16 and the POI.
- r. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation and the said information was obtained from the DGCI&S and has been adopted for the purpose of the present investigation.
- s. Arguments raised and information provided by various interested parties during the course of the investigation, to the extent supported with evidence and considered relevant to the present investigation, have been appropriately considered by the Authority.

- t. Based on the suggestions put forward by the Petitioners, and comments received thereon, the Authority constructed the PCN classification and circulated the same on 27 April, 2018. Revised Questionnaire responses based on the PCN classification were received from the interested parties.
- u. Exchange rate prevailing during the POI for conversion of US\$ to INR is considered as INR 67.71 = US\$1 and has been adopted by the Authority.
- v. In this notification, *** represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- w. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a hearing held on 8 May, 2018. All the parties attending the oral hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally by 15 May, 2018. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and were requested to submit their rejoinders by 22 May, 2018.
- x. The arguments made in the written submissions and rejoinders submissions as well as letters received from time to time from the interested parties have been considered in the present findings.

C. Product under Consideration and Like Article

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

5. The following submissions were put forward by exporters/importers/other interested parties with regard to scope of the product under consideration and like article:

- a. Aquafil has submitted that it sells two types of yarns in India, Bulk Continuous Filament (BCF) Yarn and Nylon Textile Fiber (NTF) yarn. Of this, BCF is sold to India at prices comparable to the domestic prices of the goods in Europe. Further, NTF does not have a ready market in Europe and is rarely sold in the domestic market.
- b. Moreover, Aquafil has submitted that it is exporting second-grade NTF which must be excluded as they are not manufactured as such but are rather waste products generated out of manufactured products.
- c. Moreover, second grade NTF yarn is neither commercially nor technically substitutable to the products being manufactured by the domestic industry and therefore, the same must be excluded from the scope of the investigation.
- d. Certain products such as all monofilament nylon yarns and high tenacity yarn of nylon were excluded at the outset of the investigation. Therefore, the Authority must ensure that the import volumes do not reflect any volumes pertaining to the same.
- e. Further, since monofilament yarn has been excluded, the Authority must also exclude mother yarn for making of monofilament yarns from the scope of the product under consideration as well.
- f. The domestic industry is unable to supply products of sufficiently decent quality for the manufacture of downstream products. In this regard, we submit that the DI is supplying uneven material (uneven package weights) as first grade material. The issue with uneven material is that the yarn is not of equal length and cannot be run in the machines owned by the users/importers.
- g. The Petitioners refuse to give dyeing guarantee which leads to substantially higher costs in case of colour bleeding in the dyed material.

Views of the domestic industry

6. The submissions made by the domestic industry with regard to product under consideration and like article and considered relevant by the Authority are as follows:

- a. The PUC as defined by the Authority in the initiation notice is appropriate for the present investigation and does not require any modifications.
- b. Further, the goods produced by the Petitioners are commercially and technically substitutable to the imported goods, and the two are used by customers interchangeably.

- c. With respect to the submission of certain interested parties that subject goods from European Union have different prices and cannot be compared with Vietnam or other imports, it has been submitted by the Petitioners that so long as the PCN of goods from EU is comparable to the PCN of goods supplied by the domestic industry, the two are comparable.
- d. It is submitted by the Petitioners that Aquafil has admitted that they are using the Indian market as a dumping ground and therefore, it cannot be argued that the goods supplied by European suppliers are distinct from the goods supplied by the domestic industry.
- e. The Petitioners have rejected the claim of the interested parties regarding sale of only first quality products in EU while only second quality goods are exported. In any case, since PCN has been duly constructed, the principle of fair comparison would be followed and it cannot be said that the comparison is distorted due to any difference in product types.
- f. The Petitioners have submitted that about 76% of the demand over the injury period was met by domestic producers and therefore, there is no basis for the argument that the domestic industry product is not a quality product or the domestic industry does not give any dyeing guarantees.
- g. The domestic industry vide communication dated 7th June, 2018 has clarified that they do not manufacture BCF and accordingly has requested for exclusion of BCF from the scope of PUC.

Examination of the Authority

7. The product under consideration in the present investigation is “Synthetic Multi Filament Yarn of Nylon” also known as Polyamide Yarns. Nylon Filament Yarn is a synthetic filament yarn produced by polymerization of organic monomers.

8. The product under consideration includes all kinds of synthetic multi filament yarns of Nylon or Polyamides, such as flat yarn - twisted and/or untwisted, crimped yarn, fully drawn yarn (FDY), spin drawn yarn (SDY), fully oriented yarn (FOY), high oriented yarn (HOY), partially oriented yarn (POY), textured yarn – twisted and/or untwisted, and dyed yarn, single, double, multiple, folded or cabled, classifiable within Chapter 54 under customs subheading no. 5402. The product includes all variants of Nylon Filament Yarn or Polyamide Yarns such as flat/textured/ twisted/ untwisted, bright/semi-dull/full-dull (or variants thereof), grey/ colored/ dyed (or variants thereof), single/double/ multiple/folded/cabled (or variants thereof), whether or not sized, but excludes high tenacity yarn of nylon. The subject goods are classified under Chapter 54 of the Custom Tariff Act. The major end uses of NFY are in home furnishing and industrial application areas such as curtains, sewing and embroidery thread, upholstery, fishnets etc. Customs classifications are indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

9. Specifically excluded from the scope of product under consideration are all man-made filament yarns not having Nylon or Polyamides and mono filament yarn as well as high tenacity yarn of nylon.

10. The petitioner vide communication dated 7th June, 2018 has confirmed that they are not manufacturing or selling BCF (Bulk Continuous Filament) yarn. The Authority, thus holds that BCF yarn is excluded from the scope of product under consideration.

11. With respect to claims pertaining to PCN classification, it is noted that PCN is relevant for the assessment of dumping and injury margins and the PCN classification and the data received based thereon enables the Authority to ensure a fair comparison of products for the purposes of dumping margin (comparison between the producer/exporters’ local market prices and Indian export prices) as well as for injury margin (comparison between the Indian domestic industry’s fair price and the producers/exporters’ pricing of the subject goods destined for India).

D. Domestic Industry and Standing

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

12. The submissions made by the exporters/importers/other interested parties during the course of the investigation with regard to scope of domestic industry and standing are as follows:

- a. The Petitioners have misrepresented in the Petition that none of the Petitioners have imported

the subject goods from the subject countries. Rather, at least two of the Petitioners are importers of the subject goods and even some of the supporters are importers of the subject goods.

- b. The Petitioners have made voluminous imports from one of the participating exporters and the said interested party has provided evidence regarding the importation of subject goods from the subject country by the following parties:
 - i. AYM Syntex (Formerly, Welspun Syntex Ltd.) -Applicant,
 - ii. JCT Limited -Applicant,
 - iii. Shri Ram Texolene Pvt. Ltd. -Related Company of AYM Syntex (Applicant),
 - iv. Salasar Yarns Pvt. Ltd -Related company of Salasar Polytex Pvt. Ltd. (Supporting Co.),
 - v. Ray Syntex Pvt. Ltd -Supporting Co.,
 - vi. Oriilon India Pvt Ltd -Supporting Co.
- c. The Petitioners cannot be allowed to modify the domestic industry at such a belated stage and seek inclusion of another party, who was previously a supporter, within the fold of “Petitioners” to enhance the standing of the applicants as eligible domestic producers.

Views of the domestic industry

13. The submissions made by the domestic industry with regard to scope of domestic industry and standing, considered relevant by the Authority, are as follows:
 - a. The Petitioners, in their Petition, provided evidence of standing on the basis of the domestic industry production as under :

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Annualized)
GPPL	MT	***	***	***	***
GSFC	MT	***	***	***	***
Prafful	MT	***	***	***	***
JCT	MT	***	***	***	***
AYM Syntex	MT	***	***	***	***
Domestic Industry	MT	29721	32651	36477	35447
Salasar	MT	***	***	***	***
JPB Fiber	MT	***	***	***	***
Gupta Synthetics Limited	MT	***	***	***	***
Century Enka Ltd.	MT	***	***	***	***
Oriilon India	MT	***	***	***	***
Other Indian Producers	MT	***	***	***	***
Total Indian Production	MT	44476	55652	65838	70708

*POI= October, 2015 to March, 2017

- b. Subsequently, at the time of filing the written submissions, the Petitioners have also provided the costing information of one more producer, M/s Century Enka, with a request to consider it also to be one of the Petitioners and accordingly revised all the injury parameters as well. The standing of the domestic industry on inclusion of M/s Century Enka would stand revised as under:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Annualized)
GPPL	MT	***	***	***	***
GSFC	MT	***	***	***	***
Praful	MT	***	***	***	***
JCT	MT	***	***	***	***
AYM Syntex	MT	***	***	***	***
Century Enka Ltd.	MT	***	***	***	***
Domestic Industry	MT	36,328	45,470	51,837	54,074
Salasar	MT	***	***	***	***
JPB Fiber	MT	***	***	***	***
Gupta Synthetics Limited	MT	***	***	***	***
Oriilon India	MT	***	***	***	***
Other Indian Producers	MT	***	***	***	***
Total Indian Production	MT	44,476	55,652	65,838	70,708

- c. Post-oral hearing, the Petitioners have stated that one of the supporters to the Petition, Oriilon Ltd., had indeed imported subject goods during POI but the volume of its imports from the subject countries amounted to a meagre quantity of *** MT out of the total import of *** MT from the subject countries.
- d. Letters have been submitted on behalf of the Petitioners and supporters stating that no imports were made by Petitioners (except the one which has made insignificant quantity of import) and only negligible imports by the supporters from the subject countries during the POI. The petitioners have further stated that it can be verified from the data of the Indian customs as well. The volume of imports made during the POI (October'15 to March'17) by the petitioners and their supporters, on the basis of letters filed by JCT Limited, Oriilon India Pvt. Ltd., Salasar Polytex Pvt. Limited, Gujarat Polyfilms Limited, Gupta Synthetics Ltd., JPB Fibres, Praful Overseas Ltd., Gujarat State Fertilizers & Chemicals Ltd., Century Enka Ltd. and AYM Syntex Ltd. are as under :

Particulars	UOM	Imports from EU	Imports from Vietnam	Imports from Other Countries	Total
JCT	MT	***	***	***	***
AYM	MT	***	***	***	***
Salasar	MT	***	***	***	***

Examination of the Authority

14. Before proceeding with the analysis of the standing of the domestic industry, it is noted that the Rule 2 (b) of the AD rules defines “domestic industry” as under:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves

importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"

15. The application has been filed by five producers, M/s. JCT Limited, M/s. Gujarat Polyfilms Pvt. Ltd, M/s. Gujarat State Fertilizers and Chemicals Ltd., M/s. Prafful Overseas Pvt. Ltd. and M/s. AYM Syntex, claiming that their production put together accounts for about 50% of Indian production. The Petitioners have also brought forward the information of certain other producers who are supporters of the Petition, namely, M/s. Salasar Polytex Pvt. Ltd., M/s. JPB Fibres (Eagle Group), M/s. Gupta Synthetics, M/s. Oriilon India Pvt. Ltd. and M/s. Century Enka Ltd. which together account for the remaining 50% of Indian production.

16. Further, claims have been made by various interested parties that M/s. JCT Limited and M/s. AYM Syntex may not be considered as part of the eligible domestic industry owing to the fact of importation of PUC by them from the subject countries. The Authority has examined whether or not they were engaged in importation of the subject goods from the subject countries and accordingly whether or not these two Petitioners can be considered as eligible domestic industry.

17. With respect to the importation of the subject goods by the Petitioners, the Authority notes that it has the discretion to determine whether or not such petitioners may be considered eligible to constitute domestic industry, depending on the extent of importation of the subject goods from the subject countries.

18. In the present case, it is noted that the Petitioners claimed to have zero imports at the time of filing of the Petition. Accordingly, the Authority had issued the initiation notice on prima facie understanding that the Petitioners constitute domestic industry and have not imported any subject goods from the subject countries. Subsequently, claims were raised by several interested parties that at least two of the Petitioners, namely M/s. JCT Ltd. and M/s. AYM Syntex, were importers of the subject goods. It was also claimed that certain supporters of the Petition were also importers of the subject goods. However, subsequently at the stage of rejoinder submissions, the Petitioners admitted one of the petitioners had made almost negligible import of ***MT from the subject countries.

19. The Authority notes that one of the Petitioners, M/s. JCT Limited, did not cooperate with the Authority post- initiation and no information whatsoever was received from them after initiation of the investigation. In light of this, the Authority treats this party as non-cooperative and exclude the volume of their production from the share of the Petitioners but retain it as part of the overall Indian production. Even after this, the production volume of rest of the petitioners is sufficient to meet the standing requirement as the domestic industry for the purpose of the present investigation. Accordingly, the Authority has reassessed and reconsidered the injury parameters only on the basis of these four producers and conducted the injury assessment based thereon. It is further noted that contrary to the claim of other interested parties, M/s JCT Ltd has not made any import from the subject countries.

20. Upon examination, it is found M/s. AYM Syntex has effected import of PUC from the subject countries. Further, the Authority also examined the volume of imports made by the Petitioner M/s. AYM Syntex during the POI. It is noted that the volume of imports made by M/s AYM Syntex, one of the Petitioners, is quite insignificant- ***MT (less than ***% of total import of PUC from subject countries). It is also noted that neither the factum of importation of PUC by the supporters of the Petition nor the exclusion of M/s AYM Syntex, if at all, affects the standing of the Domestic Industry in the investigation. On the contrary, the exclusion of M/s AYM Syntex will result in undue advantage to the Domestic Industry in injury determination since AYM Syntex is far more efficient unit as compared to other petitioners. In view of this, the Authority considers M/s AYM Syntex as a constituent of the eligible domestic industry.

21. The Authority also examined the request for inclusion of M/s Century Enka Ltd. as a Petitioner and for considering their information in the injury assessment. Since the Petitioners had not originally included M/s. Century Enka and the information relating to Century Enka was provided only after the oral hearing, it is felt that inclusion of such a party as one of the Petitioners may not be fair to all the other interested parties who have participated in the investigation and made submissions in a timely manner. In such a case, the Authority finds it appropriate not to accept the request to include M/s. Century Enka as one of the Petitioners at this belated stage.

22. The Authority thus proposes to treat M/s JCT Ltd. as ineligible to be considered as "domestic industry" in terms of Rule 2(b) of the AD Rules owing to its non-submission of data and consequent non-cooperation with the Authority.

23. The Authority further notes that the remaining petitioners, i.e., M/s. AYM Syntex, M/s Gujarat Polyfilms Pvt. Ltd, M/s Gujarat State Fertilizers and Chemicals Ltd. and M/s Prafful Overseas Pvt. Ltd. represents approximately 40% of the domestic production. Moreover, there is no opposition to the petition. The Authority therefore holds that the petitioners satisfy the standing requirement in terms of Rule 5(3) and therefore, have been considered eligible to constitute the domestic industry in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.

The Authority, however, has taken serious view of the (i) non-submission of data by M/s JCT limited despite having been one of the petitioner and (ii) non-disclosure of full facts of the imports of PUC by M/s. AYM Syntex. The Authority cautions the above mentioned entities to refrain from such practices in future.

E. Issues relating to Confidentiality

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

24. The submissions made by the exporters/importers/other interested parties during the course of the investigation with regard to excessive confidentiality and considered relevant by the Authority are as follows:

- a. Certain Parameters prescribed in Proforma IV(A) have been kept confidential and not provided at all, not even in indexed form.
- b. The Petitioners have failed to declare their imports and relationship with the importers and exporters of the subject goods.
- c. The Petitioners have not enclosed the costing formats as part of the Petition. Even the names of the raw materials and other relevant details which are helpful in understanding the details of the production process as well as other relevant information have been claimed as confidential.
- d. The Petitioners have withheld information regarding the booming health of the Petitioners, as evidenced by their Annual Reporting regarding enhanced investments.

Views of the domestic industry

25. The submissions made by the domestic industry with regard to excessive confidentiality, considered relevant by the Authority, are as follows:

- a. The Petitioners have put forward the claim that Exporters/ Producers have abused confidentiality provisions. In this regard, the Petitioners have claimed that exporters have withheld important information and handicapped the Petitioners in making meaningful comments. This includes information pertaining to details of shareholders and list of related parties involved with the PUC, details of financial and contractual links and joint ventures with other companies, list of factories involved in production of subject goods and other goods, specifications of the PUC, PCN used by the producers/ exporters, channel of distribution, list of documents provided to substantiate domestic and export sales, volume and value of domestic sales, list of key raw materials, etc. which have not been disclosed in the non-confidential version of the Questionnaire responses filed by the producers/ exporters.
- b. The responses filed by the other interested parties are grossly deficient. All parties forming part of the channel of distribution have not filed response to the Exporters' questionnaire response. Such parties should be treated as non-cooperative and separate dumping margin be denied.
- c. Aquafil S.p.A, Italy has mentioned various affiliates involved in contract manufacturing within EU. However, such parties have not participated in the investigation at all. Moreover, Aquafil has a related entity in India. Said party has also not participated and the claim by Aquafil that the Indian entity is non-operational merits examination.
- d. Aquafil's EQR did not contain certain appendices and the same were filed well after the deadline for filing of the same. The opportunity to provide supplemental information cannot be extended to interpret that the exporter would be allowed to complete the questionnaire after the deadline.
- e. With respect to responses filed by Vietnamese producer / exporter, Formosa Industries Ltd., BOSCA and Liang Haw Technology Co. Limited, it is suspected that the value chain for the producers and exporters may not be complete. Moreover, Formosa has stated that it produces "most" of the chips consumed for production of PUC. In light of the same, it is unclear where

- from the price of the raw material under consideration has been taken. Details of the procurement of the raw material has not been disclosed.
- f. With respect to Hyosung Dong Nai and Hyosung International, it has been submitted that only direct exports have been reported while indirect exports have not been disclosed. Since all parties forming part of the channel of distribution have not participated, a separate dumping margin be not allowed to the exporter.
 - g. Hyosung Dong Nai has a related entity in India which has not been disclosed. The costs of such a related entity must be factored into the determination of the export price of the producer/exporter. Moreover, said party has procured inputs from a related entity in Singapore and it must be established whether the purchase price of such inputs reflects fair market price.
 - h. Authority must seek additional information in view of Trade Notice 5/2018 dated 28 February, 2018 in order to accurately determine the dumping margin for the participating producers/exporters.

Examination of the Authority

26. With regard to the confidentiality of information, the Authority notes that the information provided by the domestic industry on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim in accordance with Rule 7 of the AD Rules. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not kept open in public file. The Authority has also considered the confidentiality claims of other interested parties in accordance with the aforesaid rule and its consistent practice.

27. As regards the argument on the deficient information provided by the petitioners, the Authority notes that the information provided by the petitioners in the application was as per the proforma prescribed and only upon satisfaction of the merit of the case, the Authority initiated the present investigation.

28. As regards the claim that certain appendices of the EQR were not filed in time by Aquafil, it is noted that this issue was re-examined by the Authority and it was found that EQR with all the relevant appendices were filed by Aquafil within the stipulated timeframe.

F. Normal Value, Export Price and Dumping Margin

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties

29. The following submissions were made by the producers/exporters/ importers/other interested parties with regard to normal value, export price and dumping margin.

- a. The Petitioners have not explained how the normal value was computed. It has only been mentioned that the details of the normal value calculation can be found in Annexure 3.1 to the Petition. Annexure 3.1 of the Petition contains data that has been completely redacted stating that the same was computed on the basis of the optimized costs of the domestic industry for the POI.
- b. In the present investigation, the Petitioners have alleged that the subject goods are being dumped from European Union and Vietnam. European Union is a market economy for which normal value cannot be constructed based on the cost of the Petitioners. Further, Petitioners have not made any submissions for treatment of Vietnam as a non-market economy, and thus, as a market economy, normal value cannot be constructed based on the cost of the Petitioners.
- c. Even by the yardstick of constructing Normal value for a Non-Market Economy (in the case of Vietnam), the Petitioners' methodology is inconsistent with Annexure I (7) of AD Rules
- d. The construction of the Normal Value for the subject country is deeply flawed. The consumption norms used to calculate the normal value have not been provided. All elements considered in the Normal Value, such as raw materials cost, utility, conversion cost, selling, general and administrative costs, have been considered as per the Petitioners' costs in violation of the WTO AD Agreement and the Indian AD Rules.
- e. Construction of Normal Value on the basis of the price actually paid or payable in India may only be considered as a sound basis for construction of the normal value after the prior two

options listed under para.7 of Annexure I of the AD Rules have been exhausted. Without exhausting such options, the usage of such a methodology is clearly in contravention of the requirements of paragraph 7 of Annexure I of the AD Rules.

- f. In addition, Petitioners have failed to provide details on the manner in which the normal value on the basis of price in India has been arrived at. Information pertaining to raw material, power & fuel, other processing cost and interest as well as cost of production reported in Annexure 3.2 to the Petition is treated in confidence without being accompanied by a non-confidential summary. The Petitioners have not even provided the basis for assuming Profits at 5%.
- g. There is neither any evidence of adjustments made in export price such as ocean freight, marine insurance, port expenses, inland freight expenses, bank charges, commission nor the basis thereof has been provided in the petition.
- h. The adjustments claimed by the domestic industry from the export prices are on the higher side resulting in exaggerated claims of dumping in the current investigation.
- i. The Authority must consider Normal Value, Export Price and in turn, dumping margin on the basis of data provided by the producers/exporters and duly verified by the Authority.

Views of the domestic industry

30. The following submissions were made by the domestic industry with regard to normal value, export price and dumping margin:

- a. Owing to the deficiencies contained in the EQRs filed by the participating producers / exporters, no individual dumping margins can be allowed to them.
- b. Without prejudice to the above, it is submitted that in calculating the cost for determining the normal value, it should be ensured that such cost relating to purchase and sale of the subject goods has been appropriately captured.
- c. The petition contains sufficient information on price adjustments. The petitioners have used more conservative estimates for price adjustments. It is not the argument of any interested parties that the petitioners have claimed excessive price adjustments.
- d. The DA has prescribed a PCN and so long as PCN produced and sold in domestic market is same as PCN exported to India and the same is being compared, it cannot be said that the one yarn is a community yarn and other yarn is speciality yarn. If some PCNs were sold in domestic market which have not been exported to India, the same shall not be considered for the purpose of determination of dumping margin.
- e. Specifically, in case of Hyosung Dong Nai, since it procured raw material from an affiliate, it must be ascertained that the raw materials have been purchased and booked at arms' length prices. Aquafil has claimed confidentiality with respect to raw material procurement and no comments can be made in that regard.
- f. With respect to export price of the participating producers/exporters, the same should only be assessed in cases only if all traders forming part of the channel of distribution have participated in the investigations.
- g. Further, where exports are undertaken through related entities, the Authority must examine whether the export price provided are reliable. If not, the same must be determined on the basis of price at which the subject goods are resold to independent or unaffiliated buyer.

Examination of the Authority

Determination of Normal Value for producers and exporters in Vietnam **EXAMINATION OF MARKET ECONOMY CLAIM**

31. Hyosung Dong Nai has responded to the Supplementary Questionnaire in the prescribed format and provided all requisite supporting documents to rebut the presumption of non-market economy in accordance with criteria laid down in para 8(3) of Annexure 1 of the Rules. Table study of the documents submitted was also carried out. In this regard, it has been noted that Hyosung Dong Nai is wholly owned by, Hyosung Istanbul Tekstil Ltd. STI, a company based in Turkey and its ultimate shareholder is Hyosung Corporation,

Korea. In respect of ownership and critical decision making concerning prices, costs input and production, no evidence has been found of State interference. All facilities used for the production and/or commercial purposes are owned by Hyosung Dong Nai. As Hyosung Dong Nai is a new company set up in 2015 by a privately held company in Turkey, distortion carried over from the former non-market economy system was not detected. The raw materials are purchased by the company from related company in Singapore at market prices, which also sells raw material to unrelated customers. No material differences in prices on purchase of raw materials have been found. Other parameters, as provided in para 8(3) of the Rules with respect to depreciation of assets, exchange rate conversions etc. were also examined. However, no material came to notice indicating that the exporter has not been working in accordance with market economy parameters.

32. It is further noted that in previous investigations concerning imports from Vietnam the market economy issue had been examined by the Designated Authority. In this regard, reference is drawn to the final findings dated 6.03.2009 for Compact Disc-Recordable (CD-R) and final findings dated 02.07.2010 issued in the investigation concerning Recordable Digital Versatile Disc (DVD) where Vietnam based exporters were examined and found to be operating under market economy conditions.

33. The Authority notes that consequent upon the initiation notice issued by the Authority in the present investigation, the following Vietnamese producers and exporters/traders have filed exporter's questionnaire response:

- a. Formosa Industries Corporation, Vietnam
- b. Bosca Enterprises Limited (BOSCA)", Hong Kong
- c. Liang Haw Technology Co., Ltd. (LIHA)", Taiwan
- d. Hyosung Dong Nai Co., Ltd., Vietnam
- e. Hyosung International (HK) Ltd., Hong Kong
- f. Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong

34. The verification of records was carried out in respect of all Vietnamese producers/exporters by way of table study.

(i) Normal Value for producer, M/s. Formosa Industries Corporation, Vietnam and its traders/exporters, M/s. Liang Haw Technology Co., Ltd., Taiwan and M/s. Bosca Enterprises Limited, Hong Kong

35. From the response filed by producer, M/s Formosa Industries Corporation, Vietnam ("FIC") and its traders / exporters, M/s. Liang Haw Technology Co., Ltd., Taiwan and M/s. Bosca Enterprises Limited, Hong Kong, the Authority notes that FIC has exported only certain PCNs to India during POI. However, the producer could not furnish proper justification for the PCN-wise cost given in their response and accordingly the Authority had to construct the normal value for the producer,

36. In the absence of any reliable cost details of the above producer for the subject goods, the Designated Authority has constructed the normal value on the basis of price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin.

37. Accordingly, the normal value for FIC has been determined as indicated in the table below.

(ii) Normal Value for producer, M/s Hyosung Dong Nai Co., Ltd., Vietnam and its traders/exporters, M/s Hyosung International Ltd., Hong Kong and Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong

38. From the response filed by producer, M/s Hyosung Dong Nai Co., Ltd., Vietnam ("Hyosung") and its traders/exporters, M/s Hyosung International Ltd., Hong Kong and M/s Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong, the Authority notes that Hyosung has exported only certain PCN to India during POI. However, the producer could not furnish proper justification for the PCN-wise cost given in their response and accordingly the Authority had to construct the normal value for the producer,

39. In the absence of any reliable cost details of the above producer for the subject goods, the Designated Authority has constructed the normal value on the basis of price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin.

40. Accordingly, the normal value for Hyosung Dong Nai Co.Ltd. has been determined as indicated in the table below.

(iii) Normal Value for non-cooperating producers/exporters in Vietnam

41. For the other producers/exporters of Vietnam, Normal value has been determined on the basis of facts available and the same is shown in the dumping margin table below.

Determination of Export Price for producers and exporters in Vietnam**(i) Export Price for producer, M/s Formosa Industries Corporation, Vietnam and its traders/exporters, M/s Liang Haw Technology Co., Ltd., Taiwan and M/s Bosca Enterprises Limited, Hong Kong**

42. Export price for Formosa Industries Corporation (“FIC”) has been determined on the basis of questionnaire response filed by the producer and its exporters. The producer/exporter has exported ***MT of subject goods to India during POI. Adjustments have been considered on account of Packing, Inland Freight, Commission, Customs Handling Charges, Ocean freight, Insurance and Bank Charges to determine net export price at ex- factory level. Separate export price has been determined for each PCN exported to India. Accordingly, weighted average export price for FIC has been determined as indicated in the table below.

(ii) Export Price for producer, M/s Hyosung Dong Nai Co., Ltd., Vietnam and its traders/exporters, M/s Hyosung International Ltd., Hong Kong and Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong

43. Export price for Hyosung Dong Nai (“Hyosung”) has been determined on the basis of questionnaire response filed by the producer and its exporters. It is noted that one of Singapore based unrelated trader M/s. Greenworth International Pte Ltd has not filed its response and thus not cooperated with the Authority. However, the exports through non-cooperating trader is not significant enough to reject the response of the entire chain of producer & exporters/traders and declare them non-cooperative. Adjustments have been considered on account of Credit cost, Inland Freight, Commission, Customs Handling Charges, Insurance, Ocean Freight, and Bank Charges to determine net export price at ex-factory level. Separate export price has been determined for each PCN exported to India. Accordingly, weighted average export price for Hyosung has been determined as indicated in the table below.

(iii) Export Price for non-cooperating producers/exporters in Vietnam

44. For the other producers/exporters of Vietnam, export value has been considered on the basis of the facts available and the same is indicated in the dumping margin table below.

Determination of Normal Value and Export Price for producers and exporters in European Union

45. The Authority notes that only one European producer/ exporter i.e., Aquafil S.p.A, Italy filed the exporter’s questionnaire response. The verification of records was carried out in respect to the said the producer/exporter.

(i) Normal Value and Export Price for producer, Aquafil S.p.A, Italy

46. From the response filed by Aquafil, the Authority noted that Aquafil has exported BCF and second grade NTF products to India during the POI. These products exported by Aquafil have been excluded from the scope of the PUC on account of domestic industry subsequently clarifying that they are not manufacturing these products. Accordingly, the authority has not determined the normal value and export price for Aquafil. The Authority has excluded all exports by the said producer from the import statistics and the import volumes from European Union.

(ii) Normal Value and Export Price for non-cooperating producers/exporters in European Union

47. After excluding the import volumes of the participating European Union producer, the Authority examined the remaining imports from European Union. Normal value therefore has been determined on the basis of facts available while export price has been determined on the basis of the statistics derived from the import data obtained from DGCI&S. Based on this the dumping margin is indicated below. The normal value, export price and the dumping margin so determined will be applicable for all the exporters from European Union (including Aquafil for PUC other than excluded products)

Determination of Dumping Margin for producers and exporters in Vietnam and European Union

48. With respect to the subject countries, the export price to India has been compared with the normal value to determine the dumping margin based on PCN wise analysis. The dumping margin during the POI for all the exporters/producers from the subject countries have been determined as shown in the table below.

Dumping Margin Table

Country	Producer	Exporter	Normal Value US\$/ MT	Net Export Price US\$/ MT	Dumping Margin US\$/ MT	Dumping Margin %	Dumping Margin (Range %)
Vietnam	Formosa Industries Corporation (FIC)	1. Liang Haw Technology Co., Ltd., Taiwan 2. Bosca Enterprises Limited, HongKong	***	***	***	***	20-25
Vietnam	Hyosung Dong Nai	1. Hyosung International (HK) Ltd., Hong Kong 2. Ren Tong Industrial Ltd., Hong	***	***	***	***	(0-5)

Country	Producer	Exporter	Normal Value US\$/ MT	Net Export Price US\$/ MT	Dumping Margin US\$/ MT	Dumping Margin %	Dumping Margin (Range %)
		Kong					
Vietnam	All Others	All Others	***	***	***	***	50-55
European Union	All	All	***	***	***	***	10-20

49. It is seen that the dumping margins are significant and above *de minimis* limits in respect of all the producers- exporters of the product under consideration except in case of Hyosung Dong Nai, Vietnam.

G. Determination of Injury and Causal Link

50. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure – II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent impact of such imports on domestic producers of such articles. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

51. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the AD Rules.

Views of the producers/exporters, importers and other interested parties regarding the injury claims of domestic industry

52. The submissions made by the exporters/importers/other interested parties during the course of the investigation with regard to the injury claims of the domestic industry and considered relevant by the Authority are as follows:

- a. The reason for the increase of imports from subject countries from 2013 to 2017 is not dumping, but the growth of the Indian market demands following the development of downstream industry.
- b. The trend of price from subject countries and domestic industry has been fluctuating from 2013-14 to POI. Landed Price and Domestic Selling Price, both are decreasing in tandem. It depicts that there cannot be price injury to the Domestic Industry.
- c. Price Undercutting remains unchanged during the injury period and POI. It must be analyzed whether such price undercutting is resulting into material injury to the Domestic Industry. In present case, despite having positive price undercutting, Domestic Industry has improved its performance. Hence, price undercutting has no relevance in the present investigation.
- d. The petitioners are increasing the capacity every year, during the injury period and POI. Production and capacity utilization of the domestic industry has also increased during the period of investigation. Production has increased from *** MT during 2013-14 to *** MT during POI and capacity utilization has remained almost same as from 84% to 83% during the POI as compared to the base year 2013-14. This shows that the Domestic Industry is improving.
- e. The sales volume of the petitioners has increased from *** MT to *** MT from base year 2013-14 to the POI as compared.
- f. The market share of Domestic Industry has declined from 47% (2013-14) to 38% during the POI. This decline is not because of increase in imports rather increase in the share of other Indian producers. The market share of other Indian producers has increased substantially from 22% during 2013-14 to 38% during POI. On the contrary, the share of imports from subject country has remained almost same from 12% during 2013-14 to 14% during POI.
- g. Health of the domestic industry has improved and there is no case for imposing anti-dumping duty on subject goods from European Union. European Union constitutes hardly 7% of total imports and this 7% has neither shown any appreciable increase nor the share of the domestic industry declined. Hence exports from European Union and Aquafil S.p.A. is not responsible for any injury to the domestic industry.
- h. There is a significant overlapping in current case POI and last SSR POI. DA has held that there is no injury in SSR POI, hence there cannot be injury in this case. Indian Domestic Demand for mono is less than 10% and 90% data pertains to multifilament only which is the same as the SSR investigation.
- i. Performance of the domestic industry has only improved during the POI. The increase in imports has not led to any injury to adversely impact the business. Domestic industry has not suffered any losses because of the increase in imports, which is evidenced by their financial statements.
- j. Sales of domestic industry consistently increased in volume terms during the injury period while imports from EU reduced/ did not increase in the same proportion
- k. Domestic industry wants to impose anti-dumping duty on Vietnam and European Union as anti-dumping duty from China, Taiwan, Malaysia etc. was about to be struck down. The intention of the domestic industry is to use antidumping duty as a tool to gain advantage over Indian importers
- l. Losses claimed by domestic industry are due to inefficiencies in their process or other factors as they could not become profitable despite significant drop in crude prices during 2014-16.
- m. Imports from EU have different price and cannot be compared with Vietnam or other imports. Thus, it is unlikely that EU imports are causing injury to the domestic industry.
- n. Demand for PUC has doubled over the injury period and, the domestic industry was not

able to meet demand. Thus increase in imports from other countries was necessary.

- o. Data of production, capacity, capacity utilization, sales, and prices, per unit costs, and stocks has not been addressed/analyzed properly in the petition.
- p. Domestic industry has claimed that 74% market share has been affected by imports from subject countries. Market share of Indian producers has steadily increased during POI showing no injury to the domestic industry.
- q. Decline in sale price is due to decline in cost and not due to imports.
- r. There is no significant change in the price of the domestic industry from 12-13 to 14-15. The export from Vietnam has increased significantly. Hence, price of PUC from Vietnam cannot cause price undercutting or suppression
- s. Domestic industry's claim that they have become unprofitable due to dumped imports is incorrect. Their profit and PBIT have turned positive from 14-15 onwards.
- t. Overall health of the domestic industry has improved.
- u. Imports from EU and Vietnam are priced higher than the imports from countries which have been previously investigated
- v. The investigation should be terminated as there is no injury with respect to NFY. Major imports from China,

Taiwan, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea were of multifilament yarn only

- w. There is no significant increase in volume of imports from the subject countries either in absolute terms or in relation to Indian production and consumption
- x. Petitioners are experiencing reduced losses despite increase in volume of imports from the subject countries.
- y. There is increase in the capital employed with no commensurate increase in capacity, Petitioners have suddenly and substantially increased their Capital Employed (on NFA basis). Such increase in capital employed, without substantial increase in capacity, has led to a situation of decline in Return on Capital Employed. Such decline has also led to increased overall losses.
- z. No evidence has been provided for NV.
- aa. No evidence for adjustments has been provided while computing export price.
- bb. In India, polyamide yarns are commodity product whereas in EU this includes higher grade. Thus, there are two different product lines for EU i.e. domestic sales and for overseas, with difference in product and price. PCNs should be made to reflect such differences.
- cc. NFY has two categories BCF (Bulk Continuous Filament) and NTF (Nylon Textile Fibre). BCF is used for carpet manufacturing and NTF is for textile. EU customers are quality conscious and need finest quality of yarn. Remaining second quality is sold in EU or exported at market price.
- dd. AYM, JCT and Salasar have imported which can be seen from response filed by exporters. DA should examine this false certification by the domestic industry as attempt to mislead the DA. These merit exclusion from the scope of domestic industry and their data from standing
- ee. There is no co-relation between the ADD existing against Korea and setting plant by Hyosung Dong Nai in Vietnam
- ff. Imposition of ADD on PUC will adversely impact the downstream industries viz Indian chemical fiber, weaving and garment industry.
- gg. Domestic industry's facts show that they exaggerated the increased import and deliberately invented injury. If Authority continues the investigation, it will be determined that there is no increase of imports.

- hh. Inconsistencies between data filed now and SSR case do exist. Authority must verify the data and remove inconsistency.
- ii. The domestic industry is unable to supply quality product. While the imported product is 100% guaranteed for dyeing but the domestic industry does not give any dyeing guarantee
- jj. 26% return on GFA is highly inflated and is not according to the law.
- kk. Impact of past dumping and injury caused to the domestic industry over the past years should not be attributed to imports from the EU and Vietnam.
- ll. DA should adopt ROCE earned by industry during the period when there was no allegation of dumping as the reasonable profit margin and not 22% ROCE. 22% return is incorrect because Debt portion of Capital Employed attracts about 10 to 12% interest, 22% results in providing > 22% return on Net-Worth and during global recession allowing such a high return to domestic industry is incorrect and is never heard of in any sector.
- mm. 22% return gives undue advantage and protection to the domestic industry. 41 % profit margin on equity in no terms can be termed as reasonable
- nn. Prafull indicated that it has further plans to change its production capacity, AYM indicated that they have plans to expand capacities, Salasar Group Co Todi Rayon started production in 2016, New players such as Shiven Yarn has undertaken a multi-crore investment. These expansions would have been made after appraisal and evaluation of financials and profitability by the companies themselves, as well as banks and financial institutions.

Views of the domestic industry

53. The following are the submissions with regard to injury related issues made by the domestic industry and considered relevant by the Authority:

- a. The demand for the PUC has been steadily increasing and has increased by about 65% over the period of injury.
- b. The imports have rapidly increased over the period of injury. The imports have doubled in the period of injury in response to a mere 65% increase in demand in the same period.
- c. The fact of more than 7% import from European Union clearly shows that they are more than de minimus in volume. Both dumping margin and injury margin are positive.
- d. While imports from EU did not increase in proportion to increase in demand, the import price from European Union declined very significantly over the injury period. Further, while the import prices in base year itself were dumped prices, the decline in price thereafter was more than decline in cost. In other words, the dumping margin increased over the period. Thus, even when volume of import did not increase, the product continued to be imported from subject countries at dumped prices and the margin of dumping increased.
- e. Moreover, the present case is one of continuing injury. If the historical data is seen, the increase in imports is much more alarming.
- f. Imports have increased in relation to production in India as well as Indian demand / consumption.
- g. The imports have had a suppressing and depressing effect on the prices of the petitioning domestic industry.
- h. The imports are undercutting the selling price and underselling the non-injurious price of the petitioning domestic industry.
- i. The Petitioners have increased capacity, production and sales over the period of injury. However, the same has been achieved by reducing their prices in order to maintain customers in the market.
- j. The market share of the petitioning domestic industry has reduced even though the Indian industry as a whole has been able to maintain its place in the market. However, such share has been maintained at the cost of profitability.

- k. The inventories of the petitioning domestic industry have built up over the period.
- l. The profitability of the petitioning domestic industry has deteriorated significantly, and continuing losses have eroded the profitability of the petitioners.
- m. The cash profits of the petitioning domestic industry have declined, and its return is negative.
- n. The growth of the petitioning domestic industry in all profitability parameters is negative.
- o. The extent for dumping from the subject countries is not just positive, but significant.
- p. Moreover, the Petitioners are also facing threat of material injury as evidenced by the significant rate of increase of dumped imports over the years, price undercutting which has led to increase in imports and freely disposable capacities of the subject foreign producers.
- q. The causal link has been established as there are no other known factors which can be construed as causing injury to the domestic industry. In this regard, it is submitted that the volume of imports from non-subject countries are insignificant. With respect to countries like Malaysia, Taiwan and Korea, the Authority has examined the imports from these countries and found them to be non-injurious. The demand for the subject goods has not faced any contraction but rather increased. There are no trade restrictive practices or conditions of competition that could be said to be contributing to the injury of the Petitioners. No injury has been caused due to the use of any obsolete technology. The petitioners have segregated the data for domestic and export operations, and have provided the data relating to profits, cash profits, return on investment and other relevant parameters in so far as they relate to domestic operations only. Therefore, export performance of the petitioners cannot be said to be the cause of any injury. Performance of other products of the petitioners cannot be said to be cause of injury either as performance data pertains to the subject goods only. Finally, there has been no change in consumption patterns which could be claimed to cause injury to the petitioners.
- r. The interested parties are wrongly comparing the data of NFY SSR case with the present case. The scope of PUC itself is materially different in SSR case and the present case. In fact, the domestic industry has heavily contended that imports of Nylon Monofilament Yarn have not suffered because of anti-dumping duty in place and no imports of Nylon mono Filament Yarn from present subject countries. In fact, dumping of PUC from subject countries and financial losses in PUC on one hand and no dumping of Nylon Mono Filament Yarn in the present POI and the fact that domestic industry is not suffering injury in the Nylon Monofilament yarn in the present petition clearly shows that the injury to the domestic industry is due to dumping of the product in the country and not due to any other factor.
- s. The intention of domestic industry is not important. The DA has already recommended withdrawal of ADD on imports from other countries.
- t. The Indian industry is suffering low capacity utilization. While the figures given by Ministry of Textiles are cumulative for entire Indian industry, figures given by the petitioners are in respect of domestic industry.
- u. The argument of interested parties establishes that performance of non-petitioning domestic producers is in fact far more adverse as compared to petitioning domestic producers. This also gets established by the statements made at the time of hearing wherein some parties accepted that they were earlier importing the product and thereafter set up manufacturing facilities in India and despite having set up manufacturing facilities these parties are partly importing the product.
- v. The crude prices have nothing to do with efficiencies or inefficiencies in production process. Crude price has relevance to the price of chips required for production of PUC. As is evident, the cost of production of the domestic industry declined significantly. This decline in costs is largely due to crude price decline. Thus, the domestic industry has benefited with reduction in cost of production as a result of decline in crude prices.

However, the landed price of imports declined more than what is attributable to the decline in costs.

- w. The authority has proposed PCN for the present purposes and so long as the PCN imported from Europe is comparable to PCN imported from Vietnam, the products are comparable. Further, so long PCN supplied by European producers is same as PCN supplied by domestic industry, the product supplied by European producer and domestic industry are comparable. It is also noted that Aquafil in fact has claimed that they have used Indian market as a dumping ground for second quality. There is no basis for the argument now that the products supplied by European producers are of different types or standards and cannot be compared with Vietnam or other imports.
- x. It would be seen that in fact Indian industry holds capacities sufficient to meet the entire Indian demand. Imports of PUC are not necessary for the purpose. In addition, Aglon, Todi, PNP and Prafful (additional capacity) have also added combined capacity of *** MT per annum recently.
- y. There is no requirement on the part of domestic industry to undertake the analysis of various injury parameters nor has the Authority prescribed any such requirements. Indeed, the WTO has clearly held in the matter of Thailand – H-Beams wherein the Panel rejected Poland's argument that paragraph (iv) of Article 5.2 implies that some sort of analysis of data is required in the application, and stated that analysis of various injury parameters is the task of investigating authorities and the petition need not contain elaborate analysis on this account.
- z. Market share of domestic producers as a whole has declined, whereas that of imports from Vietnam has increased. As submitted by one of the producers at the time of oral hearing, some of the parties who were earlier importers of PUC have stopped import and have setup manufacturing facilities. While these parties have partly imported from Vietnam, these parties have produced the product and sold in the market. It is thus natural that market share of domestic producers will show an increase to the extent of production undertaken by these producers. However, these producers also admitted that they have been forced to import the product in view of dumping of product in the country.
- aa. The decline in import price is more than the decline in cost. Since the domestic industry was suffering financial losses, the domestic industry would not have reduced its prices with the decline in the costs in order to come out of financial losses. However, dumping of the product under consideration has forced the domestic industry to continued losses. It is reiterated that the entirety of the injury period is a period of dumping and the domestic industry had filed petitions, which could not be taken up for initiation for one reason or the other.
- bb. The data on record clearly shows that the price undercutting is significantly positive in the present POI. It is also relevant to note that (a) there is a PCN in the present case owing to significant price variation in different types, (b) price undercutting is required to be determined on PCN basis, (c) price undercutting is determined only for POI and not for the entirety of the injury period. The fact that the exports from Vietnam increased significantly establishes that the price undercutting led to increase in imports.
- cc. The factual information on record is referred to and relied upon which clearly shows that the domestic industry has been suffering from financial losses, negative profit before interest, negative cash profits, negative ROI throughout the injury period.
- dd. There is no demand supply gap in the present case. Imports have increased only because producers in Vietnam have setup "Make for India" plant in order to circumvent anti-dumping duty earlier imposed on imports from other countries. Decline in imports from countries attracting duty on one hand and increase in imports from subject countries on the other and an existence of related producers in Vietnam clearly establishes the same.
- ee. The domestic industry has been suffering from financial losses for such a long period. It therefore cannot certainly be said that the domestic industry is not injured.

- ff. It is not established why the present investigation must be terminated. As far as imports from China, Malaysia, Taiwan etc. are concerned, the DA has already held that these imports have neither caused nor are likely to cause injury to the domestic industry. It is the interested parties who argued before the Designated Authority in that investigation that imports from these countries did not cause nor were likely to cause injury to the domestic industry.
- gg. Petitioners are experiencing reduced financial losses not because dumping has reduced but because the cost of production declined as a result of decline in chip prices and the domestic industry withheld part of decline in costs in view of significant financial losses suffered by domestic industry.
- hh. There is a direct co-relationship between imposition of ADD by India and setting up of plants in Vietnam. As far as Hyosung is concerned, there is naturally a time lag between ADD imposed and setting up of the plant. This company got motivated by the success story of Formosa and on finding how Formosa has been able to successfully produce and sell so significant volumes in the Indian markets, Hyosung Korea also has set up a manufacturing facility in Vietnam.
- ii. The domestic industry is responsible as well as responsive to the market requirements and to the consumers' requirements. Further, the consumers can themselves protect their interests in India.
- jj. The facts of the case very clearly show that there is significant increase in imports and the domestic industry has suffered injury for considerably long period. The domestic industry has based its claim on facts and has neither exaggerated any imports information nor has invented injury.
- kk. Contrary to the submissions made, the European producers has specifically admitted that they have used Indian market as dumping ground for exporting the product which was not accepted in their domestic market. In the instant case, dumping is happening not only in its technical sense but also in its literal sense. Further, about 76% of the demand over the injury period was met by domestic producers. Such being the case, in any case, there is no basis for the argument that the domestic industry product is not quality product or that the domestic industry does not give any dyeing guarantees.
- ll. While domestic industry has claimed 26% return on capital employed for the purpose of determination of NIP and injury margin, even if NIP is calculated considering 22% return on capital employed, it would be seen that the injury margin is quite significant.
- mm. As far as the present petition is concerned, the entirety of injury period is the period when the PUC was being dumped in the Indian market.
- nn. The DA has been consistently considering 22% return on capital employed for determination of NIP and injury margin. There is no reason for reduction of the same in the present case. Further, in view of continued injury being faced by the domestic industry for such a long period, while the past ROI are irrelevant, the domestic industry should be given higher degree of protection to address the past financial losses.
- oo. With regard to various issues raised by opposing parties relating to comments made by the petitioners in their annual report, it is submitted that issues raised by the opposing parties are primarily from the annual reports of petitioner companies of 2013-14 and 2014-15, which is base year and second year in the present investigation. Opposing parties claimed that domestic industry has not suffered injury on various accounts as mentioned in the annual report. In the period of investigation, domestic industry has suffered financial losses.
- pp. The capacity addition made by the domestic producers at the least establishes that domestic producers on their part are making all efforts to become competitive and meet the demand for the product in the country. However, continued dumping of the product in the country is very adversely impacting the domestic producers. One of the Petitioners, GSFC has added capacity for engineering plastic which has nothing to do with the product under consideration. Another one of the Petitioners, Praful has made additional investment in plant and machinery and capacity has been added resulting in higher production and sales.

In spite of increase in production and sales, profitability has declined.

Examination by the Authority

54. The Authority has taken note of the submissions made by various interested parties. The Authority has examined the injury to the domestic industry in accordance with the Anti-dumping Rules and considering the submissions made by the interested parties.
55. The AD Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
56. As regards the consequent impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure II of Antidumping rules states as under:
(iv) The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments
57. It is not necessary that all parameters of injury show deterioration. Some parameters may show deterioration; while some may show improvement. The Designated Authority considers all injury parameters and thereafter concludes whether the domestic industry has suffered injury due to dumping or not.
58. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments submitted by the interested parties in their submissions.

G.1 Volume Effect of Dumped Imports and Impact on Domestic Industry

Assessment of Demand

59. The demand of subject goods has been determined by adding the domestic sales of Indian producers of like product with the imports of the subject goods from all countries. For the purpose of the present injury analysis, the Authority has relied on the import data procured from DGCI&S. The Authority notes that demand of subject goods increased over the injury period as can be seen in the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI Annualised
Imports from Subject Countries	MT	7,201	10,506	11,945	13,799
European Union	MT	1,373	1,500	2,387	1,572
Vietnam	MT	5,828	9,006	9,558	12,227
Imports from other countries	MT	12,413	12,904	12,238	10,133
Domestic Sales of Petitioners	MT	***	***	***	***
Domestic Sales of other producers	MT	***	***	***	***
Total demand	MT	63,063	78,125	88,044	94,652

Import Volumes and Share of Subject country

60. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The volume of imports of the subject good from the subject country has been analyzed as under:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Annualized)
Imports from European Union	MT	1,373	1,500	2,387	1,572
Imports from Vietnam	MT	5,828	9,006	9,558	12,227
Imports from Subject Countries	MT	7,201	10,506	11,945	13,799
Total Demand	MT	63,063	78,125	88,044	94,652
PUC Production of DI	MT	***	***	***	***
Subject Imports relative to Indian consumption	%	***	***	***	***
Subject Imports relative to DI production	%	***	***	***	***

61. Based on the foregoing data, the Authority notes as follows:
- Imports of the subject goods from subject country have increased in absolute terms from 7,201 MT during 2013- 14 to 13,799 MT during POI.
 - Imports from the subject countries in relation to domestic consumption/demand have increased, and are at a level of 15% during POI.
 - Imports from subject country in relation to domestic production in India have increased and have reached a level of ***% (approx.) during POI.
62. It is, thus, noted that the imports of the PUC from the subject country have increased in absolute terms and in relation to production and consumption in India.

G.2 Price Effect of the Imports on the Domestic Industry

63. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

64. It has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports of the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

Price Undercutting

65. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex-factory level. The domestic prices and margin of undercutting is shown as per the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Ann.)
Landed Value from European Union	Rs./MT	2,48,804	2,41,413	2,02,685	1,83,424
Landed Value from Vietnam	Rs./MT	2,42,871	2,31,356	1,96,225	1,79,288
Domestic Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	96	83	80
Price Undercutting from EU	Rs./MT	***	***	***	***
	%	***	***	***	***
	Range	0 -5	(5)- 0	0-5	0 -10
Price Undercutting from Vietnam	Rs./MT	***	***	***	***
	%	***	***	***	***
	Range	0 -10	0- 10	0 -10	5 -15

66. The Authority notes from the above table that price undercutting exists.

Price Suppression/Depression

67. In order to determine whether the dumped imports are depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the table below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Ann.)
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	100	86	81
Domestic Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	100	96	83	80
Landed Value	Rs./MT	2,44,002	2,32,791	1,97,516	1,79,727
	<i>Indexed</i>	100	95	85	91

68. It is noted that the Petitioners' cost of sales has declined consistently over the period of injury and POI. Petitioners' selling price also has declined more or less in the same proportion. The selling price has remained below the cost of sales level throughout during the injury period. The Authority also notes that the Petitioners' selling price follows closely the trend of the Landed Value of the subject imports, though landed value remains lower than the cost of sales of the Petitioners. The price depression is thus evident. Even the phenomenon of marginal price suppression exists.

Price Underselling

69. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from subject countries. For this purpose, the NIP determined for the domestic industry has been compared with the weighted average landed price of imports. Comparison of weighted average NIP of the domestic industry with weighted average landed price of imports shows as follows:

Particulars	Unit	POI (Ann.)
Landed Value	Rs./MT	1,79,727
Non-Injurious Price (NIP)	Rs./MT	***
Injury Margin	Rs./MT	***
	USD/MT	***
	%	***
	Range	0-10

70. It is seen that the landed price of the subject goods from subject country were significantly lower than the NIP determined for the domestic industry.

G.3 Economic Parameters of the Domestic Industry

71. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

G.4 Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

72. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization was as follows:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Ann.)
Capacity (Plant)	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>105</i>	<i>116</i>	<i>117</i>

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Ann.)
Production (Plant)	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>117</i>	<i>116</i>
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>99</i>
Production (PUC)	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>109</i>	<i>124</i>	<i>129</i>
Domestic Sales of Petitioners	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>109</i>	<i>122</i>	<i>129</i>

73. The Authority notes that the Petitioners' capacity and production have increased in tandem with each other. The capacity utilization has declined marginally but the same has not impacted the PUC production and sales, which have seen improvement over the period of injury and POI.

G.5 Profitability

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Ann.)
Profit / (Loss)	Rs./Lakhs	(***)	(***)	(***)	(***)
	<i>Indexed</i>	<i>(100)</i>	<i>(978)</i>	<i>(1062)</i>	<i>(424)</i>
Profit / (loss)	Rs./MT	(***)	(***)	(***)	(***)
	<i>Indexed</i>	<i>(100)</i>	<i>(897)</i>	<i>(869)</i>	<i>(328)</i>

74. The Authority notes the following from the above table:

- The domestic industry's profitability has been adversely affected. The domestic industry has been suffering losses during the entire injury investigation period.
- The domestic industry's losses have declined substantially in the POI as compared to previous years but remained higher than the losses in the base year.
- The domestic industry does not seem to have recovered its cost of sales or earn reasonable profits.

G.6 Return on capital employed

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
ROCE	%	***	***	***	***
	Range	5-10	0-5	0-5	0-5

75. The authority notes that the domestic industry has not been able to earn an adequate return on capital employed throughout the injury investigation period. The Return on Capital Employed during POI is lower than the base year.

G.7 Market Share

76. The effects of the dumped imports on the market share of the domestic industry have been examined as below:

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Total Demand	MT	63,063	78,125	88,044	94,652
Market Share of					
Petitioners	%	***	***	***	***
Other Producers	%	***	***	***	***
Share of Indian Producers	%	***	***	***	***
Share of imports from	%	2.18%	1.92%	2.71%	1.64%

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
European Union					
Share of imports from Vietnam	%	9.24%	11.53%	10.86%	13.83%
Share of imports from Other countries	%	19.68%	16.52%	13.90%	10.59%

77. From above table, the Authority observes that the market share of the Domestic Industry has decreased even though demand for the subject goods has been rising in India. At the same time, the increasing share of other Indian producers cannot be ignored and it is noted that, on an aggregate, the share of Indian producers (Domestic Industry and Other Indian Producers) has not witnessed much change during the injury period.

G.8 Inventories

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI
Opening Stock	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>95</i>	<i>117</i>	<i>134</i>
Closing Stock	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>124</i>	<i>194</i>	<i>253</i>
Average Inventory	MT	***	***	***	***
	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>109</i>	<i>155</i>	<i>192</i>

78. The Authority notes that the level of inventories have witnessed increase during the injury period.

G.9 Productivity of the domestic industry

79. The Authority notes that employment level of the domestic industry has gone up whereas the productivity per employee has declined consistently.

Particulars	Unit	2013-14	2014-15	2015-16	POI (Ann.)
No. of Employees	Nos.	***	***	***	***
	<i>Index</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>114</i>	<i>120</i>
Productivity per Employee	MT/ Employee	***	***	***	***
	<i>Index</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>103</i>	<i>97</i>

G.10 Ability to raise capital investments

80. The Authority notes that given the rising demand of the product in the country, the domestic industry has made fresh investments in plant and machinery.

G.11 Level of dumping & dumping margin

81. It is noted that imports from the subject countries are entering into the country at dumped prices and there exist margins of dumping with respect to the participating producers/exporters.

G.12 Factors Affecting Domestic Prices

82. It is noted that imports from the subject countries account for 15% of the Indian demand and imports from other countries account for about 11% of the Indian demand. In conjunction therewith, it is noted that about 70% of the Indian market is controlled by the Indian producers, including the Petitioners and other Indian producers. Therefore, it appears that the prices of the Petitioners would be affected by intra-domestic competition as well as, to a certain extent, by the imports from other countries, including the subject countries.
83. It is also noted that the landed value of subject goods from subject countries are below non-injurious price and selling price of the domestic industry.
84. The Authority is also cognizant of the fall in prices of the raw material which have led to the decline in cost of sales for the Petitioners and considers it a factor affecting the domestic prices as well.
85. Thus, the Authority considers that various factors affect the domestic prices of the subject goods

in India. The impact of these parameters would be considered as part of the assessment of causation.

G.13 Overall Analysis on Injury

86. Having regard to the information on record, including information pertaining to the performance of the Domestic Industry, the Authority notes that the dumped imports of the subject goods from subject countries hold more than *de minimis* volumes and their prices have declined during the injury period. The demand for the product has increased significantly during the injury period. However, the domestic industry does not appear to have been able to capitalize on the same. The Domestic Industry's profitability has been adversely impacted and the return on the capital employed has been sub-optimal. The profitability has been negative throughout the injury investigation period.

G.14 Causal Link and Other Factors

87. The Authority has examined whether other factors listed under the Anti-dumping Rules could have contributed to injury to the domestic industry. The examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry has been done as follows:

(i) Imports from Third Country

88. The imports from countries other than subject countries are not very significant in volume terms. Only imports from Korea RP, Malaysia and Taiwan are more than *de minimis* (apart from the subject countries). With respect to the goods from these countries, the Authority has recently determined that despite dumping in the investigation period April, 2015 to September, 2016 period the dumped imports from these countries have been non-injurious.

(ii) Contraction in demand

89. The demand for the subject goods has shown an increasing trend. Accordingly, fall in demand cannot be the reason for injury to the domestic industry.

(iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

90. The Authority notes that there is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

(iv) Developments in technology

91. The technology for production of the product concerned has not undergone any change. Thus, developments in technology cannot be regarded as a factor of causing injury to the domestic injury.

(v) Changes in pattern of consumption

92. The domestic industry is producing the type of goods that have been imported into India. Possible changes in pattern of consumption are not a factor that could have caused injury to the domestic industry.

(vi) Export performance

93. Claimed injury to the domestic industry is not on account of possible deterioration in export performance of the domestic industry. In fact, though exports by the domestic industry have declined, the data assessment has been done on the basis of information pertaining domestic sales alone. Thus, injury to the domestic sales has been isolated and examined, to the extent possible.

(vii) Performance of the domestic industry with respect to other products

94. The Authority notes that the performance of other products being produced and sold by the domestic industry has not affected the domestic industry's performance.

(viii) Productivity of the domestic industry

95. The Authority notes that there is very marginal deterioration in the productivity per employee in

the POI and therefore productivity of the domestic industry could not be the reason for the injury to the domestic industry.

H. Magnitude of Injury Margin

96. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry and compared with the landed values of the subject imports from the subject country to determine the injury margin on the basis of PCN wise analysis. The injury margins have been determined as follows:

Injury Margin

Country	Producer	Exporter	Non Injurious price US\$/ MT	Landed Value US\$/ MT	Injury Margin US\$/ MT	Injury Margin %	Injury Margin (Range %)
Vietnam	Formosa Industries Corporation	1. Liang Haw Technology Co., Ltd. 2. Bosca Enterprises Limited	***	***	***	***	10-20
Vietnam	Hyosung Dong Nai	1. Hyosung International (HK) Ltd., Hong Kong 2. Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong	***	***	(***)	(***)	(0-5)
Vietnam	All Others	All Others	***	***	***	***	30-35
European Union	All	All	***	***	***	***	0-10

I. Factors establishing Causal Link

97. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority notes that:
- The product under consideration has been exported to India from the subject countries below normal values.
 - The domestic industry has suffered material injury on account of such dumped imports from subject countries.
98. The essential facts of the investigation gathered by the Designated Authority during the course of the investigations and analyzed by the Authority were disclosed to the interested parties in order to enable them to offer their comments on these facts.

J. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES

99. The post disclosure submissions have been received from the interested parties. Majority of the issues raised therein have already been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. Additional submissions have been analyzed as under:

Submissions made by the Domestic Industry

- The domestic industry agreed to the exclusion of BCF yarn as it is a higher tenacity yarn and not used for textile applications.

- ii. As regards exclusion of second grade NTF, it was submitted as under:
 - a. From the response and submissions of the exporter, there is no way to understand what Aquafil means when it is referring to NTF. From the submissions, it only seems that the exporter is referring to some quality of the product.
 - b. Since fabric, fibre and high tenacity yarn are not within scope of product under consideration, the domestic industry has no reservations with regard to exclusion with regard thereto. However, if some yarn, which is not high tenacity yarn is proposed to be excluded, the same is not justifiable as the domestic industry is producing and selling this type of yarn.
 - c. There is no material on record to show that the domestic industry is not producing and selling NTF product.
 - d. Second grade yarn is inevitably produced in all manufacturing set ups and the domestic industry has sold products of all grades and qualities.
 - e. No clarification or comments have ever been sought with regard to the exclusion of second grade NTF. Even if assuming but not admitting that the domestic industry is not producing second grade NTF, the same cannot be excluded as the product produced by domestic industry is nevertheless like article to that exported by Aquafil.
 - f. In a number of findings, the Designated Authority has held that difference in quality is immaterial to define the scope of product under consideration and like article. Reliance is placed on the findings in the case of Seamless tubes, pipes & hollow profiles of iron, alloy or non-alloy steel from China PR, USB Flash Drives from China PR, Taiwan and Republic of Korea, Acrylic Fibre from China PR, Belarus, Ukraine, EU and Peru, EPDM from Japan amongst others.
 - g. If second grade NTF is excluded, the duty would become ineffective as the exporters would circumvent the duty by declaring all exports to be of second grade. As noted by Tribunal in Huawei Technologies Limited Vs. Designated Authority, the coverage of product under consideration should be such that purpose and intent of duty levied is achieved.
- iii. The petitioners constitute domestic industry and the imports by AYM are extremely low.
- iv. There is inadequate disclosure relating to normal value. If the same has been calculated on the basis of the data of domestic industry, the same should be disclosed.
- v. In the absence of relevant information with regard to determination of normal value, the response filed should be rejected and an individual dumping margin should not be allowed.
- vi. The exporter has sold only a few PCNs. The data given by the exporter is anyways not relevant to determination of dumping margin and injury margin.
- vii. It is apprehended that the producer has deliberately given selective information to the Designated Authority.
- viii. While examining injury to the domestic industry, it needs to be considered that the entire injury period represents period wherein the domestic industry was suffering material injury on account of dumped imports.
- ix. The volume of imports has increased by nearly 12 times between 2011-12 and the period of investigation. Further, the imports increased sharply in relation to production and consumption.
- x. There is positive price undercutting and the imports have suppressed and depressed the prices of the domestic industry.
- xi. While the domestic industry was able to improve its production and sales, it was at the cost of continuing losses.
- xii. The sales of the domestic industry increased by only 29%, which was not in line with the

- increase in demand, which increased by 105%. Further, the domestic industry was increasing sales, but suffering financial losses.
- xiii. The domestic industry suffered financial losses throughout the period on account of dumping of the subject goods. The domestic industry incurred cash losses and was not able to earn adequate return on its capital employed.
 - xiv. While the Indian industry as a whole has been able to increase its market share, it has incurred losses in the process.
 - xv. Some of the other producers were earlier importers of the subject goods, who later set up manufacturing facilities. Resultantly, the market share of other producers showed an increase.
 - xvi. While fall in prices and inter-se competition may affect prices of domestic industry, the only factor that has forced the domestic industry to sell below cost is the landed price of imports. Considering the capacity of the Indian producers, it is evident that there is no over-supply in the domestic market which would lead to cut-throat competition between the domestic producers.
 - xvii. There is a clear causal link between the dumped imports and the injury suffered by the domestic industry.
 - xviii. Despite legal requirements and mandate under the law, there is insufficient disclosure of non-injurious price. The complete calculations of non-injurious price have not been provided.
 - xix. It is not appropriate to consider lowest utilization of resources for calculation of non-injurious price. In accordance with para (3) of Annexure-III, only cost of production of the period of investigation is required to be considered. The provisions of para (4) to Annexure-III with regard to lowest utilization may be considered only if there is any inefficiency in utilization of resources. There was no inefficiency in utilization of resources, nor has the investigation revealed any inefficiencies.
 - xx. Even if the non-injurious price is calculated by the methodology understood to have been applied, the non-injurious price disclosed is much lower. Certain adjustments or reductions appear to have been made beyond what is provided for in Annexure – III.
 - xxi. In the absence of adequate disclosure, the domestic industry is constrained in offering its comments as there is no way to ascertain what adjustments have been made in the determination of non-injurious price.
 - xxii. As per the decision in the case of Gujarat Fluorochemicals Limited Vs. Designated Authority, the Tribunal held that a return of 22% should be allowed on capital employed for captive produced input.
 - xxiii. It is not appropriate to change the basis of allocation or apportionment of expenses and assets/liabilities without (a) disclosing the basis of such modification to the domestic industry, (b) giving it an opportunity to the domestic industry to comment on the propriety of the modification, (c) not allowing the domestic industry to establish appropriateness of its workings.
 - xxiv. There is a clear violation of natural justice as the domestic industry has not even been made aware regarding the reasons why the cost and return have been reduced or how the figures forming basis of non-injurious price have been determined.

Submissions made by Other Interested Parties

100. The following comments on Disclosure statement are submitted by other interested parties:

- i. It has been rightly concluded by the Authority in the Disclosure Statement that both the dumping and the injury margin for Hyosung Dong Nai is *de minimus*.
- ii. There are only two products BCF and second grade NTF manufactured by Aquafil are outside the scope of product under consideration.

- iii. The exclusion of JCT Ltd. due to non-cooperation at the stage of issuance of Disclosure Statement is incorrect and not in accordance with Rule 4 (3) of Anti-Dumping Rules and Article 5.4 of the Anti-Dumping Agreement. In fact, the Authority is entitled to insist upon absolute standards of participation for the applicants.
- iv. A detailed comparative analysis of the facts stated in the Final Findings 15/17/2016-DGAD dated 5th January 2018, of the recently concluded sunset review of anti-dumping duty imposed on the imports of Nylon Filament Yarn originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP and the Disclosure Statement 14/33/2016-DGAD dated 23rd July 2018, in respect of the present investigation, suggests that all the parameters are almost similar in both the investigations. Accordingly, the present investigation should also be terminated on the grounds mentioned in the concluded investigation.
- v. The reason for the increase of imports from subject countries from 2013 to 2017 is not dumping, but the growth of the Indian market demands following the development of downstream industry.
- vi. Despite imports from subject countries, sale of domestic industry has increased substantially from *** MT (2013-14) to *** MT during the POI. Share of imports from Vietnam in total demand has slightly increased from 12% (2013-14) to 14% only during POI.
- vii. The trend of price from subject countries and domestic industry has been fluctuating from 2013-14 to POI. Landed price and domestic selling price, both are decreasing in tandem. It depicts that there cannot be price injury to the domestic industry. The petitioner agreed that there is no price suppression, there is no price depression also.
- viii. The petitioners have increased their capacity every year, during the injury period and POI. Production and capacity utilization of the domestic industry has also increased during the period of investigation. This shows that the domestic industry is improving.
- ix. Petitioner is also exporting the subject goods; however, export performance of the petitioner has been deteriorated during the POI. The decline in exports might have caused injury to the domestic industry.
- x. Overall performance of the domestic industry has improved. As per disclosure statement, domestic sales have increased substantially during the POI as compared to the base year. This shows that imports from subject countries have not caused any injury to the domestic industry.
- xi. The market share of domestic industry has declined during the POI. This decline is not because of increase in imports but on account of increase in the share of other Indian producers. The market share of other Indian producers has increased substantially during POI. On the contrary, the share of imports from subject country has remained almost same from 12% during 2013-14 to 14% during POI. Thus, injury to the petitioners and decline in its market share cannot be attributable to imports from the subject countries but to the fact that the other Indian producers are taking over the market share of the Petitioners.
- xii. Profitability of the Domestic Industry has improved. Per unit losses have come down from 100 to 80 during the POI as compared to the base year 2013-14. Cash Profit has improved from (100) during the year 2013-14 to (77) during the POI. Whereas, profit before interest and tax has shown abnormal trend.
- xiii. The capital employed of the Domestic Industry has improved from 100 during 2013-14 to 144 during POI. Return on Capital employed remained almost same during the period of investigation as compared to 2013-14.
- xiv. The import data claimed in the disclosure statement does not match with the import data given in the final finding of the sunset review investigation of anti-dumping duty imposed on the imports of Nylon Filament Yarn originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP for the same product

under consideration.

- xv. The non-injurious price determined by the Director General is highly inflated and is not based on real situation. They have further stated that basis of 22% ROCE was designed in the year 1987, when all parameters like interest rate and corporate tax were different, those cannot be termed as reasonable after 30 years in the year 2018. In 1987, the rate of interest was around 18% and corporate tax was 40%. Now both, interest rate (around 10%) and corporate tax (30%) have come down. Therefore, by applying 22% ROCE, DGTR is giving undue protection to the Domestic Industry.
- xvi. The Authority should define the product exclusion of BCF and second-grade NTF and elaborate the feature and description of the products being excluded from the PUC to ensure that the customs enforcement of the exclusion may be appropriately carried out.
- xvii. The Authority must include the production volume of M/s. JCT Ltd. as part of the total Indian production, because regardless of their cooperation or non-cooperation, the party's production continues to be part of the Indian Domestic production. It is unclear how the Authority has treated the production volume of M/s. JCT Ltd. in arriving at total Indian production. The Authority must also include the production volume of M/s. AYM Syntex as part of the total Indian production, because it is already noted that the import volume of M/s. AYM Syntex is insignificant.
- xviii. In so far as the Authority has reasoned that post-exclusion of M/s. AYM Syntex the Petitioners would gain an undue advantage with respect to the injury assessment since M/s. AYM Syntex is the most efficient producer, the Authority must reassess the standing of the Petitioners after exclusion of M/s. JCT Ltd. and M/s. AYM Syntex Ltd.
- xix. Authority must provide the data pertaining to percentage of the eligible domestic industry accounts when taken together. The Authority must disclose the cumulated data of the Petitioners. The Petitioners' shareholding in Indian production cannot be treated as confidential by the Authority when such confidentiality has not been sought or maintained by the Petitioners themselves in their Petition.
- xx. Where the domestic industry holds less than 50% of the share of Indian production, the Authority must necessarily discontinue the investigation, since such low representation of the domestic producers is not sufficient and cannot be considered "major proportion" for the purpose of determining an eligible "domestic industry".
- xxi. The interested parties have agreed with the Authority's reasoning and conclusion pertaining to rejection of request for inclusion of M/s. Century Enka as part of the domestic industry.
- xxii. The Authority has exercised excessive confidentiality by redacting information pertaining to share of imports as a percentage of domestic consumption and production, production and sales of Indian producers on a cumulated basis, the standing of the domestic industry and the production and sales of the domestic industry as determined. The Petitioners themselves had made such information available throughout the investigation. The Authority cannot claim confidentiality with respect to data which the Petitioners themselves did not claim as confidential.
- xxiii. The Authority should carry out injury assessment and assessment of the Volume and Price Effect by revising data pertaining to volume of imports, after exclusion of imports of BCF, second grade NTF and the un-dumped imports from Vietnam.
- xxiv. The Authority must also reassess the price effect in view of the findings with respect to the same in the concluded NFY investigation. The price undercutting of the subject imports in the concluded NFY investigation was much higher than the price undercutting of the subject imports in the present investigation and yet the Authority found that the domestic industry was not suffering from any injury in that case, and in fact its economic parameters were healthy.
- xxv. The examination of price underselling cannot be part of the price effect assessment. Rather, it is a computation of injury margin. Jurisprudence in *Nirma Ltd. v. Union of*

India [Special Civil Applications No.16426/2016 & 16427/2016] cited.

- xxvi. Based on a comparison of the *price undercutting* and *price underselling* in the present case, it is evident that the Petitioners are already selling at a price higher than its non-injurious price, implying that no injury was suffered by the Petitioners. Jurisprudence in *Ammonium Nitrate from Russia and Iran (2004)* and *X-ray Baggage Inspection Multi Energy System (XBIS) from European Union (2003)* was cited.
- xxvii. The Authority must reassess the impact on the Economic Parameters pertaining to Production, Capacity, Capacity Utilization, and Sales since the Petitioners' capacity has increased continuously in the injury period from 2013-14 to 2015-16. Moreover, in spite of a substantial increase over a short period of time, the Petitioners have been able to utilize this increased capacity in production. The Petitioners' export performance declined over the period of injury and in the POI and therefore, impacted its capacity utilization.
- xxviii. The Authority must reassess the impact on the Economic Parameters pertaining to Profitability since the Petitioners have been suffering losses / injury throughout the injury investigation period. The domestic industry's losses have substantially declined in the POI (A). There is no correlation between the losses made by the domestic industry and the increase in production and sales over the injury period.
- xxix. The Petitioners have been in losses even in the year 2013-14 and 2014-15 when the volume of imports from the subject countries was much lower, and the domestic industry was also protected from the imports from other countries, such as China, Malaysia, Indonesia, Taiwan and Thailand by way of anti- dumping duties. Therefore, the Petitioners' losses in a protected period with low imports from the subject sources raises serious questions about the source of the losses faced by the Petitioners and implies that the low profitability of the Petitioners is attributable to certain inherent deficiencies of the Petitioners.
- xxx. The domestic industry's decline in RoCE is inconsistent with the substantial increase in production and increase in sales of the PUC in the injury period. The domestic industry had made fresh investments in plant and machinery implying an increase in capital employed. Since the domestic industry's capital employed has increased in the injury period, its RoCE is bound to have decreased in the injury period.
- xxxi. The Authority must reassess the impact on the Economic Parameters pertaining to Ability to raise capital investments since the domestic industry has made fresh investments in plant and machinery given the rising demand for the subject goods in India. The domestic industry has been able to make fresh capital investments on the back of increased demand which shows that the domestic industry expects to financially and operationally benefit from the same.
- xxxii. The Authority's assessment pertaining to the Factors affecting domestic prices is appropriate in so far as it considers that subject imports hold merely 15% of the Indian demand while the Indian producers control about 70% of the same and therefore, it is possible that the prices of the Petitioners are impacted by the inter-se competition as well as by imports from other countries. The Authority has also noted that there has been a fall in prices of the raw material which also led to the decline in cost of sales for the Petitioners and thereby affected the selling prices of the Petitioners. However, the Authority must also assess the impact of various other parameters such as the impact of the costs of increased capacity undertaken by the Petitioners and the resultant high fixed costs; the various factors, cited by the Petitioners in their Annual Reports, such as Volatile Raw Material Prices; inter-se competition with other Domestic Producers; overcapacity in the domestic market; cheap imports from ASEAN Countries as an outcome of Free Trade Agreement (not dumping); loss of export market and poor export performance (specifically with respect to Turkey); demonetization, low-priced imports from Malaysia, Taiwan and Thailand and the low demand for the Petitioners' goods owing to poor quality and sales of uneven material (uneven package weights) as first grade material.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

- i. With regard to the claim that in the determination of Non-Injurious Price (NIP) certain adjustments are reduction appear to have been made beyond what is prescribed in Annexure – III to Indian Anti-Dumping Rules, it is noted that the NIP has been determined in accordance with guidelines prescribed in the Annexure – III to Indian Anti-Dumping Rules.
- ii. In regard to the contention of the interested parties that price undercutting is higher than price underselling and hence selling price above the non-injurious price, it is noted that the comparison is not fair on account of difference in the PCNs of PUC produced and sold during the period of investigation. It is further noted that the selling price of PUC is Rs *** per MT during POI, which when converted into USD would be USD *** per MT whereas weighted average NIP of PUC imported from Vietnam, wherefrom price undercutting is higher, in dollar terms is USD *** per MT.
- iii. In regard to various issues raised in respect of the standing of domestic industry, it is noted that the issue has been dealt with adequately earlier in this notification. It is further noted that even after exclusion of all allegedly ineligible petitioner(s) the share of remaining petitioners is more than the statutory requirement for being eligible Domestic Industry. The share of DI excluding M/s JCT Ltd. in the Indian production is approximately 40% as against the requirement of 25%. There is no opposition to the petition. Therefore, petitioners qualify as DI in terms of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the Indian Anti-Dumping Rules. There is no requirement whatsoever in the Indian Anti-Dumping Laws that the share of petitioners in Indian production should be more than 50%.
- iv. The Authority further notes that the production volume of all domestic producers, regardless of their cooperation or non-cooperation, has been taken as part of the total Indian production.
- v. Regarding claim of the interested parties that the current ADD investigation should also be terminated on the lines of earlier sunset review (15/17/2016-DGAD) conducted for Nylon Filament Yarn since all the parameters in both the investigations are almost similar, it is noted that the SSR investigation was in respect of both Mono and Multi Filament Yarn, whereas the current investigation is in respect of Multi- Filament Yarn only, wherein losses were noted even in the SSR investigation. Even the subject countries of both the investigations are different.
- vi. With regard to the claim that the decline in market share of DI is on account of increase in market share by other producers, it is noted that the statistics quoted by the interested party in this regard is not entirely correct. It is further noted that the imports of PUC from Vietnam has increased from 9.24% to 13.83% of total demand.
- vii. With regard to the contention of the interested parties that the profitability of the domestic industry and its return on capital employed have improved over the injury period, it is noted that the profitability has been in the negative zone throughout the injury period and the losses during the POI, though reduced compared to the preceding year, stood at approximately four times the losses during the base year. The return on the capital employed also is at sub-optimal level of *** % as against 22% allowed by the Directorate consistently over the years.
- viii. With regard to the contention that the import data in the disclosure statement does not match with the import data given in the final finding of the sunset review investigation of anti-dumping duty imposed on the imports of Nylon Filament Yarn originating in or exported from China PR, Chinese Taipei, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea RP for the same product under consideration, the Authority notes that the subject countries and the scope of PUC under both the investigations are different and therefore the import data cannot match.
- ix. Regarding the claim that higher return on capital employed @22% has been allowed to

determine the non-injurious price, it is noted that the Authority has consistently been giving return on capital employed @22% in all the investigations and there is no departure in this case from that consistent practice.

- x. The domestic industry has represented that there is nothing on record to show that the domestic industry is not producing and selling NTF yarn and that second grade yarn is inevitably produced in all manufacturing set ups and that the domestic industry has sold products of all grades and qualities. The DI has expressed apprehension that if second grade NTF is excluded, then the duty would become ineffective as the exporters would circumvent the duty by declaring all exports to be of second grade. The concern raised by interested parties on possibility of circumvention of duty in the event of exclusion of second grade NTF (Nylon Textile Fibre) yarn has been noted. The Authority notes that the exporter from EU has not been able to furnish any distinct feature or technical characteristics of second grade of NTF that could distinguish it from the PUC. It is further noted that the exporter from EU had made submission that NTF second grade did arise out of the defects in the production process which were identified during quality control process and that it was not produced as part of the production plan. The exporter from EU has treated second grade NTF as the by-product but costing of NTF first grade even was not shared by them. Accordingly, the Authority holds that second grade NTF (Nylon Textile Fibre) yarn cannot be excluded from the scope of PUC. It is further held that on account of the reason cited above, the individual margin is not being extended to M/s Aquafil in respect of their export of NTF yarn to India.
- xi. The Authority further holds that BCF (Bulk continuous filament) yarn is excluded from the scope of PUC, as agreed upon by the domestic industry also. BCF yarn is crimped nylon filament yarn which has high tenacity of approximately 4 centi newton decitex and high denierage (approx. 650 to 1650 decitex) and is normally used in carpet making.
- xii. It is further noted that the Authority has reassessed the injury by excluding volume of (i) un-dumped imports and (ii) import of excluded product i.e. BCF yarn.

K. Indian industry's interest & other issues:

101. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping duties, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

L. Recommendation

102. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all the interested parties. Adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Anti-Dumping Rules and having established positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of anti-dumping duty is necessary to offset dumping and injury.
103. Having regard to the lesser duty rule, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the anti-dumping duty equal to the amount indicated in Column 8 of the table below is recommended to be imposed for a period of five (5)

years by the Central Government on the imports of the subject goods originating in or exported from subject countries.

DUTY TABLE

Sl. No.	Sub-heading	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1	5402	Nylon multi filament Yarn*	Vietnam	Vietnam	Formosa Industries Corporation (FIC)	1. Liang Haw Technology Co., Ltd. (LIHA) , Taiwan 2. Bosca Enterprises Limited(BOSCA), HongKong	384.02	MT	US\$
2.	5402	Nylon multi filament Yarn*	Vietnam	Vietnam	Hyosung Dong Nai	1. Hyosung International (HK) Ltd., Hong Kong 2. Ren Tong Industrial Ltd., Hong Kong	NIL	MT	US\$
3	5402	Nylon multi filament Yarn*	Vietnam	Any country	Any	Any	719.44	MT	US\$
4	5402	Nylon multi filament Yarn*	Any country other than subject countries	Vietnam	Any	Any	719.44	MT	US\$
5	5402	Nylon multi filament Yarn*	European Union	Any country	Any	Any	128.06	MT	US\$
6		Nylon multi filament	Any	European Union	Any	Any	128.06	MT	US\$

	5402	Yarn*	country other than subject countries						
--	------	-------	--------------------------------------	--	--	--	--	--	--

* Synthetic multi filament yarns of Nylon or Polyamides, such as flat yarn - twisted and/or untwisted, crimped yarn, fully drawn yarn (FDY), spin drawn yarn (SDY), fully oriented yarn (FOY), high oriented yarn (HOY), partially oriented yarn (POY), textured yarn—twisted and/or untwisted, and dyed yarn, single, double, multiple, folded or cabled, classifiable within Chapter 54 under customs subheading no. 5402. The product includes all variants of Nylon Filament Yarn or Polyamide Yarns such as flat/textured/ twisted/untwisted, bright/semi-dull/full-dull (or variants thereof), grey/colored/dyed (or variants thereof), single/double/multiple/folded/cabled (or variants thereof), whether or not sized, but excludes high tenacity yarn of nylon. Specifically

excluded from the scope of product under consideration are all man-made filament yarns not having Nylon or Polyamides and mono filament yarn, high tenacity yarn of nylon, BCF (Bulk Continuous Filament) yarn.

BCF yarn is crimped nylon filament yarn which has high tenacity of approximately 4 centi newton decitex and high denierage (approx. 650 to 1650 decitex) and is normally used in carpet making.

M. FURTHER PROCEDURE

104. An appeal against the order of the Central Government that may arise out of this Final Findings Notification shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Director General